आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 फरवरी, 2021
डाक प्रेषण तिथि 10 फरवरी, 2021

वर्ष : 79 अंक : 02
माघ, 2077 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

फरवरी, 2021

आचार्य हस्ती
दीक्षा-शती वर्ष

Website : www.jinwani.in

विश्वास के धागे में क्षमाशीलता का स्नेह सञ्चरित होने पर
एकता, सौहार्द एवं समरसता का दीपक जगमगा उठाता है।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती जय महावीर जय गुरु हीरा-मान

अंक सौजन्य

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.,
व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के
पावन चरण सरोजों में कोटि-कोटि वन्दन-नमन।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अनन्य गुरुभक्त, सहृदय, करुणाशील

स्व. श्री कँवलराजजी मेहता

(सुपुत्र स्व. श्री पारसमलजी, भतीजे स्व. श्री गणेशमलजी मेहता की पावन स्मृति में)

:: श्रद्धावनत ::

श्रीमती सुशीला देवी मेहता (धर्मसहायिका)

किरणराज, चंचलराज-मधु, स्व. डॉ. प्रमोद-माला (भाई-भाभी)

नरेन्द्र-नूतन, नवीन्द्र-उर्मिला, डॉ. नवनीत-लीना, दीपक-मीनल, विकास-प्रिया,
प्रशान्त-प्रिया (पुत्र-पुत्रवधू) एवं समस्त विनायकिया मेहता परिवार

146, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर (राज.)

मोबाइल : 98250 49872, 98110 13446

जय गुरु हस्ती जय महावीर जय गुरु हीरा-मान

अंक सौजन्य

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा का सन् 2020 कोसाणा चातुर्मास सम्पन्न होने पर श्रद्धार्पण

आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के परमभक्त, सरलमना श्रावकरत्न स्व. श्री घीसुलालजी एवं श्राविकारत्न स्व. श्रीमती उगमादेवीजी बाघमार का पुण्य स्मरण

स्व. श्री घीसुलालजी बाघमार

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

स्व. श्रीमती उगमाबाईजी बाघमार

:: श्रद्धावनत ::

दुलीचन्द-कमलादेवी बाघमार
ललित कुमार-आशा बाघमार
अरुण कुमार-ललिता बाघमार
सुनील कुमार-सन्तोष बाघमार
निखिल-रिंकु बाघमार
सिद्धार्थ-दर्शना मरलेचा
समकित, आशीष एवं प्रांजल बाघमार

DCB Group of Companies,
Kamaladevi Dulichand Bagmar Charitable Trust, Kilpauk, Chennai

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह-सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परिजूरइ ते सरीरयं,
केसा पंडुरया हवंति ते।
से सोय-बले य हायइ,
समयं गोयम! मा पमायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.21

हो रहा जीर्ण यह तन तेरा,
हो रहे केश ये धवल पककर।
घट रहा श्रवणबल है तेरा,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर।।

फरवरी, 2021
वीर निर्वाण सम्वत्, 2547
माघ, 2077

बर्ष 79 अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा करा कर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	योगिप्रवर आचार्यश्री हस्ती की कलह - निवारकता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	जीवन-निर्माण के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	किये कर्मों का फल है - सुख और दुःख	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी	17
	प्राप्त का सदुपयोग : सिद्धावस्था प्रापक	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी	19
चिन्तन-	कॉमनसेन्स भी काम में लें	-डॉ. दयानन्द भार्गव	26
	निधन समाचार : एक निवेदन	-डॉ. दिलीप धींग	73
दीक्षा-शताब्दी-	आचार्यश्री हस्ती की काव्य-साधना	-डॉ. नरेन्द्र भानावत	28
	व्यक्तित्व विकास एवं समस्याओं के समाधान में स्वाध्याय तथा सामायिक की भूमिका	-पूर्वन्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा	36
	आचार्य हस्ती का प्रार्थना-चिन्तन	-डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह गौतम	42
	कतिपय विस्मयकारी संस्मरण	-श्रीमती सुशीला बोहरा	46
युवा-स्तम्भ-	युवाओं के प्रेरणा स्रोत - आचार्यश्री हस्ती	-श्री पदमचन्द गाँधी	51
आध्यात्मिक-चिन्तन-	2021 में 21 दिन का लॉकडाउन	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	56
जीवन-व्यवहार-	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	62
तत्त्व-चर्चा	आओ मिलकर कर्मों को समझें (10)	-श्री धर्मचन्द जैन	63
रिपोर्ट-	आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला में वीतराग-ध्यान, प्रार्थना एवं आगमदृष्टि पर चर्चा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	65
English-section	**Justice, Humanity, Science and Jainism**	-*Sh. Shekhar Bhandari*	69
गीत/कविता-	आचार्यश्री हस्ती की अमूल्य देन	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	25
	गुज़रा हुआ ज़माना, मुझे याद आ रहा है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	35
	व्यापार	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	55
विचार/चिन्तन-	श्रुतज्ञान की विशेषताएँ	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी	11
	सिद्धियों से बढ़कर आत्मज्ञान	-श्री रणवीरमल भण्डारी	50
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	74
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	76
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 7
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

योगिप्रवर आचार्यश्री हस्ती की कलह-निवारकता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

अध्यात्मयोगी युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. इस युग के ज्योतिर्धर महान् सन्त एवं आचार्य हुए। यह उनका दीक्षाशती वर्ष चल रहा है जो माघ शुक्ला द्वितीया 13 फरवरी, 2021 को पूर्ण हो रहा है। पूज्य आचार्यश्री ने व्यसनों में फँसे हजारों-लाखों व्यक्तियों को निर्व्यसनी बनाया। मांसाहारी से शाकाहारी बनाया; गुटका, तम्बाकू एवं मदिरा के व्यसनों से मुक्त किया। व्यापार में और जीवन में प्रामाणिकता का सञ्चार किया। हजारों लोगों को ब्रह्मचर्यव्रत में जीवनभर के लिए प्रतिष्ठापित किया। अज्ञान-अन्धकार एवं अन्धविश्वास में जकड़े मानव समुदाय को **स्वाध्याय** की ज्योति दी, जिससे व्यक्ति अपने अज्ञान-अन्धकार को स्वयं सतत दूर करने में सक्षम बन सके। यही नहीं उन्होंने चित्त में बसी विषमता और विकारों को दूरकर समताभाव का सञ्चार करने के लिए सहज प्रेरणा कर **'सामायिक'** की साधना से जोड़ा। वे स्वयं ध्यान, मौन एवं संयम-साधना के उत्कृष्ट साधक थे तथा जन-जन के दु:ख का निवारण करने के लिए आध्यात्मिकसूत्र प्रदान करने हेतु तत्पर रहे। वे करुणासागर थे, अत: हर एक का दु:ख दूर करने के लिए सन्नद्ध रहते थे। भीतर से लोगों को बदलने में वे सिद्धहस्त थे। पापी को भी सन्मार्ग पर लाने में वे कुशल थे। आत्मसाधना में वे जितने गम्भीर एवं सजग थे, उतने ही लोककल्याण और जनहित में भी करुणाशील थे। महाव्रतों, समिति, गुप्ति आदि की साधना के बल पर वे वचनसिद्ध योगी भी थे। उन पर छोटे-बड़े हजारों व्यक्तियों की प्रगाढ़ श्रद्धा थी। वे अपने भक्त बनाने की अपेक्षा लोगों को धर्ममार्ग में जोड़ना अपना कर्त्तव्य मानते थे। एक सन्त अपने जीवन में व्यक्ति, संघ, समाज, राष्ट्र एवं विश्व को कितना दे सकता है, यह आचार्यश्री हस्ती के जीवन से जाना जा सकता है। वे एक प्रज्ञाशील विद्वान्, व्याख्याकार, इतिहासकार, कवि एवं सहस्रों लोगों के जीवन-निर्माता थे। आगमों का सार उनके जीवन से पढ़ा जा सकता था। अप्रमत्तता एवं आचारनिष्ठा के वे देदीप्यमान पूज्य पुरुष थे। ऐसे सद्गुरु थे जिन्होंने अपनी पैनी पारखी दृष्टि का प्रयोग कर शिष्यों को विद्या एवं आचरण की धार से तराशा। उनमें एक विशेषता थी-अपनत्व या आत्मीयता का भाव। जहाँ अपनत्व मिलता है, वहाँ हित की शिक्षा भी प्रिय एवं कार्यकारी होती है। आगमनिष्ठ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. अपने पूज्य गुरुदेव के सन्देशों एवं कार्यों को निरन्तर आगे बढ़ा रहे हैं। योगिप्रवर के द्वारा तराशे गए शिष्य एवं श्रावक आज भी उनके उपकारों का स्मरण कर श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं।

प्रज्ञापुरुष ने व्यक्तियों के जीवन-निर्माण का कार्य भी किया, तो संघ-उन्नयन और समाज में सौहार्द की दिशा में भी समुचित क़दम उठाए। उनके प्रशस्त कार्यों में एक महत्त्वपूर्ण कार्य रहा-विभिन्न ग्राम-नगरों में व्याप्त कलह एवं पारस्परिक मनमुटाव को मिटाकर संघ-समाज में एकता एवं सौहार्द की स्थापना। लासलगाँव (विक्रम सम्वत् 1999), फतहगढ़ (विक्रम सम्वत् 2013) पाली (विक्रम सम्वत् 2018), किशनगढ़ (विक्रम सम्वत् 2019), सिवांचीपट्टी (विक्रम सम्वत् 2022), पहुर (सन् 1979), जालना (सन् 1979) आदि अनेक ग्राम-नगरों में आपने विषमता के विष को दूरकर समरसता का वातावरण स्थापित किया।

भगवान महावीर एवं जिनेश्वरों के अनुयायी कलह-क्लेश में रहकर व्यक्ति, धर्म एवं समाज की हानि करें, यह उनके अन्तर्मानस को स्वीकार्य नहीं था।

इसलिए वे अपने प्रवचनामृत एवं माधुर्य-सम्पन्न समझाइश का प्रयोग कर कलह एवं मनमुटाव को प्रेम-सौहार्द में परिणत कर देते थे। सिवांचीपट्टी के 144 गाँवों में जहाँ बेटी-दामाद के आने-जाने का व्यवहार समाप्त हो गया था, पारस्परिक द्वेष एवं क्लेश का विषम वातावरण था, वहाँ पूज्यप्रवर ने विक्रम सम्वत् 2022 में बालोतरा में सूझबूझ एवं समझाइश का प्रयोग कर स्नेह-प्रेम की धारा प्रवाहित की। आचार्यप्रवर कहा करते थे- ''बाँस भी परस्पर लड़कर भस्म हो जाते हैं, मनुष्य को इससे शिक्षा लेनी चाहिए।''

जहाँ मानव-समाज है वहाँ कलह भी होता है, मनमुटाव भी होते हैं, किन्तु वे यथा समय प्रेम की सरिता में धुल जाने चाहिए। दीर्घकाल तक कलह की स्थिति मतभेद की दीवार खड़ी कर देती है। कलह परिवार में भी होता है तथा समाज में भी। दीर्घकाल तक कलह की स्थिति सर्वत्र घातक होती है। कलह क्यों होता है? मनमुटाव क्यों होते हैं? पारस्परिक छींटाकशी का वातावरण क्यों बनता है? इसके अनेक कारण हो सकते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने एक श्लोक में कलह के पाँच कारण बताए हैं-

चिन्ताभेद: रुचिभेद:, आग्रह: स्वार्थभावना।
अज्ञानं वस्तुवृत्तीनां, कलहस्य च हेतव:।।

चिन्तन या सोच का अन्तर होने पर कलह हो सकता है। परिवार में पिता और पुत्र के सोच में, बहू और सासू की सोच में प्राय: अन्तर होता ही है, अत: उनमें सहनशीलता न हो तो कलह उत्पन्न हो जाता है। पति-पत्नी के सोच, मान्यता या विचारधारा में भेद होने पर उनमें भी कलह उत्पन्न हो जाता है। कलह का दूसरा कारण है-रुचिभेद। दो व्यक्तियों की रुचि भिन्न-भिन्न है तो उनमें स्नेह-मैत्री का स्थापित होना कठिन है, यही नहीं रुचियों के भेद को लेकर झगड़ा भी हो जाता है। पत्नी को घूमने जाना है, पति को कमाने से फुर्सत नहीं है तो कलह उपस्थित हो जाता है। परिवार में एक की रुचि समाचार चैनल देखने की है, दूसरे की रुचि धारावाहिक देखने की है तो भी कलह हो जाता है। सोच एवं रुचि की भिन्नता के साथ जब व्यक्ति अपनी बात मनवाने के लिए आग्रह करता है तो भी कलह-द्वन्द्व का चित्र उपस्थित हो जाता है। आग्रह जब दुराग्रह में परिणत हो जाता है तो पारस्परिक समन्वय एवं स्नेह की धारा टूट जाती है। भिन्न-भिन्न विचारधारा होने पर भी एवं भिन्न-भिन्न रुचि होने पर भी जब सहिष्णुता एवं दूसरे के विचार एवं रुचि में अनेकान्तदृष्टि का प्रयोग कर सत्यांश को खोजने की प्रवृत्ति होती है तो कलह की स्थिति नहीं बनती हो तो वह शान्त हो जाती है। आग्रह या दुराग्रह की स्थिति बनी रहने पर दूसरे की स्वतन्त्रता का हनन होता है, जिससे वह उत्तेजित एवं आक्रुष्ट हो ही जाता है। जिस बात पर आग्रह किया जाता है उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं पर विचार करने पर आग्रह की भावना तिरोहित हो जाती है।

कलह का एक अन्य कारण है-स्वार्थ-भावना अथवा स्वार्थ की प्रबलता। जब व्यक्ति परिवार एवं समाज का हित गौण करके निजी स्वार्थ की पूर्ति को महत्त्व देने लगता है तो इससे परिवार और समाज में विरोध का भाव मुखर हो उठता है। परिवार में रहते हुए परिवार के हित को तथा समाज में कार्य करते हुए समाज के हित को तथा संघ में कार्य करते हुए संघ के हित को महत्त्व देना चाहिए। निजी स्वार्थ को प्रमुखता देने पर कलह-झगड़े का उठना स्वाभाविक हो जाता है। पूज्य आचार्यश्री हस्ती ने कहा है-''पारिवारिक शान्ति वहीं कायम रहती है, जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने सुख को गौण और दूसरे सदस्यों के सुख को मुख्य मानकर व्यवहार करता है।''

आचार्यश्री का यह सूत्र संघ और समाज पर भी लागू होता है। संघ-समाज में हर सदस्य का महत्त्व है, किन्तु उससे भी बड़ा है सबका सामूहिक हित। सबका सामूहिक हित किसमें है, एक प्रज्ञावान् व्यक्ति उसे महत्त्व देता है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संघ-संरक्षक, मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज पी. मुणोत सा कहा करते हैं-व्यक्तिगत मनभेद की सजा संघ को नहीं मिलनी चाहिए। इसका

तात्पर्य यह है कि संघ बड़ा है, उसमें व्यक्तिगत हित-अहित को भूलकर संघहित को प्रमुखता देनी होती है। जब व्यक्ति संघ या समाज के अहित में कार्य कर रहा हो तो उसका अहिंसात्मक असहयोग या विरोध किया जा सकता है। वह भी संघहित में करणीय है।

कलह का सबसे बड़ा कारण है-वास्तविकता का अज्ञान। वस्तुस्थिति को समझे बिना लोग एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप कर कलह करने लग जाते हैं। कई बार हमें वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं होता है और उसके सम्बन्ध में भ्रान्त धारणा बनाकर कलह करने लगते हैं। पति-पत्नी में भी इस प्रकार की भ्रान्त धारणा उत्पन्न हो जाती है। भाई-भाई, पिता-पुत्र ही नहीं, समाज एवं संघ में भी वास्तविक सत्य को जाने बिना विवाद या कलह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। हम व्यर्थ ही भ्रान्त धारणाओं के शिकार होकर इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं, जो परिवार, समाज, संस्था या संघ में कलह को जन्म देती है।

उपर्युक्त पाँच कारणों के अतिरिक्त भी कलह के कारण हो सकते हैं, यथा-(1) शोषण या अन्याय की प्रवृत्ति, (2) वञ्चना या ठगने की प्रवृत्ति, (3) भेदभाव की नीति, (4) अपमान एवं उपेक्षा, (5) स्वामित्व, (6) अपेक्षाएँ आदि।

परिवार का कोई सदस्य यदि एक का शोषण करता है, उसके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करता है तो झगड़े या कलह की स्थिति बन जाती है। इसी प्रकार संस्था एवं समाज में भी शोषण एवं अन्याय का व्यवहार पारस्परिक मनमुटाव एवं कलह को जन्म देता है। सबके प्रति मैत्री, स्नेह और हित का भाव पारस्परिक सम्बन्धों को सुरक्षित रखता है। किसी को धोखा देने या ठगने की प्रवृत्ति भी कलह को जन्म देती है। वह परिवार में हो या समाज में सर्वत्र घातक है। कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, मूल्य कुछ लेते हैं और माल कुछ और देते हैं, तय कुछ और करते हैं और प्राप्ति कुछ और कराते हैं-तो पारस्परिक कलह उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी को जानबूझकर हानि पहुँचाना कलह को उत्पन्न करता है। इसी प्रकार परिवार एवं समाज में भेदभाव की नीति कलह को जन्म देती है। पुत्र एवं पुत्री में भेद करना, समाज के सदस्यों में किसी को उचित सम्मान न देना आदि भी कलह के हेतु हैं। किसी का अपमान करना या उपेक्षा करना भी मनमुटाव को तूल देता है।

अनेक बार मनमुटाव का कारण स्वामित्व होता है। परिवार में भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि के स्वामित्व को लेकर माता-पिता और सन्तान में तथा भाई-भाई में कलह देखे जाते हैं। इसी प्रकार समाज में भी स्वामित्व को लेकर कलह उत्पन्न होते हैं। बड़े हित गौण हो जाते हैं और छोटे से स्वार्थ को लेकर पारस्परिक टकराव हो जाता है। जो एक-दूसरे की प्रतिष्ठा का मुद्दा बन जाता है। कोई झुकना नहीं चाहता। एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप चलते रहते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर ने स्वाध्यायियों को सम्बोधित करते हुए एक बार नियम कराया था कि साधर्मी-बन्धु के विरोध में कोर्ट-कचहरी में नहीं जाना। इस प्रकार का मन बन जाने पर भाईचारे का भाव सहज ही सुरक्षित रहता है। हम यह जानते हैं कि इस संसार में ये बाह्य पदार्थ अनित्य हैं। इनके साथ हमारा सम्बन्ध भी अनित्य है। ये पदार्थ दुनिया में किसी न किसी रूप में रहेंगे, किन्तु हमारा सम्बन्ध छूट जाने वाला है। अत: ऐसे विषयों को लेकर तकरार करना बड़े हित को गौण करना है। समाज एवं परिवार में हमारी परस्पर अपेक्षाएँ होती हैं उन अपेक्षाओं के पूर्ण नहीं होने पर भी कलह या विवाद की स्थिति बनती है। इस प्रकार ऐसे अनेक कारण हैं जो कलह को उत्पन्न करते हैं।

कलह के कारण राजपाट भी समाप्त हो जाते हैं। जैसा कि कहा है-

कलहान्तानि हर्म्याणि, कुवाक्यान्ते य सौहृदम्।
कुराजान्तानि राष्ट्राणि, कुकर्मान्तं यशो नृणाम्।।

पारस्परिक कलह के कारण राजमहल या राजपाट समाप्त हो सकते हैं, अपशब्दों के कारण सौहार्द समाप्त

(शेषांश पृष्ठ 88 पर)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 10
ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

कामा दुरइक्कमा, जीवियं दुप्पडिबूहगं, कामकामी खलु अयं पुरिसे, से सोयइ, जूरइ, तिप्पइ, पिड्डइ, परितप्पइ।। -सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित आचाराङ्गसूत्र, द्वितीय अध्ययन, उद्देशक 5

अर्थ-काम का त्याग कठिन है। आयुष्य जितना है, उसे बढ़ाया नहीं जा सकता (छिन्न आयुष्य को साँधा नहीं जा सकता)। पुरुष कामभोगों की कामना करता है (किन्तु वे परितृप्त नहीं कर सकते, इसलिए)। वह शोक करता है, खिन्न होता है, कुपित होता है, आँसू बहाता है, पीड़ा और परिताप का अनुभव करता है।

विवेचन-आचाराङ्गसूत्र का यह सूत्र जीवन के सत्य का मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक रूप में विवेचन करता है। मनुष्य के मन में कामनाएँ उत्पन्न होती रहती हैं। उनमें कुछ कामनाएँ पूरी होती हैं और कुछ अपूर्ण ही रह जाती हैं। जो कामनाएँ उत्पन्न होती हैं उनसे मनुष्य को सुख का अनुभव या आभास होता है, जो नई कामना को जन्म देता है। फिर मनुष्य नई कामना को पूर्ण करने में जुट जाताहै। इस तरह से कामनाओं का चक्र निरन्तर चलता रहता है। जो कामनाएँ पूर्ण नहीं होतीं, उनके कारण मनुष्य दु:ख का अनुभव करता है। जो पूरी होती हैं वे भी अनन्त: राग-द्वेष को अथवा पराधीनता के दु:ख को बढ़ाती हैं। मनुष्य को पूर्ण सुख का अनुभव तो कामनाओं से रहित होने पर ही हो सकता है। किन्तु पूर्व संस्कारों, मान्यताओं एवं कर्मों के कारण उसे कामनाएँ आक्रान्त करती रहती हैं।

कामना की उत्पत्ति होते ही मनुष्य अशान्त हो जाता है तथा उसकी पूर्ति के लिए चिन्तित और प्रयत्नशील हो जाता है।

कामनाओं को इच्छाकाम और मदनकाम के रूप में दो प्रकार का माना गया है। भोजन, वस्त्र आदि बाह्य पदार्थों, पद-प्रतिष्ठा आदि की इच्छा उत्पन्न होना इच्छाकाम तथा स्त्री-पुरुष के सहभाव की इच्छा होना मदनकाम है। धर्म से नियन्त्रित नहीं होने पर ये कामनाएँ दु:ख की कारण बन जाती हैं। इनके कारण मनुष्य राग-द्वेष, लोभ-मोह आदि में जकड़ा रहता है।

आगम का वाक्य है कि कामनाएँ दुरतिक्रमणीय हैं अर्थात् इनसे रहित होना कठिन है। जब तक शरीर और इन्द्रियाँ हैं तथा जीव मोह से रहित नहीं हुआ है तब तक इन कामनाओं का पूर्ण समापन नहीं होता। ये न्यून या अधिक रूप में मनुष्य को घेरे रहती हैं।

यह भी सच है कि जीवनकाल का विस्तार नहीं किया जा सकता, इसलिये इस जीवनकाल में ही कामनाओं पर विजय प्राप्त कर लेना चाहिये। अन्त समय तक भी यदि कामनाएँ मनुष्य को घेरे रहती हैं तो उसका जीवन निस्सार एवं दु:ख का सागर ही बनकर रह जाता है।

कामनाओं का सम्बन्ध इन्द्रिय के विषयों के सेवन की अभिलाषा से है। किन्तु कोई अभिलाषा ज्ञान प्राप्त करने, सत्संग का लाभ लेने आदि की भी हो सकती है। इस अपेक्षा से इच्छा का वर्गीकरण किया जाये तो वे दो प्रकार की हो सकती हैं। एक वे इच्छाएँ जो मनुष्य के विकास में सहायक होती हैं। जैसे-ज्ञान प्राप्ति की इच्छा, सत्संगति की इच्छा, मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा आदि। इन इच्छाओं की पूर्ति में सहयोगी इच्छाएँ भी कहीं उपादेय हो सकती हैं, किन्तु अधिकतर इच्छाएँ या कामनाएँ मनुष्य के रागादि विकारों को बढ़ाने में सहायक होती हैं। उसको क्रोध, लोभ आदि विकारों से ग्रस्त कर देती हैं। ऐसी सभी इच्छाएँ, कामनाएँ त्याज्य हैं।

जब तक जीवन है तथा पूर्व कर्मों के संस्कार हैं तब तक इच्छाओं से पूर्ण मुक्ति नहीं हो सकती, इसलिये इच्छाओं का चयन करना आवश्यक है। हितकारिणी आवश्यक सद् इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए तत्पर होकर असद् इच्छाओं का त्याग कर देना चाहिये।

उदाहरण के लिए सुखभोग के लिए संग्रह की इच्छा असद् इच्छा है और दान की इच्छा सद् इच्छा है। किसी से सेवा लेने की इच्छा असद् इच्छा है तथा किसी की सेवा करने की इच्छा सद् इच्छा है। सुखभोग की इच्छा असद् इच्छा है तथा दूसरे के दु:ख को दूर करने की इच्छा सद् इच्छा है। असद् इच्छा का त्याग एवं सद् इच्छा का आचरण ग्राह्य है।

मनुष्य जीवन की सीमिता को ध्यान में रखकर कामनाओं के प्रवाह को नियन्त्रित करना आवश्यक है। कामनाओं की दुरतिक्रमता पर प्रारम्भिक नियन्त्रण असद् इच्छाओं के त्याग एवं सद् इच्छाओं की पूर्ति से सम्भव है। इन्हें अपने विवेक से समझा जा सकता है कि कौन-सी सद् इच्छाएँ हैं तथा कौन-सी असद् इच्छाएँ हैं। जो इच्छाएँ इन्द्रिय के विषय-भोगों से सम्बद्ध हैं वे सभी इच्छाएँ असद् हैं, अत: त्याज्य हैं तथा जो इच्छाएँ इन्द्रियजय और मनोजय के मार्ग पर ले जाती हैं वे कथञ्चित् सभी ग्राह्य हैं।

विडम्बना यह है कि मनुष्य कामभोगों का इच्छुक है। वह इन्द्रिय से होने वाले सुखों के प्रति लोलुप है और यही उसके दु:खों का कारण भी है। वह इन्द्रिय सुखों में आसक्त होकर अनेक प्रकार के दु:खों का अनुभव करता है। इन्द्रिय भोग के पदार्थों, लोकैषणाओं, पद-प्रतिष्ठा आदि की कामना की पूर्ति नहीं होने पर वह शोक का अनुभव करता है। उसका मन संकल्प-विकल्पों से आहत होता है। इष्ट वस्तु की प्राप्ति नहीं होने पर वह खिन्न होता है। कभी ऐसी भी स्थिति होती है कि वह इच्छा पूरी न होने पर रोना-पीटना प्रारम्भ कर देता है। अर्थात् आर्त्त-रौद्रध्यान में वृद्धि करता रहता है। वह कामभोगों की पूर्ति न होने पर पीड़ा का अनुभव करता है और कभी कामातुर होकर कायिक, वाचिक और मानसिक इन तीनों स्तरों पर ताप का अनुभव करता है। इसलिये मनुष्य को चाहिए कि वह ऐसी कामनाओं का त्याग कर दे जो उसे दु:खी करती हैं।

अन्त में तो सभी कामनाओं एवं इच्छाओं से रहित होना है, किन्तु प्रारम्भ में इन्द्रिय-विषय के भोगों की कामनाओं पर नियन्त्रण आवश्यक है।

श्रुतज्ञान की विशेषताएँ

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने मध्याह्न के समय श्रुतज्ञान पर विशद चर्चा करते हुए श्रुतज्ञान की कुछ विशेषताएँ फरमायी-

1. श्रुतज्ञान से ही शासन (संघ) चलता है।
2. श्रुतज्ञान ही केवलज्ञान की जननी है।
3. श्रुतज्ञान स्व तथा पर उपकारी है।
4. श्रुतज्ञान ही अतीत, अनागत एवं वर्तमान रूप त्रिकाल ग्राही है।
5. श्रुतज्ञान की उत्कृष्टता केवलज्ञान के समकक्ष मानी जाती है।
6. श्रुतज्ञान मोक्ष रूपी वृक्ष का बीज है।
7. श्रुतज्ञान अज्ञान का आवरण है।
8. श्रुतज्ञान रूप देशना लब्धि द्वारा ही जीव को समकित की प्राप्ति होती है।
9. श्रुतज्ञान ज्ञान-आराधना रूप स्वाध्याय का विशेष आलम्बन है।
10. श्रुतज्ञान सम्यक्त्व के पर्यायों को स्थिर तथा वर्धमान करता है।
11. श्रुतज्ञान शाब्दिक ज्ञान होते हुए भी आत्मा की उत्कृष्टता प्राप्त करने में प्रमुख साधन है।
12. श्रुतज्ञान का महत्त्व प्रतिष्ठापित करने के लिए ज्ञान विवेचक आगम नन्दीसूत्र इसका वर्णन अन्त में करता है।
13. श्रुतज्ञान रूपी साकार उपयोग ही क्षपक श्रेणी के आरोहण की एक योग्यता है।
14. श्रुतज्ञान से ही प्रवचन की प्रभावना होती है।
15. श्रुतज्ञान से सम्पन्न जीव धागे पिरोई सुई के समान भटकन को प्राप्त नहीं करता है।

-संकलन : सुरेखा जैन (गोटेवाला)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 12
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

जीवन-निर्माण के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- साधक महिमा, पूजा और सत्कार को भी परीषह मानता है। उसमें प्रसन्न होना, फूलना एवं अहंकार करना अपनी कमाई को गँवाना है।
- यदि एक विद्वान सही अर्थ में धर्माराधन से जुड़ जाता है तो वह अनेक भाई-बहनों के लिए प्रेरणा का स्तम्भ बन जाता है।
- शरीर में आँख की चूक से कभी पैर में काँटा लग जाय, तो क्या फिर पैर, आँख का भरोसा नहीं करेगा? समाज में ऐसा ही सम्प हो तो अशान्ति नहीं होगी।
- जैन समाज का धन प्रदर्शन के बदले ज्ञान में लगे तो समाज का हित हो सकता है।
- तन का संयम रोग से और वाणी का संयम कलह से बचाता है।
- वेशपूजा एवं नामपूजा के बदले गुणपूजा ही समाज को श्रेय की ओर ले जा सकती है।
- ममता से नरक और समता से मोक्ष-यही शास्त्रों का सार है।
- आत्मिक जीवन की सुरक्षा के लिए व्रत की बाड़ आवश्यक है।
- जड़ को छोड़ चेतन से प्यार करना ही सुख का साधन है।
- परिग्रह पर नियन्त्रण ही शान्ति का मार्ग है।
- समाज-व्यवस्था सुन्दर होनी चाहिए, जिससे सारे कार्य सुन्दर एवं व्यवस्थित हो सकते हैं।
- आलोचना और प्रतिक्रमण एक तरह से आत्मा का स्नान है।
- जिस तरह सूर्य की किरणें सब जगह पहुँचती हैं उसी तरह ईश्वर, परमात्मा या सिद्ध का ज्ञान सब जगह पहुँचता है। इसलिए हम कहते हैं कि वे अन्तर्यामी हैं, वे त्रिभुवन के स्वामी हैं।
- मूल में धर्म का स्वरूप अहिंसा, संयम और तप है।
- इन्द्रियों का निग्रह और मन की वृत्तियों पर काबू करना संयम है।
- कामना की पूर्ति का साधन अर्थ है और मोक्ष की पूर्ति का साधन धर्म है।
- जो गिरती हुई आत्मा को धारण करे, बचावे, उसका नाम धर्म है।
- धर्म का स्वरूप है सद् आचार और सद् विचार।
- श्रीमन्तों को समाज में काजल बन कर रहना चाहिए जो खटके नहीं।
- देव स्तुति कर सकते हैं, गुणगान कर सकते हैं, शासन की शोभा करनी हो तो तीर्थंकरों के उत्सव में देव आकर साढ़े बारह करोड़ सोनैया की वर्षा कर सकते हैं, लेकिन एक घड़ी सामायिक करने का सामर्थ्य देवों में नहीं है।
- जीवन को सुन्दर बनाने के लिए आवश्यक है कि हमारे जीवन में सम्यग्ज्ञान की ज्योति जगे।
- बिना श्रम के, बिना न्याय के, बिना नीति के जो पैसा मिलाया जाता है, उससे कोई करोड़पति और लखपति हो सकता है, लेकिन वह पैसा उस परिवार को शान्ति और समता देने वाला नहीं हो सकता।
- भक्ष्य-अभक्ष्य एवं खाद्य-अखाद्य का विचार करके अन्न ग्रहण करें। आहार शुद्ध होगा तभी विचार सुधरेंगे और विचार सुधरेंगे तो आचार सुधरेगा।
- धर्माराधक के तीन विभाग हैं-एक सम्यग्दृष्टि, दूसरा देशव्रती और तीसरा सर्वव्रती।

-'अमृतवाक्' पुस्तक से साभार

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 13
ISSN 2249-2011

प्रवचन

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा पाली के सुराणा मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में 9 सितम्बर, 2010 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

तीर्थंकर भगवन्त भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में मोक्ष-मार्ग का कथन करते हुए ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप को मार्ग बताया गया है। इसके साथ सम्यक्त्व के 67 बोल में मोक्ष-मार्ग हेतु दान-शील-तप-भावना का कथन भी मिलता है।

मोक्ष-मार्ग में जहाँ ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप का प्रतिपादन है वहीं दान-शील-तप-भावना इन चारों से मोक्ष-मार्ग मिलाया जा सकता है। ये चारों स्वतन्त्र तत्त्व हैं, पर एक-एक की आराधना करके भी जीव मुक्ति के समीप पहुँचकर बन्धन काट सकता है।

मोक्षमार्ग का उपाय : दान

मोक्षमार्ग के चार कारणों में दान-धर्म को पहले स्थान पर रखा। क्यों? चाहे छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर, चाहे जिस जाति या कुल में क्यों न जन्मा हो, हर व्यक्ति दान की आराधना कर सकता है।

दान सबसे सरल धर्म है। शील भी धर्म है। शील से शूली का सिंहासन बन सकता है। शील से ज़हर अमृत बन सकता है। शील से शेर की सवारी की जा सकती है। पर, शील पालना सरल नहीं है। शील ही पालना होता तो घर-गृहस्थी में रहने की क्या जरूरत है। घर-गृहस्थी में रोज-रोज की परेशानियाँ हैं, दिक्कतें हैं। घर में कभी आटा नहीं तो कभी घी नहीं। कभी यह नहीं, कभी वह नहीं। कभी इससे मन-मुटाव तो कभी उससे। घर-गृहस्थी में न जाने कितनी-कितनी बातें सुननी पड़ती हैं? यदि भगवान की आज्ञा मान ली जाती तो घर-गृहस्थी के झञ्झट न सुनने पड़ते, न देखने पड़ते।

शील कहो या संयम, एक ही बात है। बड़े-बड़े योगियों से भी संयम की पालना नहीं होती, इसलिये वे भी यदा-कदा भटक जाते हैं। शील श्रेष्ठ धर्म है, पर शील-पालन सरल नहीं, दुष्कर है। शील का पालन तलवार की धार पर चलने के समान है। शील का पालन हर व्यक्ति के लिए शक्य नहीं।

शील पालना सरल नहीं तो तप करना भी कठिन होता है। हर व्यक्ति तप भी नहीं कर सकता। न शील सरल है, न तप। भावना भी शुद्ध रह जाय यह भी सरल नहीं है। माता मरुदेवी की तरह सबकी शुभ भावना नहीं रह सकती। मरुदेवी माता को हाथी के ओहदे पर बैठे-बैठे भावना से केवलज्ञान हो गया।

दान-शील-तप और भावना में एक दान ही है जो सबके लिए सहज है, सुलभ है बाकी चाहे शील हो या तप अथवा भावना ही क्यों न हो, उनकी साधना-आराधना सरल नहीं।

दान दिखता है, लेकिन कोई शील का पालन कर रहा है, वह नहीं दिखता। कौन शील पाल रहा है, किसकी तप-साधना चल रही है और किसकी कितनी निर्मल भावना है, सबको ज्ञात नहीं होती। विजय सेठ और विजया सेठानी शील-धर्म का पालन कर रहे थे, ब्रह्मचर्य व्रत का आराधन चल रहा था और दोनों ही शुद्ध-शुभ भावना होते हुए भी किसी को उनकी भावना तक ज्ञात नहीं थी। पर दान जग-ज़ाहिर होता है। दान दिखता है। जो देता है और जो लेता है वह भी नज़र में आता है। संघ-समाज और संस्कृति दान से जीवित हैं।

दान कैसे दिखता है? कभी बाढ़ आ जाय, कभी तूफान की विनाश लीला हो या कभी कहीं उपद्रव हो जाय, कहीं आग लग जाय, भूकम्प आ जाय, लोग घर से बेघर हो जायें ऐसे समय में दाता दान देकर राहत

पहुँचा सकता है। दान से दीन-दु:खियों का दर्द कम हो सकता है। आपदा-विपदा में दान का उपयोग सबको दिखता है।

दान छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा हर व्यक्ति कर सकता है। पाँच साल का बच्चा न शील पाल सकता और न ही तप कर सकता है, पर बच्चा दान तो कर सकता है, वह अपने पास रखी वस्तु का दान दे सकता है। दान चाहे आस्तिक हो या नास्तिक, वह भी दान कर सकता है। दान से संस्कृति का रक्षण होता है तो दान से घर, परिवार, संघ-समाज और देश सभी लाभान्वित होते हैं।

अभयदान

दान के तीन प्रमुख भेद हैं। एक है-अभयदान, दूसरा है-ज्ञानदान और तीसरा है-सुपात्रदान। तीनों दान एकान्त निर्जरा कराते हैं।

अभयदान सर्वश्रेष्ठ दान है। शास्त्रकार कहते हैं- संसार में जितने भी धर्म हैं वे सब अभयदान पर टिके हुए हैं। राजा हरिश्चन्द्र सत्य बोलता है, प्रभव चोरी छोड़कर अहिंसा-सत्य की ओर बढ़ गया है, कोई शील पाल कर तो कोई भामाशाह जगडूशाह की तरह देकर तिरे हैं। अर्जुनमाली जैसा हत्यारा क्षमा धारण करके और बाहुबलि जो एकान्त ध्यानस्थ थे, पर ज्योंहि अहंकार त्यागने की भावना जगी, केवलज्ञान मिला लिया।

माँ जन्म के साथ बच्चे को अभयदान नहीं देती तो धर्म कौन पालता? माँ पेट में रहते अगर गर्भपात करवा लेती तो.....? पैदा होते ही नाले में फिंकवा देती तो.....? पैदा होते ही गला घोंट देती तो.....? अगर माँ जन्म के साथ अभयदान नहीं करती तो सामायिक-प्रतिक्रमण कौन करता? दया-संवर की साधना कैसे बनती?

संसार के जितने भी धर्म हैं वे अभयदान पर टिके हुए हैं। इसका मतलब है कि किसी की हत्या करना पाप है। हत्या करने वाला अपने धर्म का विच्छेद कर रहा है। किसी को मार देने का मतलब है वह जो भी धर्म करता, वह छूट जाएगा। जिसे कोई दे नहीं सकता उसे लेने का क्या अधिकार? आप किसी को पैसा देकर, किसी को पाल-पोस करके, किसी की प्रतिष्ठा बढ़ाकर उसका जीवन तो बना सकते हैं, पर यदि किसी के प्राण लेकर हत्या कर दें तो.....? जो जीवन दे नहीं सकते, उसको लेने का किसी को अधिकार नहीं है। याद रखो- मारोगे तो मरना पड़ेगा। काटोगे तो कटना पड़ेगा। इसलिए सर्वश्रेष्ठ दान है-अभयदान।

आप जितने जीवन बचा सको, जितनी हत्याएँ रोक सको, जितने प्राणियों के प्राणों की रक्षा कर सको, करो। अभयदान देकर आप किसी को संयम में लगा सकते हैं, किसी को धर्मी बना सकते हैं, किसी को संघ-समाज की सेवा में लगा सकते हैं।

पापों में सबसे पहला पाप है-प्राणातिपात। प्राणों का अतिपात यानी मृत्यु। प्राण ही नहीं रहे तो सत्य कौन बोलेगा? शील कौन पालेगा? सामायिक-प्रतिक्रमण कौन करेगा? सेवा कौन करेगा? इसलिए प्रयास कीजिये, हर सम्भव प्रयास कीजिये कि मेरे से किसी की हत्या न हो। प्रयोजन को छोड़कर अनर्थदण्ड के लिए जो हिंसा हो रही है वह घातक है। एक जानवर को मारकर न जाने यह जीव कितने-कितने जन्मों तक मरता रहेगा।

आज अनर्थदण्ड का पाप सब जगह बढ़ता जा रहा है। शादी तो आपके दादा ने की, पिता ने भी शादी की, तो फिर आज यह शान-शौकत क्यों? क्यों इतनी सजावट? ये लाइटों का डेकोरेशन क्या दिखावा नहीं है? सजावट-डेकोरेशन में कितने-कितने जीवों की हत्याएँ हो रही हैं? कैसे-कैसे प्रसङ्ग बन रहे हैं, इसका कभी विचार हुआ? कितने-कितने कर्म-बन्धन हो रहे हैं, क्या इसका कोई हिसाब है?

अधिकांश लोग हिंसा क्या होती है, नहीं समझते। हाँ, आपका कोई गला दबाए तो ध्यान में आता है कि दर्द क्या होता है? आज बाबू साहब जूते पहने बगीचे में-लॉन पर चहल-क़दमी करते हुए फूले नहीं समाते। हरी घास पर घूमते-घूमते खाते हैं, वनस्पति के जीवों

की हत्या करके आपको क्या मिलने वाला है?

भगवान महावीर ने एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक सबमें जीव बताया है। एकेन्द्रिय में जीव है, वे बढ़ते हैं, मरते भी हैं। हर जीव में जन्म-मरण होता है। आप मौज-शौक के लिए अनर्थ में कितनी हिंसा करते हैं उसका है कोई हिसाब? शास्त्र कहता है-किसी जीव को कष्ट पहुँचाना, मारना, छेदन-भेदन करना, सब हिंसा में शुमार है। आपमें से कुछ हैं जो बकरा छुड़ाते हैं। बकरा छुड़ाना, उसे अमर करना यह भी जीव-दया है तो बिना कारण किसी जीव को नहीं मारना, कष्ट नहीं पहुँचाना भी दया है।

आप अपने जीवन को तो देखें। खाने, पीने, पहनने, रहने में कहाँ-कितनी हिंसा हो रही है? कहीं अनर्थ हिंसा का पाप तो नहीं लगा रहा है? अगर समाधि, शान्ति और सुख चाहते हो तो किसी जीव को दुःख न पहुँचाओ। दूसरे जीवों को दुःख देकर कोई कभी न सुखी बना है, न बनेगा। यह मैं नहीं, स्वयं तीर्थङ्कर कगवान फरमा रहे हैं। सूयगडांगसूत्र में भगवान ने कहा- **'दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं।'**

सुपात्रदान

एक दान है-सुपात्रदान। सुपात्रदान क्या? सुपात्रदान नाम क्यों रखा? एक लेने वाला है, एक देने वाला। देने वाला शुभभावना रखता है और लेने वाला धर्मी है, ज्ञान-दर्शन-चारित्र का आराधक है, वह साधना के लिए और जीवन चलाने के लिए ले रहा है तो वह है-सुपात्रदान। स्वाद के लिए न देना है, न लेना। रंग-रूप बढ़ाने के लिए न देने का महत्त्व है, न लेने का। हृष्ट-पुष्ट बनने के लिए भी दान की जरूरत नहीं है। भगवान ने कहा है-

देता भावे भावना, लेता करे सन्तोष।
वीर कहे रे गोयमा, दोनों जावे मोक्ष।।

एक है जो देता है और एक लेता है। लेने वाला विचार करे कि मैंने ले-लेकर और खा-खाकर न जाने कितना खराबा कर दिया, मैं और कुछ नहीं दे सकता तो ज्ञान-दान तो दूँ। दान में भावना का बड़ा महत्त्व है। त्योहार के प्रसङ्ग पर घर में मिठाई बनती है। घर के बच्चों ने मन-ही-मन विचार किया कि आज हमें लड्डू खाने को मिलेंगे। बच्चे लड्डू बनते देख प्रसन्न हो रहे थे कि आज तो खाने में रोटी की जगह लड्डू मिलेंगे। बच्चे लड्डू बनते देखकर प्रसन्न हो रहे थे तो खाने में उनकी प्रसन्नता रहती है, खाने के बाद भी मन हर्षित रहता है। बच्चे तीनों समय प्रसन्न हो रहे थे। इसी तरह दान देने के पहले मन में आए कि कोई निर्ग्रन्थ सन्त-मुनिराज पधारें तो मैं उन्हें भिक्षा दूँ। दान के पहले, दान देते और दान देने के बाद हर्ष की भावना हिलोरे लें तो समझना चाहिए कि वैसा सुपात्रदान सार्थक है।

जीर्ण सेठ की बात आपने सुनी होगी। आज भगवान के उपवास है, आज बेला, आज तेला इस तरह एक-एक दिन करते-करते पूरे चार माह बीत गए। वह रोज भावना भाता है। भावना भाते-भाते चेहरे पर शिकन तक नहीं कि भगवान मेरे यहाँ गोचरी क्यों नहीं पधारे। चार माह पश्चात् भगवान जीर्ण सेठ के घर पहुँचने के बजाय पूर्ण सेठ के वहाँ पहुँच गए। ऐसा होता है। आप दाता हैं भावना भाएँ और सन्त-सती पधारें तो देकर हर्षित हों और न पधारें ते उन पर कुपित न हों।

आपके मन में भावना आनी चाहिए कि दान का सुयोग मिले तो मैं दान दूँ। दान देने के बाद भी वही हर्ष-वही प्रसन्नता तो देना सार्थक है। शालिभद्र ने पूर्व भव में खीर का दान दिया था, वह वृत्तान्त आपके ध्यान में होगा। थाली में खीर है। खीर में लकीर खींचकर भावना भायी कि आधी मैं सन्तों को बहराऊँगा और आधी जो रह जाएगी वह मैं खाऊँगा। खीर तो खीर थी। वह दान देते-देते पूरी बहराने में आ गई। भावना से दिया गया दान आज शालिभद्र के रूप में मिल रहा है। ऐसे कई प्रसङ्ग हैं।

कोई दान देकर समकित प्राप्त कर रहा है तो कोई दान देकर तीर्थङ्कर नाम कर्म का गोत्र बाँध रहा है। एक बार का भावनापूर्वक दिया गया दान कितना फलित

होता है, आप शङ्ख के दान का वर्णन जानते हैं। शङ्ख ने दाखों का धोवन दान में दिया। धोवन कितना लाभप्रद हो सकता है, यह बात तो वही सन्त बता सकते हैं प्यास के मारे जिनके प्राण कण्ठ में आ रहे हैं। आज आप क्या सोचते हैं? बाबजी! आप पधारिया तो हो, लेकिन कुछ नहीं लिया। लिया तो धोवन पानी। क्या पानी के लिए आपका मेरे घर पधारना हुआ? जैसे आहार का दान है वैसे ही धोवन भी सुपात्र दान है। होनी चाहिए मन की भावना!

ज्ञानदान

दान एकान्त निर्जरा कराने वाला है। तीसरा है-ज्ञानदान। सन्त-सती ही नहीं, आप भी ज्ञानदान दे सकते हैं। कैसे? तो कहा-कोई भूला-भटका है, कोई अज्ञान-अन्धकार में डूबा है उसे आप पाप-मार्ग में पैर रखने से बचाएँ और सत्कर्म में जोड़ने का प्रयास करें तो वह भी आपका ज्ञानदान है।

दान चाहे अभयदान हो, सुपात्रदान या ज्ञानदान ही क्यों न हो, दान निर्जरा कराता है। हरिभद्रसूरि ने तो कहा है-एक जीव को सम्यग्दर्शनी बनाना तीन लोक में अभयदान की घोषणा करना है। अभयदान जीवन में धर्म को आगे बढ़ाने वाला है, सुपात्रदान भव-भ्रमण घटाने वाला है और ज्ञानदान भी भव-बन्धन काटने वाला है।

दान देते यह नहीं सोचें कि यह दुराग्रही है, यह बेईमान है, यह नासमझ है, यह तो माथाफोड़ी करने वाला है ऐसा सोचकर या देखकर किसी को दान से वञ्चित मत करना। क्योंकि व्यक्ति चाहे जैसा ही क्यों न हो, एक बार सम्यक्त्व आ गया तो वह दान भी एकान्त निर्जरा का कारण बन सकता है।

दान में भावना की प्रधानता

दान के कई भेद हैं। दान देने का अवसर कइयों को नहीं मिलता। दान देने में कई विघ्न-बाधाएँ भी आती हैं। दान मन से दिया जाता है, जोर-जबरदस्ती से नहीं। आपने सुन रखा है कि कपिला ने दान नहीं दिया। राजा श्रेणिक के कहने पर भी वह दान देने को तैयार नहीं हुई तो हाथ पर कुड़छी बाँधकर उससे दिलवाया गया। उसे देना तो था नहीं, जोर-जबरदस्ती से दिलाने पर वह कहती है-मैं दान नहीं दे रही हूँ यह तो राजा का चम्मच दान कर रहा है।

दान जोर-जबरस्ती से नहीं, सहजता से और मन से दिया जाना चाहिए। दान सहज गुण है, वह भी उनके लिए है जिनकी भावना हो। एक बच्चा भी चाहता है कि मैं बहराऊँ। वह भावना करता है और किसी कारण से बहरा नहीं सकता तो वह रोने लगता है। कभी ऐसा भी अवसर आता है कि कभी बच्चे की चॉकलेट माँ महाराज को बहरा दे तो भी बच्चा रोते-रोते कहता है कि मेरी चॉकलेट महाराज को क्यों बहराई?

देना सीखें

दान देना सहज गुण है। एक व्यक्ति जीवन भर लेने की चेष्टा ही करे और दे नहीं तो.....? आप देना सीखें। एक बार भावना से दिया गया दान सम्यक्त्व दिला सकता है। एक बार का दिया दान भव सागर पार करा सकता है।

दान धर्म है। दान में सब धर्म स्वत: आ जाते हैं। दान देने वाला ममता उतारकर दान देना सीखे तो ही वह सच्चा दान है। अन्यथा देकर बार-बार याद करना दान में कैसे शुमार होगा? दान दें। गुप्त रूप से हर्षित मन से दिया दान संसार को सीमित कर सकता है। दान हर व्यक्ति दे सकता है, देना चाहिए। आज तो बस इतना ही.....।

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षाशती वर्ष के उपलक्ष्य में जिन विद्वान् एवं श्रद्धालु लेखकों की रचनाएँ जिनवाणी पत्रिका हेतु प्राप्त हुई हैं, उनका जिनवाणी परिवार की ओर से भूरिश: हार्दिक आभार। **-सम्पादक**

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 17
ISSN 2249-2011

प्रवचन

किये कर्मों के फल हैं - सुख और दुःख

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 24 दिसम्बर, 2019 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

बन्धुओं! अनन्त करुणानिधि, खेदज्ञ-भेदज्ञ महावीर प्रभु ने सूयगडाङ्गसूत्र में एक अनमोल सूत्र कहा- हे जीव! संसार के अन्दर तूने पूर्व में जैसे-जैसे कर्म किए हैं उसी के अनुरूप तुझे फल की प्राप्ति होने वाली है। फल चाहे सुख हो या दुःख, चाहे अनुकूलता हो या प्रतिकूलता, चाहे यश मिले या अपयश, सब किए कर्मों का फल है।

आप जानते हैं-'जैसा बोवोगे वैसा पाओगे।' आक बोने वालों को आक ही मिलेगा जबकि आम बोने वाले आम पाएँगे। याद रखें-हमें जो मिला है, वह कर्मों के कारण से मिला है। कई हैं जो कहते हैं-'भगवान बुरो करियो।' बुरा किसने किया? घर में लड़का हुआ, उसे पाल-पोषकर बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया, शादी-विवाह किया, पर अचानक हार्टफेल हो जाता है तो मुँह से निकलता है-'भगवान खोटी करी।'

अरे भाई! भगवान न तो किसी का बुरा करते हैं न भला। भगवान किसी को न तो सुख देते हैं, न दुःख ही। सुख-दुःख तो कर्मों के अनुसार मिलता है तो फिर दुःख आने पर क्यों मुरझाना? कष्ट आने पर क्यों घबराना? जब कोई सुख-दुःख देने वाला नहीं तो फिर किसी को क्यों दोषी ठहराना? आप किसी को दोषी कहें या न कहें, कई तो ऐसे ही हैं जो भगवान को दोषी ठहरा देते हैं। इसलिए, उनके मुँह से निकलता है-'भगवान खोटी करी।'

आप जानते हैं-कर्म ही दुःख देते हैं और कर्म ही सुख देने वाले होते हैं। जब सुख-दुःख कर्माधीन हैं तो घर जाकर क्यों कहते हैं कि अमुक के कारण दुःख आया।

पूर्वाचार्यों ने छोटे-छोटे दोहों में सार भर दिया है। यह सार जीवन में उतर जाय तो बेड़ा पार हो सकता है। आप साधु-वन्दना में बोलते हैं-

एक वचन ही सत्गुरु के रो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी।
नरक गति मां ते नहिं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी।।
साधुजी ने वन्दना नित-नित कीजे, प्रात: उगन्ते सूर रे प्राणी।
नीच गति में ते नहिं जावे, पामे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी।।

भगवान ने ठीक ही कहा-"हे जीव! तू अनन्तकाल तक निगोद में रहा। पुण्यवानी के उदय से निगोद से निकलकर एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय में आया। फिर-फिर जन्मने के बाद मनुष्य भव पाकर भी यदि फिर से गर्भावास में आना पड़ा तो...?"

गर्भावास अन्धेरी कोटड़ी है। गर्भावास में जीव कोई साधना नहीं कर सकता। आपको आज सामायिक, संवर, साधना की बात कही जाती है, तो कई कह देंगे- बाबजी। सर्दी घणी पड़े। सर्दी है तो सर्दी ज्यादा, गर्मी है तो गर्मी ज्यादा, वर्षा है तो भी अनुकूलता नहीं, तो फिर कौनसी ऋतु चाहिए?

सीयाला में सी पड़े, उन्याला में.....।

भाई! ये तो मौसम के कारण हैं। साधक साधना करना चाहे तो हर मौसम में साधना कर सकता है। जब भी साधना में कोई बाधा आए तो उस वक्त साधक घबराए नहीं। मारणान्तिक कष्ट आने पर साधक संलेखना-संथारा करके पण्डित-मरण का वरण करता है, परन्तु मरने की आकांक्षा नहीं करता।

आप में से कुछ सोते समय सागारी संथारा करते हैं। कइयों के यह नियम है। सुख-दुःख सबको आते हैं। कर्म के कारण सुख-दुःख का सभी को सामना करना

पड़ता है। सुख-दु:ख तो ठीक उसी तरह हैं जैसे मन्दिर पर ध्वजा रहती है। ध्वजा पवन के झोंके से कभी इधर-कभी उधर होती रहती है, ऐसे ही सुख-दु:ख व्यक्ति के जीवन में आते-जाते रहते हैं।

हमारी मूल बात चल रही थी कि हमने जैसे कर्म किए हैं वैसे फल मिलने वाले हैं। आज समाज में सौ में से पचास घरों में एक-न-एक समस्या है ही। किसी के एक बेटा है और वह भी अलग रहता है। क्या वह बेटा माँ-बाप की सेवा करेगा? बेटा तो अलग रहता ही है, कहीं-कहीं तो पति-पत्नी भी अलग रहते हैं। पत्नी ऊपर रोटी पकाती है तो पति नीचे रांडिया रोट पकाता है। यह स्थिति जहाँ भी देखने को मिलती है, पुराने लोग प्राय: कहते थे कि-'डागले चढ़ने देखो, घर-घर ओहीज लेखो।'

आज घर-घर में समस्या क्यों? समस्या का मूल कारण है-प्रकृति का नहीं मिलना। प्रकृति नहीं मिलने से भाई-भाई अलग रहते हैं, बाप-बेटे में बनती नहीं। सास-बहू के झगड़े तो प्रसिद्ध हैं ही। सास-बहू के झगड़े-मनमुटाव और बोल-चाल नहीं होने से एक कहावत प्राय: सुनने में आती है-'सासू सीधी हुवे तो लड़े और बांडी हुवे तो भी लड़े।'

हमारी ये बहिनें सुन तो रही हैं, उनको भी ध्यान रखना है कि एक दिन उनका भी बुढ़ापा आएगा। जिन्हें अपना बुढ़ापा सोरा निकालना है, वे बहू को बेटी की तरह समझें।

एक समय था जब एक पिता के कई-कई सन्तानें होती। आज तो 'हम दो हमारे दो' का जमाना है। घर में एक ही बेटा है तो बूढ़े माँ-बाप जाय तो कहाँ जाय? गुरुदेव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. तो फरमाते हैं-वह महाभारत तो एक ही हुआ, आज तो घर-घर में रोज-रोज महाभारत होते रहते हैं।

एक सेठजी को अपने लड़के की शादी करनी थी, इसलिए लड़की देखने को गए। पूछा- आपने रामायण तो पढ़ी ही होगी? लड़की बोली-अभी तो हमारे घर में रामायण है, मैं आप रे अठे आऊँला तो महाभारत मचा दूँला।

मरुभूति और कमल दोनों भाई हैं। मरुभूति सरल है, विनीत है, पर उसकी पत्नी जिसका नाम वसुन्धरा है, वह सदाचरण वाली नहीं, साथ ही साथ वह क्रोधी है, अनीतिवती है। कमल की पत्नी वरुणा सरल स्वभाविनी है। देखिए, दोनों की प्रकृति में अन्तर है। रथ के दो पहिये, एक ऊँचा और एक नीचा हो तो क्या गाड़ी ठीक से चल सकेगी?

आप जब भी घर में बहू लाते हैं तो परीक्षा करके लाते हैं। खुद तो देखते ही हैं, परिवार के लोग भी देखते हैं। सब कुछ जाँचने, परखने, देखने के बाद भी कर्म के कारण संयोग-वियोग नहीं बनते क्या? फिर क्यों कहते हैं कि उसे पत्नी खराब मिल गई। देखिए, पत्नी अगर खराब है तो सारी उम्र रोवणो ही रोवणो है। आपके घर ऐसी बहू आ जाय तो...? आप बहू को लेकर आए तो घर से निकालना सम्भव नहीं है। कमठा माथे काम करणियो, काम ठीक नहीं करे तो अगले दिन बुलावणो या नहीं बुलावणो हाथ में है, लेकिन देख-चोख ने बहू लाया, बहू चाहे अनुकूल है या प्रतिकूल उसे घर से निकालना हाथ में नहीं है।

आप किसी के प्रति यह मत कहना कि उसने बुरा किया। बुरा कोई कैसे करता है? यदि कर्म अच्छे हैं तो जंगल में मंगल हो सकता है और कर्म अच्छे नहीं तो मंगल में दंगल होते देर नहीं लगती।

कर्म बदलते रहते हैं। गुरुदेव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. कहते हैं-''जब सुख के दिन नहीं रहे, तो ये दु:ख के दिन भी नहीं रहेंगे।'' कृष्ण वासुदेव ने जब जन्म लिया तो उस समय कोई बधाई वाले नहीं थे। किसी को पता भी चल जाता तो उसे चुप रहने का कह दिया जाता। कृष्ण जन्मे तो बधाई देने वाले नहीं और मरे तो कोई साथ रहने वाला नहीं। कर्म एक सा रहने वाला नहीं है, इसलिए जो मिला है, जैसा मिला है उससे सन्तोष करके साधना में आगे बढें, यही मंगल मनीषा है।

■

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 19
ISSN 2249-2011

प्रवचन

प्राप्त का सदुपयोग : सिद्धावस्था प्रापक

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में प्रदत्त प्रवचन का संकलन श्री नौरतनमलजी मेहता द्वारा किया गया है। -सम्पादक

जिन वचनों की अनुरक्तता, वचनानुरूप कार्य में उपयुक्तता और भावों में पवित्रता से मल और संक्लेश से छुटकारा पाकर संसार को परिमित ही नहीं परिसमाप्त करने वाले, अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त तथा संसार परिमित करने के लिए काया, वचन और मन की सारी दुष्प्रवृत्तियों को तिलाञ्जलि देने की प्रबल प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्तों के चरणों में वन्दना करने के पश्चात्

हमें धोखे में रखा, केवल रटन विद्या में लगाया गया। अहंकार बढ़ता गया। इतने थोकड़े याद कर लिये, आगम रट लिये। प्रतियोगिताओं में प्रभावी प्रेरणा, बड़े-बड़े इनाम, धार्मिक परीक्षाओं में नकल, नम्बरों के लिए क्या-क्या गलत तरीके, ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, व्याख्यान में संख्या से, तपस्या से, होड़ाहोड़ी से ही तो चौमासा सफल लगता है। इतनी सामायिक, इतने पौषध, जन्म जयन्तियों पर इतने एकाशन, इतने उपवास, दिखावा, पत्रिकाओं में ऐतिहासिकता का उद्घोष, क्या ये नाटक हमने अनन्त बार नहीं किये?

पुण्य, हाँ, हाँ पुण्य कमाया, देवलोक की सैर की, फिर त्रसकाय की काय स्थिति के 2,000 सागर पूरे किये और बाद में वे ही एकेन्द्रिय, वे ही वनस्पति, वे ही निगोद। क्या किया उस पुण्य ने? आज तक भ्रमित किया भटकाया। धर्म यही तो बताया गया। जब पुण्य हेय नहीं दिखेगा, कैसे आयेगी समकित?

एकान्त असत्य तो नहीं कहा जा सकता, आंशिक सत्यता तो है ही, धर्म के नाम पर जितनी दुकानदारियाँ चल रही हैं, उसी से ये भ्रमणाएँ पैदा हो रही हैं। सामायिक गलत नहीं है, दोष युक्त सामायिक गलत है। लाभार्थ, गर्व, निदान आदि दोषों के कारण यह दुर्दशा है। भावपूर्वक सही आराधना नहीं हुई, उसका दोष है। ठाणांग (स्थान-2)-**दुविहे धम्मे पण्णत्ते- सुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे चेव** अर्थात् धर्म दो प्रकार का कहा गया है- श्रुतधर्म (द्वादशांग श्रुत का अभ्यास) और चारित्र धर्म (सम्यक्त्व, व्रत, समिति आदि का आचरण) यहाँ धर्म के दो भेद बताये और तीसरे ठाणे में अति व्यवस्थित कहा गया-

तिविहे भगवया धम्मे पण्णत्ते, तं जहा- सुअधिज्झिते, सुज्झाइते, सुतवस्सिते। जहा सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झाइयं भवति, जया सुज्झाइतं भवति तदा सुत्तवस्सितं भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झाइते सुतवस्सिते सुयक्खाते णं भगवया धम्मे पण्णत्ते।

भगवान ने तीन प्रकार का धर्म कहा है- सु-अधीत (समीचीन रूप से अध्ययन किया गया)। सुध्यात (समीचीन रूप से ध्यान किया हुआ) और सु-तपस्यित (सु-आचरित)।

जब धर्म सु-अधीत होता है, तब वह सु-ध्यात होता है। जब वह सु-ध्यात होता है, तब वह सु-तपस्यित होता है। सु-अधीत, सु-ध्यात और सु-तपस्यित धर्म को भगवान ने स्वाख्यात धर्म कहा है।

जो उत्तराध्ययन के 9/44 में सुआख्यात धर्म की बात कही गई, वह यही धर्म है। भगवती 7/2 में सुप्पच्चक्खाण में स्पष्ट बताया-वह सत्यभाषा बोलता है, मृषाभाषा नहीं बोलता। वह 3 करण 3 योग से संयत, विरत है, पाप कर्मों को उसने प्रतिहत कर दिया है, प्रत्याख्यान से अनागत पापों को त्याग दिया है, वह

अक्रिय (कर्मबँध की कारणभूत क्रियाओं से रहित) है, संवृत (आस्रवद्वारों को रोकने वाला) है, एकान्त अदण्डरूप है और एकान्त पण्डित है, वह सुप्रत्याख्यानी है। इसके विपरीत जो जीवादिक नवतत्त्वों को नहीं जानता वह मृषावादी आदि बताया गया। धर्म का प्रारम्भ ही सम्यक्त्व होने पर सम्भव है। शुद्ध धर्म एकान्त हितकारी है, अशुद्ध धर्म, मिलावटी है। धर्म पुण्य नहीं, पाप है। सीखना गलत नहीं है, नकल करना गलत नहीं है, अहंकार गलत है। दशवैकालिकसूत्र 9/4 तप और आचार समाधि का वर्णन करते हुए कहता है–**चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ। तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ।**

अर्थात् तप समाधि चार प्रकार की होती है। यथा–1. इहलोक (वर्तमान जीवन के भौतिक लाभ या तुच्छ विषयभोगों की वाञ्छा) के प्रयोजन से तप नहीं करना चाहिए। 2. परलोक (पारलौकिक भौतिक सुखों) के लिए तप नहीं करना चाहिए। 3. कीर्ति, वर्ण, शब्द और श्लोक के लिए तप नहीं करना चाहिए। 4. (कर्म) निर्जरा के अतिरिक्त अन्य किसी भी उद्देश्य से तप नहीं करना चाहिए।

चउविहा खलु आयारसमाही भवइ। तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा। नो कित्ति-वण्ण-सद्द सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ। आचारसमाधि चार प्रकार की है, यथा–1. इहलोक के लिए 2. परलोक के लिए 3. कीर्ति, वर्ण, शब्द, और श्लोक के लिए भी आचार का पालन नहीं करे और 4. आर्हत हेतुओं के सिवाय अन्य किसी भी हेतु को लेकर आचार का पालन नहीं करना चाहिए।

तप और आचार समाधि निर्जरा के लिए है, जिन भगवान वर्णित उद्देश्य के लिए है, ऐसा आगम से स्पष्ट है। भूल हमारी है, भगवान की नहीं।

उत्तराध्ययनसूत्र की गाथा (20/44) क्या ही सुन्दर कह रही है–

विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहियं।
एसो वि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो।।

अर्थात् जैसे पिया हुआ कालकूट विष प्राणों का विनाश कर देता है और उलटा पकड़ा हुआ शस्त्र जैसे अपना ही घातक होता है तथा जैसे वश में नहीं हुआ पिशाच साधक को मार डालता है वैसे ही विषय विकारों से युक्त यह धर्म भी विनाश कर देता है।

पुण्य को हेय मानने वाले कतिपय लोग ऐसा तर्क प्रस्तुत करते हैं। जिन विषयों में विकार करके जीव का पतन हुआ, वे विषय पुण्य ने ही तो दिलाए, विकार हेय है तो विषय हेय है। विषय हेय है तो पुण्य भी हेय होना चाहिए। इसलिए सम्यग्दर्शन, केवल दृष्टि सही कर लो, पुण्य को हेय मान लो, तभी जैनी बनोगे, साधक बनोगे।

नहीं भइया! प्ररूपणा सही करो, सातिशय पुण्य बिना धर्म में मति होगी ही नहीं, पुण्य थोड़ा बहुत नहीं, विशेष–विशेष चाहिए। देखते हैं आखिर वह पुण्य है क्या?

इन्द्रियाँ वश में हैं, योग अशुभ नहीं है, लेश्या अशुभ है, सावद्य है, किन्तु विशेष पापकारी प्रवृत्ति नहीं है, इस कारण स्थूल स्तर पर योग शुभ है। समकित आयी नहीं है, दृष्टि सम्यक् हुई नहीं है इन सारी भूमिकाओं में सामान्य पुण्य ही हो सकता है। पवित्रता जिस भी स्तर पर हो, जितनी भी हो, आत्महित में है, आत्मोत्थानकारी है।

पुण्य तत्त्व! वीतराग दर्शन का विशिष्ट तत्त्व! दशवैकालिकसूत्र 5/47, 49 में दान पुण्य आया। टीकाकार महर्षि ने कितना अच्छा भेद दिखाया.... आकांक्षा रहित, कामना रहित, इच्छा रहित है तो पुण्य। पुण्य तत्व वर्तमान के सदुपयोग से सम्बन्धित है। पूर्व के सदुपयोग से जो अच्छे संस्कार बने, जो अच्छे कर्म संचित हुए, उसके उदय से मिलने वाली सामग्री पुण्य

तत्त्व नहीं है। उदय निष्पन्न होने से औदयिक भाव हैं। यदि उस सामग्री का सञ्चय करेगा तो परिग्रह रूपी पाप होगा। मिलना पुण्य तत्त्व नहीं है। पुण्य तत्त्व के नौ भेद ठाणांग जी के नवमे ठाणे में आए, वे मिलने के नहीं हैं, मिले हुए के सदुपयोग के हैं। सदुपयोग रूपी पुण्य तत्त्व का फल हो सकता है मिलना, पर वह अतीत का पुण्य तत्त्व है, वर्तमान में उसका सदुपयोग है तो ही पुण्य तत्त्व है।

जो आत्मा को पवित्र करे वह पुण्य है। जिससे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति हो वही पुण्य है। शारीरिक उन्नति के पुण्य से मानसिक उन्नति का पुण्य विशिष्ट है और मानसिक उन्नति से आत्मिक उन्नति का पुण्य अतिविशिष्ट है।

यदि कोई कार्य ऐसा हो जिससे शारीरिक उन्नति होती हो, किन्तु मानसिक अवनति, तो ऐसी अवस्था में मानसिक उन्नति का अधिक ध्यान रखना चाहिए और मानसिक उन्नति की अपेक्षा आत्मिक उन्नति का अधिक ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि आत्मिक उन्नति होने पर और किसी उन्नति की आवश्यकता नहीं रहती और मानसिक उन्नति होने पर शारीरिक उन्नति की आवश्यकता नहीं रहती। आत्मिक उन्नति वाले पुण्य को ही शास्त्रकारों ने सुपुण्य कहा है। तत्त्वार्थसूत्र में **'शुभ: पुण्यस्य'** शुभ योग को पुण्य कहा। सयोगी अवस्था तक कोई न कोई योग अवश्य रहेगा ही। इच्छा रहित, कामना रहित होने पर भी बारहवें या तेरहवें गुणस्थान में कोई न कोई योग तो रहेगा ही। सयोगी केवली के केवल शुभ योग है, पुण्य तत्त्व है।

पुण्य तत्त्व के प्रारम्भ के पाँच भेद बिना मन वाले के हो ही नहीं सकते। देने की सामग्री हो, लेने वाला हो और देने का मन होने पर ही ये पुण्य हो सकते हैं, देने वाला हाथ काय पुण्य, देते हुए अच्छी भाषा वचन पुण्य और देते हुए अच्छा मन, मन पुण्य। वही बात नमस्कार पुण्य के साथ है, अत: ठाणांग के नौ प्रकार को तत्त्वार्थ सूत्र में **'कायवाङ् मन:कर्मयोग:'** इस रूप में रख दिया। यद्यपि वहाँ सात तत्त्व मानकर पुण्य-पाप को आस्रव का उपभेद कह दिया, पर श्वेताम्बर वाङ्मय (आगम और व्याख्या साहित्य) पुण्य-पाप को अलग कहता है। यद्यपि दिगम्बर भी पदार्थ नौ ही मानते हैं। पुण्य को अलग पदार्थ ही कहते हैं। यह पुण्य तत्त्व मन, वचन, काय के योग से सम्बन्धित है। भगवतीसूत्र 12/5 में मन-वचन के योग को चतु:स्पर्शी और काययोग को अष्टस्पर्शी कह रहा है। यानी ये पुद्गल हैं, अजीव हैं। अजीव को ज्ञेय में रखा, पाप, आस्रव और बँध भी रूपी पुद्गल हैं और अजीव हैं। वे तीनों जब हेय हैं तो पुण्य भी हेय होना चाहिए, ऐसा विवेचन भी कतिपय करते हैं।

ज्ञेय में तो सभी तत्त्व आयेंगे ही, फिर कोई हेय होगा, कोई उपादेय होगा। दशवैकालिकसूत्र 4/11 कह रहा है-

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे।।

अर्थात् व्यक्ति श्रवण करके ही कल्याण को जानता है और श्रवण करके ही पाप को जानता है। कल्याण और पाप दोनों को सुनकर ही व्यक्ति जान पाता है, (तत्पश्चात् उनमें से ही) जो श्रेय है, उसका आचरण करता है।

चर्चा चल रही है, तत्त्व की अर्चा चल रही है, मोक्ष में विराजित शुद्ध जीव तत्त्व की। मिट्टी और पानी के संयोग से (और कुछ कुछ वियोग से भी) अनेकविध सामग्री बनती है, घड़े बनते हैं, दीये बनते हैं, खिलौने बनते हैं, परात और सुराही बनती हैं। उसी मिट्टी-पानी के अलग प्रकार के संयोग में बीज बोने से फसल उगती है, पेड़ पौधे लहलहाते हैं, फूल, फल, सब्जी, अनाज मिलते हैं, जिससे शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति होती है। उसी मिट्टी (पृथ्वी-पत्थर) पानी के संयोग से ईंटें, कोल्हू भी बनते हैं, बजरी, सीमेंट आदि बनते हैं। जिनसे बने मकान में जीव रहता है और उसी मिट्टी पानी के संयोग से उत्पन्न कपास के वस्त्र को पहनता है। संयोग मूलत: पृथ्वी पानी का है, सहकार अग्नि वायु का भी है,

वनस्पति तो इन्हीं के संयोग से बनी है।

इसी प्रकार मूल तत्त्व दो ही हैं, मूल राशि दो ही बताई गई। जीव और अजीव। यद्यपि जैन दर्शन में प्रत्येक द्रव्य कथंचिद् अनित्य बताया गया है, तथापि चिन्तन करने वाला जीव है, मनन करने वाला जीव है, उपयोग लक्षण वाला जीव है, अस्तु, उसकी प्रधानता से जीव स्व तत्त्व है, अजीव पर तत्त्व है। जीव और अजीव का संयोग सम्बन्ध है, वह प्रतिक्षण परिवर्तित हो ही रहा है, पुराने कुछ खिर रहे हैं, नये कुछ मिल रहे हैं। पुराना जा रहा है, नया आ रहा है। यह क्रम अनादि से चल रहा है, पर इसका अन्त सम्भव है। अस्तु, पुद्गल पुद्गल के रूप में नित्य होते हुए भी पुद्गल का जीव के साथ जो सम्बन्ध है वह नित्य नहीं हो सकता। शरीर, इन्द्रिय, मन, प्राण आदि में प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। कथंचित् नित्य कथंचित् अनित्य होने पर भी जीव में नित्यता को प्रधानता दी गई 'एगो मे सासओ अप्पा' क्योंकि वह इसका स्व-तत्त्व है और पर-तत्त्व अजीव के सम्बन्ध को अनित्यता की प्रधानता से दर्शाया गया-'इमं सरीरं अणिच्चं।' पुद्गल में अनित्य की प्रधानता है। अनित्य की ओर गतिशील होने पर विवेक भाव में (राग-द्वेष रूपी भाव में) भावकर्म में और कर्म (उदय आने पर) परिस्थिति में बदल जाता है। अनित्य-पुद्गल का सम्बन्ध पाँच इन्द्रियों के 23 विषयों में राग-द्वेष रूपी विकार उत्पन्न करता है, विषय-कषाय का यह चक्र पाप, आस्रव और बन्ध रूपी तत्त्व के रूप में कहा गया।

अनित्य की ओर गतिशीलता दो प्रकार की होती है, यह अच्छा है, यह बुरा है, यह भाता है, सुहाता है, ये तो मुझे नहीं भाता, नहीं सुहाता, इसमें मेरी रुचि है, इसमें रुचि नहीं है। इस राग-द्वेष को जरा हम देखें अनुभवियों के ज्ञान खज़ाने में झाँककर-'रुचि राग को और अरुचि द्वेष को उत्पन्न करती है। राग से बन्धन और द्वेष से भेद की दृढ़ता होती है। बन्धन से जड़ता तथा पराधीनता और भेद से भय तथा संघर्ष का जन्म होता है। जड़ता से अपने में देहभाव की दृढ़ता, पराधीनता से वस्तु, व्यक्ति आदि की दासता, भय से प्राप्त शक्ति का ह्रास अर्थात् हृदय-दौर्बल्य और संघर्ष से हिंसा आदि विकारों की उत्पत्ति होती है, जिससे चित्त अशुद्ध हो जाता है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 32वें अध्याय में सुन्दर निरूपण हुआ। अनित्य की ओर गतिशील होने पर विवेक भाव में बदला। उपयोग की व्यग्रता-उपयोग की उथल-पुथल ही तो कषाय है, कषाय का ही दो विभागों में कथन राग-द्वेष है। पाप हुआ, योगों की अशुभ प्रवृत्ति हुई जिसका परिणाम हुआ आस्रव। भाव कर्म में बदला, आस्रव कार्मण वर्गणा का हुआ। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशों में चार प्रकार का बन्ध-वह राग-द्वेष भाव कर्म में बदल गया। अब अबाधा काल बीतने पर उसके परिपाक का समय आया तब उदय प्राप्त कर्म ने उदय निष्पन्न सामग्री औदारिक आदि शरीर, वर्णादि पर्याय बाहर की सामग्री अर्थात् अवस्था, वस्तु, परिस्थिति उपलब्ध कराई। इन तीनों के कुचक्र में जीव की चेतना का कुछ अंश नित्य उद्घाटित रहा। विवेक पूरी तरह विलुप्त नहीं हुआ, विवेक शत-प्रतिशत राग-द्वेष में नहीं बदला, कुछ न कुछ अंश में खुला रहा, सूक्ष्म निगोद लब्धि अपर्याप्तक-संसार में जीव की निम्नतम अवस्था में भी प्रकाश टिमटिम करता रहा। नन्दीसूत्र में कहा-सघन बादल होने पर, सूर्य का प्रकाश घनघोर बादलों से आवरित होने पर भी कुछ न कुछ प्रकाश रहता ही है, दिन में रात्रि के समान अन्धकार नहीं होता, उसी प्रकार जीव के अपने स्वभाव, दया, करुणा, सरलता, विनम्रता पर पूरा आवरण नहीं आया और इनके प्रभाव से यत् किञ्चित् ही सही कुछ न कुछ पवित्र भाव भी रहे-कायपुण्य का जघन्य अंश वहाँ भी पाया जाता है। कर्म काटने की सकाम निर्जरा, बिना भोगे चुकाने की अविपाक निर्जरा तो वहाँ नहीं थी, किन्तु सविपाक निर्जरा प्रतिसमय थी ही। कभी-कभी अकाम निर्जरा भी होती रही, पर ज्ञानियों ने विवशता वश हुई निर्जरा को निर्जरा तत्त्व के रूप में नहीं कहा। वह अकाम निर्जरा पुण्य के रूप में वहाँ रही।

उत्तराध्ययनसूत्र 13वें अध्ययन की 10वीं, 11वीं गाथा स्पष्ट कह रही है। महान् अनुभाग, महान् ऋद्धि, द्युति और बाहर की अनुकूल सामग्री पूर्व सञ्चित अच्छे कर्म का प्रभाव है। वे अच्छे कर्म शुभयोग से ही सञ्चित हुए हैं। किन्तु जब शुभ योग थे तब पुण्यतत्त्व था अब यदि संग्रह पर ममता है तो परिग्रह रूपी पाप है, पुण्य नहीं। पुण्य फल से युक्त इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ शरीर आदि सामग्री इसी अध्ययन की 28वीं, 29वीं, 30वीं गाथा स्पष्ट कर रही है कि पूर्व के पुण्य से प्राप्त सामग्री पकड़ के रखी गयी, भोगी गयी, दुरुपयोग में लगायी गयी उस समय पुण्यतत्त्व नहीं, पापतत्त्व है। हेय तो पापतत्त्व है। इस भोग के दुरुपयोग का दोष पुण्य के सिर पर मढ़ना कैसे औचित्यपूर्ण हो सकता है? इसी अध्ययन की 32वीं गाथा कितनी स्पष्ट प्रेरणा कर रही है। भोग नहीं छोड़ सकते, त्याग नहीं कर सकते, संयम,तप में नहीं आ सकते तो कम से कम 'अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं' आर्य कर्म करो, अच्छे कर्म करो, काया, वचन और मन को पवित्र करो, चरम शरीरी चित्त मुनि साथ ही 21वीं गाथा कह रहे हैं-

हे राजन्! इस अशाश्वत जीवन में पुण्य-कर्म न करने वाला जीव मृत्यु के मुख में पहुँचकर सोच करता है तथा धर्म न करने वाला परलोक में भी सोच ही करता रहता है।

औपपातिक में देखो-अंबड़ संन्यासी का जीव अगले दृढ़प्रतिज्ञ कुमार के भव में व्रत, प्रत्याख्यान स्वीकारने से पूर्व भी भोगों से अलिप्त रहकर पूर्वोपार्जित पुण्य से वर्तमान में पुण्य तत्त्व का प्रवर्धन करते हुए सुपुण्यशाली बनता है, जिससे उसकी धर्म में मति होती है। सूत्र का उदाहरण लें-पूर्वोपार्जित पुण्य का भयंकर दुरुपयोग करने वाला परदेशी राजा चित्त मुनि की प्रेरणा से पुण्य बढ़ाते हुए सम्यग्दृष्टि बना।

सम्यग्दृष्टि श्रावक प्रदेशी को केशीकुमार श्रमण ने प्रभावी प्रेरणा करते हुए कहा-**मा णं तुमं पासी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा से वरसंडे इ वा, णट्टसाला इ वा, इक्खुवाडए इ वा, खलवाडए इ वा।** प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण से निवेदन किया-भदन्त! मैं पहले रमणीय होकर बाद में अरमणीय नहीं बनूँगा। मैंने यह विचार किया है कि सेयविया नगरी आदि सात हजार ग्रामों की आय के चार विभाग करूँगा। उनमें से एक भाग राज्य की व्यवस्था और रक्षण के लिए बल (सेना) और वाहन के लिए दूँगा, एक भाग प्रजा के पालन हेतु कोठार में अन्न आदि के लिए रखूँगा, एक भाग अन्त:पुर के निर्वाह और रक्षा के लिए दूँगा और शेष एक भाग से एक विशाल कूटाकारशाला बनवाऊँगा और फिर बहुत से पुरुषों को भोजन, वेतन और दैनिक मज़दूरी पर नियुक्त कर प्रतिदिन विपुल माला में अशन, पान, खादिम, स्वादिम रूप चारों प्रकार का आहार बनवाकर अनेक श्रमणों, माहनों, भिक्षुओं, यात्रियों और पथिकों को देते हुए एवं शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास आदि यावत् (तप द्वारा आत्मा को भावित करते हुए) अपना जीवनयापन करूँगा।

श्रावक व्रत के संथारे में उसने मन, वचन, काया के अशुभयोग का त्यागकर शुभयोग में ही तो वर्तन किया। ज़हर मिलने पर भी आगमकार क्या फरमा रहे हैं-**'मणसा वि अप्पदुस्समाणे'** मन में अशुभता, भाव में अपवित्रता, वचनों में कठोरता, कटुता, काया में अस्थिरता कुछ भी तो नहीं आने दी। अत: आराधक बना।

उत्तराध्ययनसूत्र 5/18 बिल्कुल स्पष्ट कह रहा है-आराधकता के लिए भी सातिशय पुण्य चाहिए।

मरणंपि सुपुण्णाणं, जहा मेयमणुस्सुयं।
विप्पसण्णमणाघायं, संजयाणं वुसीमओ।।

अर्थात् जैसे मैंने भगवान महावीर से सुना है, वैसे आप भी प्रसन्नचित्त होकर, आघात रहित, संयम-परायण, इन्द्रियों को वश में करने वाले पुण्यशालियों की सकाम मृत्यु को सुनें।

बिना पुण्य समकित कहाँ? बिना पुण्य श्रावक व्रत

कहाँ? बिना पुण्य साधकता कहाँ? और बिना पुण्य संथारा कहाँ? आंशिक हो या पूर्ण, एक करण एक योग से हो या तीन करण तीन योग से, सबमें अशुभ योग का ही त्याग है। अशुभ योग छूटने पर सयोगी अवस्था तक शुभ योग ही तो रहता है। केवल शुभ योग ही केवलज्ञान प्रकटाता है, केवल शुभ योग ही अयोग रूपी पूर्ण संवर दिलाता है। बात चल रही थी परदेशी की, अगले भव में उनका नाम भी दृढ़प्रतिज्ञ ही होगा, वे भी भोगों से अलिप्त ही रहेंगे। सातिशय पुण्य से संयम ग्रहण कर संसार का अन्त करेंगे।

प्रश्न उठता है कि पुण्य अनन्त बार किया, सातिशय पुण्य तक पहुँचने के पहले पाप में चले गए। शुभयोग अनन्त बार आया, स्थायित्व नहीं दे पाये, अशुभ योग में चले गए। इससे शुभ योग हेय नहीं हो जाता, पुण्य हेय नहीं हो जाता। पुण्योदय से प्राप्त का सदुपयोग पुण्य तत्त्व है, सदुपयोग कभी भी हेय नहीं हो सकता। दुरुपयोग पाप है, वह ही हेय है, बन्ध दुरुपयोग का परिणाम है, उसी से बचना है।

जीव के स्वरूप के विषय में कुछ चर्चा पूर्व में प्रस्तुत हो चुकी है। उसी शुद्ध स्वरूप अर्थात् सिद्ध के स्वरूप के विषय में आचाराङ्गसूत्र 5/6 में आया–

'सव्वे सरा णियट्टंति, तक्का जत्थ न विज्जइ, मई तत्थ न गाहिया, ओए अप्पइट्ठाणस्स खेयण्णे। से ण दीहे, ण हस्से, ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमंडले। ण किण्हे, ण णीले, ण लोहिए, ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले। ण सुरहिगंधे, ण दुरहिगंधे। ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अंबिले, ण महुरे। ण कक्खडे, ण मउए, ण गुरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे, ण काऊ, ण रुहे, ण संगे, ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अण्णहा परिण्णे सण्णे। उवमा ण विज्जइ, अरूवी सत्ता, अपयस्स पयं णत्थि। से ण सद्दे ण रूवे ण गंधे ण रसे ण फासे इच्चेयावंति त्ति बेमि। अर्थात् मोक्ष के सुख का शब्दों के द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता, तर्क उसमें काम नहीं करता, मति का वहाँ प्रयोजन नहीं अर्थात् मति के द्वारा वहाँ विकल्प उत्पन्न नहीं किया जा सकता, ऐसा केवल शुद्ध चैतन्य और ज्ञान, दर्शन तथा अक्षय सुख एवं अनन्त शक्तिमय सिद्ध भगवान है।

संस्थान की अपेक्षा से वह सिद्ध भगवान की आत्मा न दीर्घ है–न ह्रस्व, न वृत्ताकार है, न त्रिकोण एवं न चतुष्कोण है, न परिमण्डल के आकार–चूड़ी के आकार वाले है। वर्ण की अपेक्षा से न कृष्ण है, न नीला, न लाल, न पीला, न श्वेत है, गन्ध की अपेक्षा से न सुगन्ध युक्त है, न दुर्गन्ध युक्त है। रस की अपेक्षा से न तिक्त है, न कटुक, न कषैला, न खट्टा और न मधुर है एवं स्पर्श की अपेक्षा से वह न तो कर्कश है, न कोमल तथा न गुरु, न लघु, न ठण्डा है, न गर्म, न स्निग्ध है, न रुक्ष तथा न वह काय वाला या लेश्या वाला है इसी तरह न तो उसका कर्म रूप बीज है और न उसको किसी का संग है, वह न तो स्त्री है और न ही पुरुष और न ही नपुंसक है, वह सामान्य और विशेष ज्ञान वाला, अवस्था विशेष से रहित, अनुपम केवल शुद्ध चैतन्य स्वरूप अरूपी सत्ता वाला, अक्षय सुख की राशि, अनन्त शक्तियों का भण्डार और ज्ञान दर्शन के उपयोग से युक्त हुआ विराजमान है। वह मुक्त आत्मा शब्द, रूप, गन्ध, रस एवं स्पर्श युक्त नहीं है। वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श की ओर गतिशील होना अर्थात् उन पर राग या द्वेष करना, उनका दुरुपयोग करना, फिर उसी वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श में आबद्ध होना है। इनका सदुपयोग होने पर ही उनसे छुटकारा मिल सकता है तभी अरूपी बना जा सकता है। सिद्ध के स्वरूप से प्रेरणा लेकर हम इनसे मुक्त होने का भाव जगाएँ, भाव बढ़ाएँ।

दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों की मान्यता में कोई अन्तर नहीं रहा। उपयोग गुण, उपयोग लक्षण की उथल–पुथल, उपयोग की व्यग्रता जो कषाय रूप से कही गयी, उसका नियन्त्रण जब तक योग पर होगा, मन रूपी घोड़े की लगाम जब तक कषाय रूपी घुड़सवार के हाथ में रहेगी तब तक वह अशुभ ही रहेगा। पाप,

आस्रव, बन्ध ही होता रहेगा। अनित्य की ओर जीव गतिशील रहेगा। सिद्ध का स्वरूप (आचाराङ्गसूत्र 5/6 में) अरूपी बताया गया। पुण्य का विवेचन रूपी अजीव के रूप में हुआ और इसीलिए कतिपय लोग इसे पाप के समान हेय बताने लगे। हाथ का काँटा पैर में चुभे हुए काटे को निकालने में सहयोगी बनता है। हाथ में रहे हुए काँटे को कोई हेय समझ कर फेंक दे तो पैर का काँटा निकल नहीं पाएगा, पीड़ा होती रहेगी। इसी प्रकार शुभ योग को कोई हेय समझ कर छोड़ देगा तो अशुभ योग समाप्त नहीं हो पाएगा, अयोग अवस्था मिल नहीं पाएगी, रूपी अवस्था का नाश नहीं हो पाएगा, जीव अरूपी नहीं हो पाएगा।

अनित्य की (असत् की) अनुभूतिजनित वेदना नित्य की (सत् की) जिज्ञासा जागृत करती है। नित्य की (सत् की) जिज्ञासा जितनी प्रबल तथा स्थायी होती जाती है, असत् का तादात्म्य समाप्त होता जाता है। उत्तराध्ययनसूत्र 19/12-13 **इमं सरीरं अणिच्चं-** यह गाथा शरीर की सच्चाई का दिग्दर्शन कराती है। यह शरीर अनित्य है, अपवित्र है, अशुचि से इसकी उत्पत्ति होती है तथा इसमें जीव का निवास भी अशाश्वत ही है एवं यह शरीर दु:ख और क्लेशों की खान है और आगे कह दिया **'खणं पि न रमामहं'** उत्तराध्ययनसूत्र 19/15 इसमें एक क्षण भी आनन्द नहीं, यह स्वीकार करने पर तब अनित्य शरीर का सदुपयोग शुरु होता है। काया की अशुभ प्रवृत्ति छूटती है, कायगुप्ति होती है, काया समाधारणता होती है, वचन की अशुभ प्रवृत्ति छूटती है, वचनगुप्ति होती है, वचन समाधारणता होती है, मन के अशुभ विचार छूटते हैं, मनगुप्ति होती है, मन समाधारणता होती है। कायगुप्ति, काय समाधारणता, वचनगुप्ति, वचन समाधारणता, मनगुप्ति, मन समाधारणता इसमें कौनसा योग रहेगा? अशुभ का तो निरोध हो गया। तब फिर शुभ योग ही तो रहने वाला है। शुभ योग से सम्यक्त्व और संयम के साथ संवर और निर्जरा तत्त्व ही तो बढ़ने वाला है। इसलिए पुण्य रूपी अजीव होते हुए भी संवर और निर्जरा के साथ उपादेय है।

भक्ति विनय बहुमान.....।।

सबसे अधिक संसार सुख, सर्वार्थ सिद्ध देव लहे।
निर्दोषता, निर्कांक्षता, निर्मल मुनि इक वर्ष लँघे।
अमृत प्रपा, गुरु की कृपा, मुदिता अनुपम और कहाँ।।

आचार्यश्री हस्ती की अमूल्य देन

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

सौरभ मुस्कराती मुद्रा हस्ती की
मार्तण्ड युग मनीषी की।
सामायिक-स्वाध्याय के प्रेरक की
दीक्षा-शती आई जागृत करने की।

सूर्योदय के समय सामायिक
और पाँच मिनट स्वाध्याय
संकल्प जीवन में उतार लें
दीक्षा-शती को यही बधाई।

शान्ति का आभास होगा
परिवार का सुधार होगा
समय का सदुपयोग होगा
ज्ञान-चक्षु का खुलना होगा।

स्वाध्याय का अनूठा सम्बल
अज्ञान तम का अचूक नाशक
अच्छे वक्त की सुन्दर शैली
विजय का निश्चित परचम
ध्यान एकाग्र करने का साधन
राग-द्वेष का विजेता स्वाध्याय।

हस्ती का सामायिक-स्वाध्याय का बीड़ा
सफल हुआ यह संघ में सारा
घर-घर आगम का उजियारा
प्रकाशमय हो गया जीवन हमारा।

-ई 123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 26
ISSN 2249-2011

चिन्तन

कॉमन सेन्स भी काम में लें

डॉ. दयानन्द भार्गव

जिनवाणी मुख्यत: प्रचार की पत्रिका है, किन्तु इसमें कभी-कभी विचार-प्रधान लेख भी आ जाते हैं। सितम्बर माह के अंक में श्री प्रमोद मुनि जी का 'सुपुण्यशाली की उपजे-धर्म में मति' शीर्षक से प्रकाशित प्रवचन और उसके साथ ही 'कर्त्तव्य का अभिमान कैसे मिटे' शीर्षक से डॉ. धर्मचन्द जी का सम्पादकीय ये दोनों विचारोत्तेजक लेख हैं और इन दोनों लेखों में परस्पर एक परोक्ष सम्बन्ध भी है।

मैं आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार पर कुछ काम करने के बाद अब शाङ्कर वेदान्त तथा उपनिषदों पर काम कर रहा हूँ। इसलिये उपर्युक्त इन दोनों लेखों में मेरी विशेष रुचि जागी। दोनों ही लेख वितण्डा या वाद-विवाद के स्थान पर सत्य की खोज की दृष्टि से लिखे गये हैं, जिसमें सभी साधकों का कल्याण निहित है। निश्चय तथा व्यवहार के इस विषय में शास्त्र-प्रमाणों के आधार पर पहले पर्याप्त चर्चा हुई है और मैंने भी अपने "Jaina Ethics' नामक पीएच-डी. के लिए लिखे शोधग्रन्थ में एक अध्याय इस विषय पर भी लिखा है कि निश्चय और व्यवहार का परस्पर क्या सम्बन्ध है। प्रस्तुत लेख में मैं शास्त्र-प्रमाणों में न जाकर जीवन के अनुभवों के आलोक में कुछ कहना चाहता हूँ। कोई साधक, चाहे वह कितना भी समाज से तटस्थ रहना चाहे, क्या महसूस नहीं करता कि उसकी अध्यात्म-साधना में शान्त, सहयोगपूर्ण तथा ईमानदारी वाला वातावरण सहायक सिद्ध होता है? क्या वह परिवार, समाज अथवा राष्ट्र को अपनी अध्यात्म-साधना में बाधक नहीं समझता जहाँ कलह, वाद-विवाद, संघर्ष स्वार्थपरायणता तथा बेईमानी वाला वातावरण हो? इन प्रश्नों के उत्तर में हम देखें कि यदि हम सहयोग और सहृदयता वाले वातावरण को अध्यात्म-साधना में सहायक समझते हैं तो उस सहयोग और सहृदयता को अध्यात्म में बाधक कैसे कहा जा सकता है? बल्कि सहयोग और सहृदयता का व्यवहार तो अध्यात्म में सहायक ही सिद्ध हुआ। (इस स्थान पर यदि मैं कहीं भी 'पुण्य' जैसे शास्त्रीय शब्द का प्रयोग कर दूँ तो शास्त्रों के दोनों प्रमाणों की झड़ लग जायेगी और कोई भी निष्कर्ष आज तक तो सर्वसम्मत हुआ नहीं, आगे भी होने की आशा मुझे नहीं, जीवन के अनुभव के आलोक में कुछ कहना चाहता हूँ। अस्तु।)

बात जितनी सीधे शब्दों में हमने ऊपर कह दी, चिन्तक उसे उतना सरल नहीं मानते। पहली बात कठिनाई की ओर डॉ. धर्मचन्दजी ने हमारा ध्यान दिलाया है कि कर्तृत्व के अभिमान का निराकरण कैसे हो? अभिमान या मान एक कषाय है। यह तो शास्त्र चर्चा हुई। वैसे भी संसार में अभिमानी को कोई अच्छा नहीं समझता। दूसरी ओर समाज में जो कुछ भी अच्छा काम करते हैं, उनमें 99 प्रतिशत स्थितियों में अभिमान होता ही है, चाहे वह कितना ही सूक्ष्म क्यों न हो। डॉ. धर्मचन्द जी ने तो जैन शास्त्र सम्मत उपाय सुझा दिया। इन सब उपायों के बावजूद मान-कषाय से मुक्ति मिलती दिखती नहीं तो कुछ विचारक सेवा कार्य को ही हेय समझ लेते हैं (फिर यदि 'पाप' शब्द का प्रयोग कर दूँ तो शास्त्र-प्रमाणों की कभी समाप्त न होने वाली झड़ लग जायेगी।)

इसलिये कॉमन सेन्स की बात करें। जो भी सेवा

कार्य करते हैं उनमें जिन्हें स्थूल अभिमान होता है, वे प्रशस्त नहीं हैं...इस विषय में शायद ही किसी का मतभेद हो। जिनमें सूक्ष्म अभिमान रहता है, उन्हें हम Necessary Evil (अनिवार्य बुराई) के रूप में स्वीकार करना होगा, क्योंकि सर्वथा अभिमान शून्यता एक ऐसा आदर्श है जो व्यवहार में अलभ्य नहीं तो अत्यन्त दुर्लभ अवश्य है और यदि इस कारण हम सेवा कार्य को ही छोड़ने की बात करें तो वह इस अर्थ में व्यावहारिक नहीं होगी कि सेवा कार्य को पूरी तरह हेय बतलाने वालों का काम भी मैंने तो दूसरों से सेवा लिये बिना चलता देखा नहीं। अब वह सेवा प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष रूप में होती हो तो बात दूसरी है। 'नाक सीधी न पकड़ कर द्रविड प्राणायाम से पकड़ी तो भी नाक पकड़ी तो सही' सेवा जीवन की एक सच्ची आवश्यकता है। इस सच्चाई को नकारना जीवन को असहज बना देता है।

किन्तु इस सारे चित्रण का एक दूसरा भी महत्त्वपूर्ण पक्ष है। सारी सेवा एक बहिर्मुखी प्रवृत्ति है। वह पराश्रित है, इसीलिये व्यवहार कहलाती है। किन्तु जीवन का एक आन्तरिक पक्ष भी है। वह बाह्य पक्ष से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। सेवा की बहिर्मुखी प्रवृत्ति वालों में जीवन के आन्तरिक पक्ष की उपेक्षा होती दिखाई देती है। यह वस्तुतः बहुत दयनीय स्थिति हो जाती है। आन्तरिक पक्ष के महत्त्व को रेखांकित करने के लिये ही जैन परम्परा उसे निश्चय तथा वेदान्त परम्परा उसे परमार्थ कहती है जबकि बाह्य पक्ष को दोनों परम्परायें व्यवहार कहती हैं। इन नामों से ही आन्तरिक पक्ष की मुख्यता सूचित हो जाती है।

एक समस्या निश्चय प्रौर व्यवहार के बीच अनुपात की है। इस विषय में सैद्धान्तिक स्तर पर कोई पत्थर की लकीर जैसी (Hard and fast) मर्यादा बाँधना उचित प्रतीत नहीं होता। क्योंकि रुचिभेद प्रकृति प्रदत्त है, उसे मिटाया नहीं जा सकता। सबकी पृष्ठभूमि एक जैसी नहीं है। कुछ व्यक्ति स्वभाव से ही अन्तर्मुख होते हैं। उनसे सक्रिय Field work की आशा नहीं की जा सकती। दूसरी ओर कुछ लोगों के लिए ध्यान करने से बड़ी सजा नहीं है। हमें **'भिन्नरुचिर्हि लोकः'** के नियम को मान कर इस विषय में उदारता और लचीलापन रखना चाहिये अन्यथा एक कभी समाप्त न होने वाला विवाद खड़ा हो जाता है।

कालिदास एक कवि थे, धर्माचार्य नहीं थे। उन्होंने एक कसौटी दी कि सज्जनों के लिए सन्देह पैदा होने पर उनके अन्तःकरण की प्रवृत्ति ही सही–गलत का फैसला कर देती है–**'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।'**

जो व्यवहार को मुख्य मान रहे हैं वे अपने अन्दर झाँक कर देखें कि उनके अन्दर कहीं ऐसा खोखलापन तो नहीं कि वे ये जान ही नहीं पा रहे कि वे हैं कौन? जो अपने को नहीं जान पाया उसका सारे संसार को जानना भी कौड़ी के बराबर मूल्य का है।

जो निश्चय में जीना चाह रहे हैं वे देखें कि वे स्वार्थ–सिद्धि की कोठरी में बन्द होकर कहीं दूसरों के प्रति क्रूरता की सीमा तक तो तटस्थ नहीं हो गये हैं? उनके वैराग्य में से भी सर्वजनहितकारी वे स्पन्दन तो निकल रहे हैं न, जो महावीर, बुद्ध, ईसा और शंकराचार्य की अध्यात्म–साधना से स्फुरित हुए थे और जो आज भी उन्हें स्फुरित कर देते हैं जो उनके वचन सुनते हैं।

शास्त्रार्थ होते रहे हैं, होते रहने चाहिये। कहा गया है **'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः।'** पर कभी सोचता हूँ कि क्या शास्त्रार्थ से सत्य मिल जायेगा? कहीं ऐसा तो नहीं है कि दिल के बहलाने को गालिब यह खयाल अच्छा है शास्त्र पढ़ें, पर उसका जीवन से मिलान करते चलें। अगर हमारा मन नहीं बताता कि ठीक क्या है और गलत क्या है, तो क्या शास्त्र के ठीक–गलत बताने से हमारा जीवन ठीक हो जायेगा?

–सेवानिवृत्त प्रोफेसर, –जे. 1/7, एल. आई. सी. फ्लैट्स, विद्याधर नगर, जयपुर (राज.)

■

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 28
ISSN 2249-2011

आचार्य श्री हस्ती की काव्य-साधना

डॉ. नरेन्द्र भानावत

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. भारतीय सन्त-परम्परा के विशिष्ट ज्ञानी, ध्यानी साधक, उत्कृष्ट क्रियाराधक और 'जिनवाणी' के महान् उपासक, संवेदनशील साहित्यकार थे। आपको धार्मिक, आध्यात्मिक संस्कार विरासत में मिले। जब आप गर्भ में थे, तभी प्लेग की चपेट में आ जाने से आपके पिता चल बसे। माँ ने बड़े धैर्य और शान्तिपूर्वक धर्माराधना करते हुए आपका लालन-पालन किया। सात वर्ष बाद प्लेग का पुनः प्रकोप हुआ, जिसमें आपके नाना और उनके परिवार के सात सदस्य एक-एक कर चल बसे। जिस परिस्थिति में आपका जन्म और बचपन बीता, वह प्लेग जैसे महामारी और भयंकर दुर्भिक्ष से ग्रस्त थी। लोग अत्यन्त दुःखी, अभावग्रस्त और असहाय थे। समाज बाल-विवाह, मृत्यु-भोज, पर्दा-प्रथा, अन्धविश्वास आदि कुरीतियों और मिथ्या मान्यताओं से जकड़ा हुआ था। जात-पाँत, छूआछूत और ऊँच-नीच के विभिन्न स्तरों में समाज विभक्त था। नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। ब्रिटिश शासन, देशी रियासती नरेश और जमींदार ठाकुरों की तिहरी गुलामी से जनता त्रस्त थी। बालक हस्ती के अचेतन मन पर इन सबका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इन कठिन परिस्थितियों का बड़े धैर्य और साहस के साथ मुकाबला करते हुए बालक हस्ती ने अपने व्यक्तित्व का जो निर्माण किया, वह एक ओर करुणा, दया, प्रेम और त्याग से आर्द्र था, तो दूसरी ओर शौर्य, शक्ति, बल और पराक्रम से पूरित था।

साधु-सन्तों के सम्पर्क से और माँ के धार्मिक संस्कारों से बालक हस्ती पर वैराग्य का रंग चढ़ा और अपनी माँ के साथ ही ऐसे सन्त मार्ग पर वह बढ़ चला मात्र दस वर्ष की अवस्था में, जहाँ न कोई महामारी हो, न कोई दुर्भिक्ष। आचार्य शोभाचन्द्रजी म.सा. के चरणों में दीक्षित बाल-साधक सन्त हस्ती को ज्ञान, क्रिया और भक्ति के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति करने का समुचित अवसर मिला। साधना के साथ स्वाध्याय और स्वाध्याय के साथ साहित्य-सृजन की प्रेरणा विरासत में मिली।

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. जैनधर्म की जिस स्थानकवासी परम्परा से सम्बन्धित थे, उसके मूल पुरुष आचार्य कुशलोजी रहे। कुशलोजी के गुरु भ्राता आचार्य जयमल जी उच्चकोटि के कवि थे। कुशलोजी के शिष्य आचार्य गुमानचन्द्रजी म.सा. सुतीक्ष्ण प्रज्ञावान् थे। उनके शिष्य आचार्य रतनचन्द्रजी म.सा. महान् क्रिया उद्धारक, धीर, गम्भीर, परम तेजस्वी सन्त थे। इनके नाम से ही रत्नचन्द्र सम्प्रदाय चला है। आचार्य रतनचन्द्रजी म.सा. उत्कृष्ट संयम-साधक होने के साथ-साथ महान् कवि थे। इनके शिष्य आचार्य हम्मीरमलजी म.सा. हुए, जो परम गुरु-भक्त, विनय-मूर्ति और तेजस्वी थे। इनके शिष्य आचार्य श्री कजोड़ीमलजी कुशाग्रबुद्धि के धनी थे। इनके शिष्य आचार्य विनयचन्द्रजी म.सा. हुए, जो ज्ञान-क्रिया सम्पन्न विशिष्ट कवि थे। इनकी कई रचनाएँ आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार में हस्तलिखित कृतियों में सुरक्षित हैं। इनके शिष्य आचार्य शोभाचन्द्रजी म.सा. सेवाव्रती, सरल स्वभावी और क्षमाशील सन्त थे। इन्हीं के चरणों में श्री हस्तीमलजी म.सा. ने जैन भागवती दीक्षा अङ्गीकृत की।

उपर्युक्त उल्लेख से यह स्पष्ट है कि आचार्यश्री जिस जैन सम्प्रदाय से जुड़े, उसमें साधना

के साथ-साथ साहित्य-सृजन की परम्परा रही। आचार्य विनयचन्द्र जी म.सा. के अतिरिक्त इस सम्प्रदाय में श्री दुर्गादासजी म.सा., कनीरामजी म.सा., किशनलालजी म.सा., सुजानमलजी म.सा. जैसे सन्त कवि और महासती जड़ावकँवरजी म.सा., भूरसुन्दरीजी म.सा. जैसी कवयित्रियाँ भी हुई हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने उत्कृष्ट संयम-साधना के साथ-साथ साहित्य-निर्माण एवं काव्य-सर्जना को समृद्ध और पुष्ट कर रत्नसम्प्रदाय के गौरव को अक्षुण्ण रखते हुए उसमें वृद्धि की।

आचार्यश्री हस्ती बहुआयामी प्रतिभा के धनी, आगमनिष्ठ चिन्तक एवं साहित्यकार थे। आपने समाज में श्रुतज्ञान के प्रति विशेष जागृति पैदा की और इस बात पर बल दिया कि रूढ़ि रूप में की गई क्रिया विशेष फलवती नहीं होती। क्रिया को जब ज्ञान की आँख मिलती है, तभी वह तेजस्वी बनती है। स्वाध्याय संघों की संगठना और ज्ञान-भण्डारों की स्थापना की प्रेरणा देकर आपने एक ओर ज्ञान के प्रति जन-जागरण की अलख जगाई है तो दूसरी ओर स्वयं साहित्य-साधना में रत रहकर साहित्य-सर्जना द्वारा माँ भारती के भण्डार को समृद्ध करने में अपना विशिष्ट ऐतिहासिक योगदान दिया।

आपकी साहित्य-साधना बहुमुखी है। इसके चार मुख्य आयाम हैं-

1. आगमिक व्याख्या साहित्य, 2. जैनधर्म सम्बन्धी इतिहास साहित्य, 3. प्रवचन साहित्य और 4. काव्य-साहित्य। यहाँ हम काव्य साहित्य पर ही चर्चा करेंगे।

आचार्यश्री प्राकृत, संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषाओं के प्रखर विद्वान् होने के साथ-साथ आगम, न्याय, धर्म, दर्शन, व्याकरण, साहित्य, इतिहास आदि विषयों के व्यापक अध्येता और गूढ़ गम्भीर चिन्तक रहे हैं। इसी गूढ़, गम्भीर ज्ञान, मनन और चिन्तन की संवेदना के धरातल से आपने काव्य-रचना की है, पर आपका काव्य कहीं भी शास्त्रीयता से बोझिल नहीं हुआ है। वह सरल, सुबोध और स्पष्ट है। लगता है आपने अपने पाण्डित्य-प्रदर्शन के लिए नहीं, वरन् आगमों में निहित जीवन-मूल्यों को जन-साधारण तक पहुँचाने के लिए तथा जैन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्पराओं से उसे अवगत कराने के उद्देश्य से ही काव्य विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। आपके काव्य में लोक-मंगल, आत्म-जागरण और नैतिक उन्नयन की भावना स्पष्ट परिलक्षित होती है।

आचार्यश्री के काव्य को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है-1. स्तुति-काव्य, 2. उपदेश-काव्य, 3. चरित-काव्य और 4. पद्यानुवाद।

1. स्तुति-काव्य-आचार्यश्री भाषा, साहित्य, आगम एवं तत्त्वज्ञान के प्रखर पण्डित होकर भी और आचार्य जैसे महनीय पद को धारण करते हुए भी जीवन में अत्यन्त सरल, विनयशील और स्नेहपूरित रहे हैं। ज्ञान और भक्ति का, शक्ति और स्नेह का, श्रुत-सेवा और समर्पण भाव का आप जैसा समन्वित व्यक्तित्व कम देखने में आता है। स्तुति में भक्त अपने आराध्य के प्रति निश्छल भाव से अपने को समर्पित करता है। आचार्यश्री का आराध्य वीतराग प्रभु है, जिसने राग-द्वेष को जीत लिया है। भगवान ऋषभदेव, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी की स्तुति करते हुए उनके गुणों के प्रति कवि ने अपने आपको समर्पित किया है। भगवान शान्तिनाथ की प्रार्थना करते हुए कवि ने केवल अपने लिए नहीं, सबके लिए शान्ति की कामना की है-

भीतर शान्ति, बाहिर शान्ति, तुझमें शान्ति, मुझमें शान्ति।
सबमें शान्ति बसाओ, सब मिल शान्ति कहो।।

भगवान महावीर की वन्दना करते हुए कवि की यही चाह है कि वह ज्योतिर्धर, वीर जिनेश्वर

का नाम सदा रटता रहे और दुर्मति से सुमति में उसका निवास हो–

जिनराज चरण का चेरा, माँगू मैं सुमति-बसेरा।
ओ 'हस्ती' नित वन्दन करना, वीर जिनेश्वर को।।

आचार्यश्री की अपने गुरु के प्रति अनन्त श्रद्धाभक्ति है। गुरु ही शिष्य को पत्थर से प्रतिभावान् बनाता है–

गुरु कारीगर के सम जग में, वचन जो खावेला।
पत्थर से प्रतिमा सम वो नर, महिमा पावेला।
घणो सुख पावेला, जो गुरु-वचनों पर, प्रीत बढ़ावेला।।

कवि की दृष्टि में सच्चा गुरु वह है, जिसने जगत् से नाता तोड़कर परमात्मा से शुभ ध्यान लगा लिया है, जो क्रोध, मान, माया, लोभादि कषायों का त्यागी है, जो क्षमा–रस से ओतप्रोत है। ऐसे गुरु की सेवा करना ही अपने कर्म–बन्धनों को काटना है। गुरु के समान और कोई उपकारी नहीं और कोई आधार नहीं–

उपकारी सद्गुरु दूजा, नहीं कोई संसार।
मोह-भँवर में पड़े हुए को, यही बड़ा आधार।।

गुरु से कवि भक्त–भगवान सा सम्बन्ध जोड़ता है। कबीर ने गुरु को गोविन्द से भी बड़ा बताया है, क्योंकि गुरु ही वह माध्यम है, जिससे गोविन्द की पहचान होती है। गुरु से विनय करता हुआ कवि अपने लिए आत्म–शान्ति और आत्मबल की माँग करता है–

श्री गुरुवर महाराज हमें यह वर दो।
रग-रग में मेरे एक शान्ति रस भर दो।।
मैं हूँ अनाथ भव दुःख से पूरा दुःखिया,
प्रभु करुणा सागर तू तारक का मुखिया।
कर महर नज़र अब दीननाथ तव कर दो।।
ये काम क्रोध मद मोह शत्रु हैं घेरे,
लूटत ज्ञानादिक सम्पद को मुझ डेरे।
अब तुम बिन पालक कौन हमें बल दो।।

स्तुति काव्य में जहाँ कवि ने सत्गुरु के सामान्य गुणों की स्तवना की है, वहीं अपनी परम्परा में जो पूर्वाचार्य हुए हैं, उनके प्रति श्रद्धाभक्ति और विनयभाव प्रकट किया है। आचार्य भूधरजी, आचार्य कुशलोजी, आचार्य रतनचन्द्रजी और आचार्य शोभाचन्द्रजी के महनीय, वन्दनीय व्यक्तित्व का गुणानुवाद करते हुए जहाँ एक ओर कवि ने उनके चरित्र की विशेषताओं एवं प्रेरक घटनाओं का उल्लेख किया है, वहीं यह कामना की है कि उनके गुण अपने जीवन में चरितार्थ हों। गुरु के जप/नामस्मरण को भी कवि ने महत्त्व दिया है–

1. श्री कुशल पूज्य का कीजे जाप, मिट जावे सब शोक सन्ताप।
2. जय बोलो रत्न मुनीश्वर की, धन कुशल वंश के पट्टधर की।
3. सुमरो शोभाचन्द्र मुनीन्द्र, भो जिन धर्म दीपाने वाले।

2. उपदेश–काव्य–जैन सन्तों का मुख्य लक्ष्य आत्म–कल्याण के साथ–साथ लोक–कल्याण की प्रेरणा देना है। व्यक्ति का जीवन शुद्ध, सात्त्विक, प्रामाणिक और नैतिक बने तथा समाज में समता, भाईचारा, शान्ति एवं परस्पर सहयोग–सहिष्णुता की वृद्धि हो, इस उद्देश्य से जैन सन्त ग्रामानुग्राम पद–विहार करते हुए लोक हितार्थ उपदेश/प्रवचन देते हैं। उनका उपदेश शास्त्रीय ज्ञान एवं लोक–अनुभव से सम्पृक्त रहता है। अपने उपदेश को जनता के हृदय तक सम्प्रेषित करने के लिए वे उसे सहज–सरल और सरस बनाकर प्रस्तुत करते हैं। यही नहीं शास्त्रीय ज्ञान को भावप्रवण और हृदय–संवेद्य बनाने के लिए वे काव्य और संगीत का सहारा लेते हैं। इसी उद्देश्य से जैन सन्त–काव्य की सृष्टि अविच्छिन्न रूप से आज तक होती चली आ रही है। आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के उपदेशात्मक काव्य की भी यही भावभूमि है।

आचार्य श्री के उपदेश-काव्य के तीन पक्ष हैं-1. आत्म-बोध, 2. समाज-बोध और 3. पर्व-बोध। ये बोधत्रय आध्यात्मिकता से जुड़े हुए हैं। आचार्य श्री सुषुप्त आत्म-शक्ति को जागृत करने के लिए सतत साधना और साहित्य सृजनरत रहे। मानव-जीवन की दुर्लभता को दृष्टि में रखकर आपने बार-बार आत्म-स्वरूप को समझने और पहचानने की जनमानस को प्रेरणा दी है-

समझो चेतन जी अपना रूप, यो अवसर मत हारो,
ज्ञान दरसमय रूप तिहारो, अस्थि मांसमय देह न थारो।
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो।।

आचार्यश्री ने चेतना के ऊर्ध्वीकरण पर बल देते हुए कहा है कि शरीर और आत्मा भिन्न हैं। शरीर के विभिन्न अङ्ग और आँख, नाक, कान, जीभ आदि दिखाई देने वाली इन्द्रियाँ क्षणिक हैं, नश्वर हैं। पर इन्हें सञ्चालित करने वाला जो शक्ति तत्त्व है, वह अजर-अमर है-

हाथ, पैर नहीं, सिर भी न तुम हो,
गर्दन, भुजा, उदर नहीं तुम हो।
नेत्रादिक इन्द्रिय नहीं तुम हो,
पर सबके सञ्चालक तुम हो।
पृथ्वी, जल, अग्नि, नहीं तुम हो,
गगन, अनिल में भी नहीं तुम हो।
मन, वाणी, बुद्धि नहीं तुम हो,
पर सबके संयोजक तुम हो।

जब बहिरात्मा अन्तर्मुख होती है, तब सुरूप-कुरूप, काले-गोरे, लम्बे-बौने आदि का भाव नहीं रहता। इन्द्रिय आधारित सुख-दुःख से चेतना ऊपर उठ जाती है। तब न किसी प्रकार का रोग रहता है, न शोक। राग-द्वेष से ऊपर उठने पर जो अनुभव होता है, वह अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव है। अनुभूति के इसी क्षण में आचार्य हस्ती का कवि हृदय गा उठता है-

मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया-धूप।
तारामण्डल की न गति है, जहाँ न पहुँचे सूर।
जगमग ज्योति सदा जगती है, दीसे यह जग कूप।
श्रद्धा नगरी बास हमारा, चिन्मय कोष अनूप।
निराबाध सुख में झूलूँ मैं, सद्चित् आनन्द रूप।
मैं न किसी से दबने वाला, रोग न मेरा रूप।
'गजेन्द्र' निजपद को पहचाने, सो भूपों का भूप।

इस स्थिति में आत्मा अनन्त प्रकाश से भर जाती है। कोई आशा-इच्छा मन में नहीं रहती। शरीर और आत्मा के भेद-ज्ञान से भव-प्रपञ्च का पाश कट जाता है। कवि परम चेतना का स्पर्श पा, गा उठता है-

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश।
रोग-शोक नहीं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास।
सदा शान्तिमय मैं हूँ, मेरा अचल रूप है खास।
मोह मिथ्यात्व की गाँठ गले तब, होवे ज्ञान प्रकाश।
'गजेन्द्र' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आस।।

यह आत्मबोध के साथ-साथ समाज-बोध के प्रति भी आचार्यश्री का कवि हृदय सजग रहा है। आचार्यश्री व्यक्ति की व्रतनिष्ठा और नैतिक प्रतिबद्धता को स्वस्थ समाज रचना के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी दृष्टि से 'जागो-जागो हे आत्म-बन्धु' कहकर वे जागृति का सन्देश देते हैं। आचार्यश्री जागृत समाज का लक्षण भौतिक वैभव या धन-सम्पदा की अखूट प्राप्ति को नहीं मानते। आपकी दृष्टि में जागृत समाज वह समाज है, जिसमें स्वाध्याय अर्थात् सद्शास्त्रों के अध्ययन के प्रति रुचि और सम्यग्ज्ञान के प्रति जागरूकता हो। अपने 'स्वाध्याय सन्देश' में आपने कहा है-

कर लो श्रुतवाणी का पाठ, भविक जन, मन-मल हरने को।
बिन स्वाध्याय ज्ञान नहिं होगा, ज्योति जगाने को।
राग-रोष की गाँठ गले नहीं, बोधि मिलाने को।।

आचार्यश्री बार-बार कहते हैं-''स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो'' क्योंकि 'स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना।'

आचार्यश्री का आह्वान है कि यदि दु:ख मिटाना है तो अज्ञान के अन्धकार को दूर करो और वह स्वाध्याय से ही सम्भव है।

जीवन का और समाज का भी मुख्य लक्ष्य सुख और शान्ति है और यह बिना समता भाव के सम्भव नहीं। समता की प्राप्ति के लिए आचार्य श्री ने सामायिक पर बल दिया है। आपकी प्रेरणापंक्ति है-''जीवन उन्नत करना चाहो तो सामायिक साधन कर लो।'' सामायिक की साधना समता रस का पान है। इससे विषमता मिटती है और जीवन-व्यवहार में समता आती है।

आचार्यश्री सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के पक्षपाती हैं। आप व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध को अङ्ग-अङ्गी के रूप में देखते हैं-

विभिन्न व्यक्ति अङ्ग समझ लो, तन-समाज सुखदायी।
'गजमुनि' सबके हित सब दौड़ें, दु:ख दरिद्र नस जाहि।।

आदर्श समाज-रचना के लिए आचार्यश्री विनय, मैत्री, सेवा, परोपकार, शील, सहनशीलता, अनुशासन आदि जीवन मूल्यों को आवश्यक मानते हैं। प्रत्येक व्यक्ति ईमानदारी और विवेकपूर्ण देवभक्ति, गुरुसेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और दान रूप षट्कर्म की साधना करे, तो वह न केवल अपने जीवन को उच्च बना सकता है वरन् आदर्श समाज का निर्माण भी कर सकता है।

आचार्यश्री समाज उत्थान के लिए नारी शिक्षण को विशेष महत्त्व देते हैं। आप नारी-जाति को प्रेरणा देते हैं कि वह सांसारिक राग-रंग और देह के बनाव-शृङ्गार में न उलझे वरन् शील और संयम से अपने तन को सजाये-

1. **शील और संयम की महिमा, तुम तन शोभे हो।**
   सोना चाँदी हीरक से, नहिं खान पूजाई हो।।
2. **सदाचार सादापन धारो, ज्ञान-ध्यान से तप सिणगारो।**
   पर उपकार ही भूषण, खास समझो मर्म को जी।।

आचार्य श्री मूलत: आध्यात्मिक संवेदना के कवि हैं। सामाजिक अनुष्ठानों, पर्व-तिथियों, उत्सव-मेलों आदि को भी आपने आध्यात्मिक रंग दिया है। रक्षाबन्धन को आचार्यश्री ने जीवमात्र के प्रति रक्षा का प्रेरक त्योहार बताया है-''बाँधो-बाँधो रे, जतना के सूत्र से, रक्षा होवेला।'' दीपावली, भगवान महावीर का निर्वाण दिवस प्रज्ञा और प्रकाश का पर्व है। यह सन्देश देता है कि हम अन्धकार से प्रकाश में जावें। आचार्यश्री ने दीपक की तरह साधनारत रहने की प्रेरणा दी है-

दीपक ज्यों जीवन जलता है,
मूल्यवान भाया रे जगत् में।
सत्पुरुषों का जीवन परहित,
जलता शोभाया रे जगत् में।।

होली विकार-विगलन का पर्व है-

ज्ञान-ध्यान की ज्योति जगा, दुष्कर्म जलाओ रे,
स्वार्थ-भाव की धूल उड़ाकर, प्रेम बढ़ाओ रे।
राष्ट्र-धर्म का शुद्ध गुलाबी रंग जमाओ रे।।

जन्माष्टमी का सन्देश है-पशुओं के प्रति प्रेम बढ़ावें, जीवन में सादगी लायें, अन्याय और अत्याचार का नीतिपूर्वक मुकाबला करें। आचार्य श्री के शब्दों में-

कृष्ण कन्हैया जन्मे आज, भारत भार हटाने।
गुणियों का मान बढ़ाने, हिंसा का पाप घटाने।।

लोक-जीवन में शीतला सप्तमी और अक्षय तृतीया का बड़ा महत्त्व है। आचार्यश्री ने शीतला माता को दयामाता के रूप में देखा है-''हमारी दया-माता थाने मनाऊँ देवी शीतला।''

अक्षय तृतीया, अक्षय धर्मकरणी का प्रेरणादायी त्योहार है। इस दिन वर्षीतप के पारणे होते हैं। जप-तप, दान, त्याग और आत्म-सुधार की प्रेरणा देते हुए आचार्य श्री कहते हैं-

अक्षय बीज वृद्धि का कारण, त्योहि भाव विचार।
जप-तपकरणी खण्डित भाव में, नहीं करती उद्धार।।

जैन परम्परा में चातुर्मास और पर्युषण पर्व का विशेष महत्त्व है। जीवरक्षा और संयम-साधना की विशेष वृद्धि के लिए साधु-साध्वी वर्षाकाल में एक जगह ही स्थिर रहते हैं। इस काल में धर्मकरणी की प्रेरणा देते हुए आचार्यश्री कहते हैं-

जीव की जतना कर लीजे रे।
आयो वर्षावास धर्म की करणी कर लीजे रे।
दया धर्म को मूल समझकर, समता रस पीजे रे।।

पर्युषण पर्व सब पर्वों का राजा है। इसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना करते हुए अपने स्वभाव में स्थित हुआ जाता है। कृत पापों की आलोचना कर क्षमापना द्वारा आत्मशुद्धि की जाती है। विषय-कषाय घटाकर आत्मगुण विकसित किये जाते हैं। आत्मोल्लास के क्षणों में आचार्यश्री का कवि हृदय गा उठता है-

यह पर्व पर्युषण आया, सब जग में आनन्द छाया रे।
तप-जप से कर्म खपावो, दे दान द्रव्य-फल पावो।
ममता त्यागी सुख पाया रे।।
समता से मन को जोड़ो, ममता का बन्धन तोड़ो,
हे सार ज्ञान का भाया रे।।

इस प्रकार आचार्यश्री ने समाज में आत्म-बोध, समाज-बोध और पर्व-बोध जागृत करने की दृष्टि से जो काव्यमय उपदेश दिया है, वह आत्मस्पर्शी और प्रेरणास्पद है।

3. चरित-काव्य-चरित-काव्य सृजन की समृद्ध परम्परा रही है। रामायण और महाभारत दो ऐसे ग्रन्थ रहे हैं, जिनको आधार बनाकर विविध चरित काव्य रचे गये हैं। जैन साहित्य में त्रिषष्टिशलाका पुरुषों के जीवन-वृत्त को आधार बनाकर विपुल परिमाण में चरित काव्य लिखे गये हैं। कथा के माध्यम से तत्त्वज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने की यह परम्परा आज तक चली आ रही है। कथा के कई रूप हैं यथा-धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, लौकिक आदि। आचार्यश्री ने जिन चरित काव्यों की रचना की है, वे ऐतिहासिक और धार्मिक-आगमिक आधार लिए हुए हैं।

आचार्यश्री इतिहास को वर्तमान पीढ़ी के लिए अत्यधिक प्रेरक मानते हैं। इतिहास ऐसा दीपक है, जो भूले-भटकों को सही रास्ता दिखाता है। आपके ही शब्दों में-

युगप्रधान सन्तों की जीवन-गाथा,
उनके अनुगामी को न्हायें माथा।
राग-अन्ध हो, भूला जन निज गुण को,
धर्म-गाथा जागृत करती जन-मन को।
सुनो ध्यान से सत्य कथा हितकारी।।

और सचमुच आचार्यश्री ने 210 छन्दों में भगवान महावीर के प्रथम पट्टधर सुधर्मा से लेकर आज तक के जैन आचार्यों का इतिहास 'जैन आचार्य चरितावली' में निबद्ध कर दिया है। इसमें किसी एक आचार्य के चरित्र का आख्यान न होकर भगवान महावीर के बाद होने वाले प्रमुख जैन आचार्यों की जीवन-झाँकी प्रस्तुत की गई है। इस कृति के अन्त में आचार्यश्री ने धर्म और सम्प्रदाय पर विचार करते हुए कहा है कि दोनों का सम्बन्ध ऐसा है जैसा जीव और काया का। धर्म को धारण करने के लिए सम्प्रदाय रूप शरीर की आवश्यकता होती है। धर्म की हानि करने वाला सम्प्रदाय, सम्प्रदाय नहीं, अपितु वह तो घातक होने के कारण माया है। बिना सम्भाले जैसे वस्त्र पर मैल जम जाता है, वैसे ही सम्प्रदाय में भी परिमार्जन-चिन्तन नहीं होने से राग-द्वेषादि मैल का बढ़ जाना सम्भव है। पर मैल होने से वस्त्र फेंका नहीं जाता, अपितु साफ किया जाता है, वैसे ही सम्प्रदाय में आये विकारों का निरन्तर शोधन करते रहना श्रेयस्कर है-

धर्म प्राण तो सम्प्रदाय काया है,
करे धर्म की हानि, वही माया है।
बिना सम्भाले मैल वस्त्र पर आवे,

सम्प्रदाय में भी रागादिक छावे।
वाद हटाये, सम्प्रदाय सुखकारी।।

आवश्यकता इस बात की है कि दृष्टिराग को छोड़कर हम गुणों के भक्त बनें-''दृष्टि राग को छोड़, बनो गुणरागी।''

आचार्यश्री ने इतिहास जैसे नीरस विषय को राधेश्याम, लावणी, ख्याल, रास जैसी राग-रागिनियों में आबद्ध कर सरस बना दिया है। अपनी सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं को काव्य के धरातल पर उतारकर जन-जन तक पहुँचाने में यह 'चरितावली' सफल बन पड़ी है।

यह जिनशासन की महिमा, जग में भारी,
लेकर शरणा तिरे अनन्त नर-नारी।

की टेर श्रोताओं के हृदय में बराबर गूँजती रहती है। इसकी रचना विक्रम सम्वत् 2026 में डेह गाँव (नागौर) में की गई थी।

आचार्यश्री ने 'उत्तराध्ययनसूत्र' और 'अन्तगड़सूत्र' के प्रेरक चरित्रों को लेकर भी कई चरित काव्यों की रचना की है यथा-भृगुपुरोहित धर्मकथा, प्रत्येक बुद्ध नमि राजऋषि, जम्बूकुमार चरित, मम्मण सेठ चरित, ढंढण मुनि चरित, विजयसेठ-विजयासेठानी चरित, जयघोष-विजयघोष चरित, महाराजा उदायन चरित आदि। ये चरित काव्य विविध राग-रागिनियों से ढालबद्ध हैं। इनका मुख्य सन्देश है-राग से विराग की ओर बढ़ना, विभाव से स्वभाव में आना, इन्द्रियजयता, आत्मानुशासन, समता, शान्ति और वीतरागता।

4. पद्यानुवाद-आचार्यश्री आगमनिष्ठ विद्वान् व्याख्याता, कवि और साहित्यकार थे। आपका बराबर यह चिन्तन रहा कि समाज शास्त्रीय-अध्ययन और स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त हो, प्राकृत और संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन के प्रति उसकी रुचि जगे। इसी उद्देश्य और भावना से आपने आत्मप्रेरणा जगाने वाले 'उत्तराध्ययनसूत्र, 'दशवैकालिकसूत्र' जैसे आगम ग्रन्थों का सम्पादन करते समय सहज, सरल भाषा शैली में उनके पद्यानुवाद भी प्रस्तुत किये, ताकि जनसाधारण आगमिक गाथाओं में निहित भावों को सहजता से हृदयंगम कर सके। आपके मार्गदर्शन में पण्डित शशिकान्तजी शास्त्री द्वारा किये गये पद्यानुवाद सरल, स्पष्ट और बोधगम्य हैं। आपने 'तत्त्वार्थसूत्र' का भी पद्यानुवाद किया, जो अप्रकाशित है।

आचार्यश्री का कवि रूप सहज-सरल है। गुरु गम्भीर पाण्डित्य से वह बोझिल नहीं है। भाषा में सारल्य और उपमानों में लोकजीवन की गन्ध है। जीवन में अज्ञान का अन्धकार हटकर ज्ञान का प्रकाश प्रस्फुटित हो, जड़ता का स्थान चिन्मयता ले, उत्तेजना मिटे और संवेदना जगे, यही आपके काव्य का उद्देश्य है। 'सच्ची सीख' कविता में आपने स्पष्ट कहा है जो हाथ दान नहीं दे सकते, वे निष्फल हैं, जो कान शास्त्र-श्रवण नहीं कर सकते हैं वे व्यर्थ हैं, जो नेत्र मुनि-दर्शन नहीं कर सकते, वे निरर्थक हैं, जो पाँव धर्म-स्थान में नहीं पहुँचते, उनका क्या औचित्य? जो जिह्वा 'जिन' गुणगान नहीं कर सकती, उसकी क्या सार्थकता?

बिना दान के निष्फल कर हैं, शास्त्र-श्रवण बिन कान।
व्यर्थ नेत्र मुनि-दर्शन के बिन, तके पराया गात।।
धर्म-स्थान में पहुँच सके ना, व्यर्थ मिले वे पाँव।
इनके सकल करण जग में, है सत्संगति का दाँव।।
खाकर सरस पदार्थ बिगाड़े, बोल बिगाड़े बात।
वृथा मिली वह रसना, जिसने गाई न जिन गुणगात।।

आचार्यश्री ने अपने जीवन को ज्ञान, दर्शन, चारित्र और दान, शील, तप, भाव की आराधना में मनोयोगपूर्वक समर्पित कर सार्थक किया। संथारापूर्वक समाधिभाव में लीन होकर आपने मृत्यु को मंगल महोत्सव में बदलकर सचमुच अपनी 'संकल्प' कविता में व्यक्त किये हुए भावों को मूर्त्त रूप प्रदान किया है-

गुरुदेव चरण वन्दन करके,
मैं नूतन वर्ष प्रवेश करूँ।
शम-संयम का साधन करके,
स्थिर चित्त समाधि प्राप्त करूँ।।1।।
तन-मन इन्द्रिय के शुभ साधन,
पग-पग इच्छित उपलब्ध करूँ।
एकत्व भाव में स्थिर होकर,
रागादिक दोष को दूर करूँ।।2।।
हो चित्त समाधि तन-मन से,
परिवार समाधि से विचरूँ।
अवशेष क्षणों को शासनहित,
अर्पण कर जीवन सफल करूँ।।3।।
निन्दा-विकथा से दूर रहूँ,
निजगुण में सहजे रमण करूँ।
गुरुवर वह शक्ति प्रदान करो,
भवजल से नैया पार करूँ।।4।।
शमदम संयम से प्रीति करूँ,
जिन आज्ञा में अनुरक्ति करूँ।
परगुण से प्रीति दूर करूँ,
'गजमुनि' यो आन्तर भाव धरूँ।।5।।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि आपने कविता को विचार तक सीमित नहीं रखा, उसे आचार में ढाला है। यही आपकी महानता है।

-अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

गुज़रा हुआ ज़माना, मुझे याद आ रहा है

मोहन कोठारी 'विनर'

गुज़रा हुआ ज़माना, मुझे याद आ रहा है,
आज का यह आलम, नहीं रास आ रहा है।
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।टेर।।
पहले ज़माने में, आदर था बड़ों का,
स्वच्छन्दता नहीं थी, भय था बड़ों का।
आज यह नज़ारा, नहीं नज़र आ रहा है,
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।1।।
सभी साथ रहते थे, मिलजुल के सारे,
प्रेम था परस्पर, न कभी मन से हारे।
प्रेम का वो दीप, लो बुझा जा रहा है,
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।2।।
बड़े बोलते थे, उन्हें सम्मान देते,
उनकी कठोर वाणी को, हृदय से सहते।
सोचते थे मन में, भला हो रहा है,
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।3।।
आज के ज़माने की, सोच अलग है,
बड़ों के लिए मन में, न कोई अदब है।
रिश्तों का माधुर्य, घटा जा रहा है,
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।4।।
हम जो भी सोचें, हमें करने दीजिये तुम,
जिधर हमको जाना, जाने दीजिये तुम।
संस्कारों का खज़ाना, लुटा जा रहा है,
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।5।।
साधनों का मञ्जर, बहुत बढ़ गया है,
युवाओं के मन में, वही बस गया है।
फ़र्ज़ वह अपना, भूला जा रहा है
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।6।।
सम्भल जाओ साथी, चलो आज्ञा में,
मर्यादाओं को तुम, रखो प्रज्ञा में।
महापुरुषों का इशारा, चिन्तन जगा रहा है,
गुज़रा हुआ ज़माना.....।।7।।

-जनता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 36
ISSN 2249-2011

आचार्य हस्ती दीक्षाशती

व्यक्तित्व-विकास एवं समस्याओं के समाधान में स्वाध्याय तथा सामायिक की भूमिका

पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा

(गतांक से क्रमशः)

(3) सर्व से सर्वत्र मैत्रीभाव–स्वाध्याय के माध्यम से आत्म-एकत्व को साधने पर व्यक्ति को कोई पराया लगता ही नहीं है, तब स्वाध्याय के सागर में गहरे में उतरने पर जो तीसरा मोती हाथ लगता है, वह सर्व से सर्वत्र मैत्रीभाव का है। जब सब अपने हैं तो हृदय से प्रार्थना का यह स्वर फूटता है कि हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दें कि सबके प्रति मेरा व्यवहार सरलता का, सहजता का, समन्वय का, मैत्री का, प्रमोद का, आदर का, सम्मान का, बहुमान का, सेवा का, सहायता एवं करुणा का और वात्सल्य का हो। सब सुखी हों, सबका कल्याण हो। सबके सुखी होने और सबका कल्याण होने का भाव ही सर्व से सर्वत्र मैत्री का भाव है। जब सब अपने बन जाते हैं और सबका दुःख अपना दुःख (आयतुले पयासु) बन जाता है उसी में सभी के कष्ट निवारण का भाव निहित है। यह भाव प्रभु महावीर को दृष्टिविष चण्डकौशिक सर्प के कल्याणार्थ सब लोगों के वर्जित करने पर भी उसके पास जाने को प्रेरित करता है। उसने अपने दृष्टि-विष से बारह योजन में किसी प्राणी को जीवित नहीं छोड़ा था। प्रभु सर्व का सर्वत्र कल्याण एवं मैत्रीभाव से ओत-प्रोत हो उसके पास जाते हैं। उसका दृष्टिविष जब निष्फल जाता है, तो वह प्रभु को दो बार काटता है, पर वहाँ खून के बजाय दुग्ध की धार प्रवाहित होती है। प्रभु उसे प्रतिबोधित करने को आह्वान करते हैं कि-''**बुज्झ कोसिया बुज्झ। बुज्झ कोसिया बुज्झ**'' सर्प को जाति स्मरण ज्ञान होता है एवं उसे पूर्वजन्म का कृत्य याद आता है। इस प्रकार वह सर्व से सर्वत्र मैत्री का, प्रभु का भाव उस भयंकर विषधर को सन्त बना देता है।

(4) जीवन की क्षणभंगुरता–जब हम स्वाध्याय के समुद्र में गहरे उतरते हैं तो जो चौथा मोती हाथ लगता है, वह है जीवन की क्षणभंगुरता का बोध। प्रभु महावीर के अनुसार यह जीवन कमल के पत्ते पर पड़ी ओस की बूँद के समान अस्थिर और क्षणिक है। कुछ पता नहीं यह कब गिर कर नष्ट हो जाए। **कहा भी है, पानी केरा बुद-बुदा, अस मानुस की जात। देखत ही छिप जायेगा ज्यों तारा परभात। ''मित्रों! न गाती है न गुनगुनाती है, मौत जब आती है, चुपके से चली आती है।** सेठ साहब घर आये और अपनी प्रियतमा पत्नी से बोले-देवी! अब मामला पाँचों-सातों का है यानी 5-7 दिन का है जो सुकृत करना हो अपने हाथ से कर लो। सेठानी ने कहा, स्वामी पाँच-सात दिन कौन देता है? मैंने तो रात के सोये सुबह उठे नहीं देखे। बेटी पास में ही खड़ी थी, बोली, ''माँ तू भी भोली है, इतना समय कौन देता है। यह तो सारा खेल घड़ी दो घड़ी का ही है। नौकरानी जो वहीं खड़ी थी और सुन रही थी, बुद्धिमती और सत्सङ्गी थी। उसने कहा, ''**नास्ति बुद्धिः पितृमात्रोः कन्यायां नैव लक्ष्यते। बहिर्देशे गते श्वासे किं प्रभा पुनरागमे।**'' उसने कहा बुद्धि न माता में है, न पिता या पुत्री में। इसकी कौन गारण्टी ले सकता है कि बाहर गया श्वास पुनः भीतर लौटकर आयेगा। जीवन की इस क्षणभगुंरता का एक मेरे अनुभव की घटित

घटना के आधार पर वर्णन आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ, ध्यान में लें। मैं सन् 1963-64 में परबतसर मुन्सिफ़ मजिस्ट्रेट था। पास ही नावाँ तहसील में श्री कपूरचन्दजी मेहता मुन्सिफ़ मजिस्ट्रेट थे। उनके यहाँ एक मुक़दमे में पेशी पर मेड़ता से डॉक्टर सबलोग साहब और नागौर से डॉक्टर व्यास शहादत देने पेशी पर आये। दोनों हार्ट स्पेशलिस्ट थे। नावाँ छोटी जगह होने से आमोद-प्रमोद हेतु सिनेमाघर नहीं था। दोनों डॉक्टरों की ट्रेन अर्द्धरात्रि को थी। कपूरचन्दजी मेहता अपने मित्र बैंक मैंनेजर को साथ ले उन दोनों का मन बहलाने तथा समय गुज़ारने के लिए उन्हें नावाँ क्लब में ब्रिज खेलने ले गये। कपूरचन्दजी तथा बैंक मैंनेजर पार्टनर थे और दोनों डॉक्टर पार्टनर थे। पहली डील कपूरचन्दजी की, दूसरी डील डॉ. सबलोग साहब और तीसरी बैंक मैंनेजर की थी। बैंक मैंनेजर ने ताश फैंटी और पत्ते बाँटने का एक, दो और तीन का "ती" ही बोला था और वहीं ढेर हो गया। दोनों हार्ट स्पेशलिस्ट उस बैंक मैंनेजर के दोनों तरफ थे, पर कुछ नहीं कर पाये। तब से कपूरचन्दजी से हम पूछते थे कि कैसे हो? तो कहते थे कि अभी तो आपके सामने खड़ा हूँ, अगले क्षण की कुछ कह नहीं सकता। **जब जीवन इतना क्षण-भंगुर है तो किससे वैर, किससे विरोध, किससे ईर्ष्या और किससे द्वेष? तब व्यक्ति सोचता है कि कलह-क्लेश करके वह पायेगा क्या, सिवाय इसके कि कर्मों की पोटली को भारी बना दे।** अतः व्यक्ति समत्व का सहारा ले, सारे वैर-विरोध, गिला-शिकवा को तिलाञ्जलि दे, संवर और निर्जरा का आश्रय ले स्वयं को निर्मल तथा पवित्र बनाने में प्रयासरत रहे। इस तरह वैर-विरोध, विषय-कषाय मोह-ममत्व एवं अहंकार का मद समाप्त हो जाता है एवं आत्मा निर्मल तथा निर्वैर बन जाती है। यह स्वाध्याय से समत्व-प्राप्ति, व्यक्तित्व-विकास तथा समस्या-मुक्त होने का चौथा पायदान या सोपान है। इस क्षण-भगुंरता से व्यक्ति पाता है कि साथ सिर्फ सत्कर्म एवं दुष्कर्म का भारा ही जाता है अन्य कुछ नहीं। तभी यूथपति हाथी, खरगोश की जान बचाने तीन टाँग पर खड़ा रह मृत्यु प्राप्त कर महाराज श्रेणिक का पुत्र मेघकुमार बनता है और महावीर का शिष्य बन गति सुधारता है तथा यही क्षण-भगुंरता का अहसास प्रभु महावीर को गौतम जैसे महान् गणधर को एक नहीं छत्तीस बार यह कहने को प्रेरित करता है-"हे गौतम! समयं गोयम मा पमायए।" "हे गौतम! क्षणमात्र का भी प्रमाद मतकर।"

5. माया एवं काया दोनों नश्वर हैं-हम स्वाध्याय के सागर में गहरे में गोता लगाते हैं तो पाँचवाँ मोती जो हाथ लगता है, वह यह है कि यह काया जिसे सजाने, सँवारने, बलिष्ठ और पुष्ट रखने हेतु भक्ष्य-अभक्ष्य, पेय-अपेय का विवेक बिसराकर ज़िन्दगी खपा देते हैं तथा यह माया जिसे पाने के लिए कृत्य-अकृत्य एवं दुष्कृत्य का भेद भुला, पापों के पुञ्ज की पोट को असहनीय रूप से भारी बना देते हैं वे दोनों नश्वर हैं। **मित्रों! हम रूप, धन-सम्पत्ति और वैभव पर इतना इतराते हैं तथा अभिमान में फूले नहीं समाते हैं, वे आज तक किसी की हुई नहीं, होती नहीं और भविष्य में कभी होगी नहीं। कहा भी है कि "इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा"** एवं "सब ठाट धरा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा।"

मित्रों! एक राज-राजेश्वर को अपने साम्राज्य एवं धन सम्पत्ति का बड़ा घमण्ड था। वह किसी से सीधे मुँह बात नहीं कर पाता था। एक पहुँचे हुए ख्याति प्राप्त ऋषि जब उससे मिलने पहुँचे तो उन्हें अपने वैभव-समृद्धि से परिचित कराते वह अपने राज्य के विस्तार एवं समृद्धि के बारे में विस्तार से बताने लगा ताकि वह ऋषि यह जान सके कि वह कितना वैभवशाली राज राजेश्वर है। वह अपने वैभव को बतला ही रहा था कि ऋषि ने बीच में टोकते

हुए कहा कि राजन्! मेरी एक जिज्ञासा है, उसका समाधान दें। राजा ने कहा फरमावें तो ऋषि ने कहा ज्येष्ठ-वैशाख का महीना है। आप जैसलमेर के रेगिस्तान में काले हिरण के शिकार हेतु अपने लवाजमें के साथ पधारे हैं। हिरण का पीछा करते आप अपने साज से बिछुड़ गये हैं। बहुत जोर की प्यास लगी है। पानी आपके पास नहीं है। उन विकट रेत के टीलों में मारे प्यास के आप का कण्ठ सूख गया है और प्राण गले में आ अटके हैं कि अब निकले कि अब निकले। ऐसे में एक भेड़ पालक अपनी चमड़े की मशक से आपको एक गिलास पानी देकर आपके प्राण बचा ले उसे आप क्या ईनाम देंगे? राजा ने कहा-उसने मेरे प्राण बचाये हैं अत: मैं उसे आधा राज्य का स्वामी बना दूँगा। यह कहकर राजा पुन: अपनी प्रशस्ति में लग गया। कुछ देर सुनकर ऋषि ने पुन: जिज्ञासा की कि राजन् ऐसा कभी हो नहीं, पर आप असाध्य रोग से ग्रसित हो गये हैं, मरणासन्न हैं। प्राण अब निकले कि अब निकले। रनिवास का रुदन के मारे बुरा हाल है। सारे इलाज के प्रयास निष्फल हो गये हैं। स्वयं आप जीने की आशा छोड़ चुके हैं, तब कोई योगी आवे और कहे कि यह लो मेरी दवा की पुड़िया है, इसे लेकर आप पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे। मरता क्या न करता। आप वह पुड़िया लेकर स्वस्थ हो, उठकर बैठ जाते हैं। आप उस योगी को क्या ईनाम देंगे। अरे ऋषिवर आप भी क्या बात करते हैं। वह मुझे मौत के मुँह से बचा कर लाया है, उसे तो मैं आधे राज्य का स्वामी बना दूँगा। तब ऋषिवर ने कहा कि राजन्! जिस पूरे राज्य की कीमत एक शीतल जल का गिलास और एक दवा की पुड़िया है, उसका इतना घमण्ड क्यों, किस हेतु? जैसे आकाश से गिरकर कोई सम्भले वैसे राजा सम्भला तथा ऋषि के पैर पड़ा कि आज आपने मुझे जमीन पर ला खड़ा किया है। मैं आपका अहसान ज़िन्दगी भर नहीं भुलूँगा।

आपने विश्व विजेता सिकन्दर महान् (एलेक्जेण्डर दी ग्रेट) का नाम सुना होगा, जिसने यूनान से लेकर हिन्दुस्तान तक अपना राज्य स्थापित कर अथाह सम्पत्ति एकत्र की तथा अपने साम्राज्य का विपुल विस्तार किया। आगे बढ़ने से सैनिकों के इनकार पर वह वापस यूनान लौटते वक्त भयंकर लाइलाज बीमारी से ग्रसित हो गया। यूनान की राजधानी ऐथेंस से वह थोड़ा दूर रहा तो उसने अपने वैद्य हकीमों से कहा कि मुझे एक दिन की ज़िन्दगी दे दो। मैं अपनी माँ से मिलकर मरना चाहता हूँ। मैं इसके बदले यह सारी सम्पत्ति देने को तैयार हूँ, पर सारे वैद्य हकीम मिलकर भी उसे एक दिन की ज़िन्दगी प्रदान नहीं कर पाये। इस पर मरते वक्त उसने अपने मुख्य सैनिक कमाण्डर सेल्यूकस को बुलाकर कहा कि मुझे दफ़नाने ले जाते वक्त मेरे हाथ मेरे कॉफिन से बाहर रखे जावें। सेल्यूकस ने कहा-हमारे क्रिश्चियन रीति-रिवाज में ऐसा नहीं होता। फिर आप यह आदेश क्यों दे रहे हैं? तो सिकन्दर ने कहा मित्र! मैं दुनिया को यह बताना चाहता हूँ कि हजारों-लाखों माताओं की गोद सूनी करने वाला, हजारों-लाखों माँगों का सिन्दूर पोंछने वाला, हजारों-लाखों बहनों को राखी बाँधने में भाइयों के हाथों की कलाई से महरूम करने वाला इस अथाह सम्पत्ति का मालिक जब इस दुनिया से जा रहा है तो खाली हाथ जा रहा है। ''हजारों ऐश के सामान मुल्ले और मालिक थे। सिकन्दर जब चला दुनिया से दोनों हाथ खाली थे।''

मोहम्मद गजनवी ने सोलह बार हिन्दुस्तान को लूटा। अकूत सम्पत्ति लूटकर अपने साथ ले गया तथा जब वह सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के शब्द भेदी बाण से सिंहासन से गिरकर मरणासन्न हुआ तो कहा कि मेरी सारी सम्पत्ति लाओ, मैं साथ ले जाऊँगा। लोगों ने कहा ऐसा हुआ नहीं और होता नहीं। उसने कहा-तुम बकवास बन्द करो और मेरी सम्पत्ति का

ढेर मेरे ऊपर और मेरे चारों तरफ लगा दो। हुक्म की तामील हुई एवं वह उसी सम्पत्ति के भार से मरकर अल्लाह को प्यारा हो गया। मित्रों! कफन के जेब नहीं होती। यह काया और माया नश्वर है। पत्नी, घर की स्त्रियाँ घर की चौखट तक, प्रियजन तथा परिजन श्मशान या कब्रिस्तान तक तथा काया चिता या कब्र तक साथ देती है। आगे की यात्रा अकेले की है। धन धरती में गड़ा या लॉकर में धरा रह जाता है और काया चिता या कब्र की मेहमान बन जाती है, तब संसार असार नज़र आता है। तब लगता है कि कुछ भी अपना नहीं है, मात्र सपना है। फिर कैसा वैर-विरोध, ईष्या-द्वेष, छल-कपट। तब आत्मा स्वच्छ और निर्मल बनती है तथा समस्यामुक्त तो होती ही है, पर स्वाध्याय की इस गंगोत्री से समता की गंगा प्रवाहित होने लगती है कि ''कुछ तेरा है न मेरा है, यह दुनिया रैन बसेरा है।'' यह समत्व-प्राप्ति व्यक्तित्व-विकास एवं समस्या-मुक्ति का पाँचवाँ पायदान या सोपान है।

6. जीवन का सत्य-मौत सारे फ़र्क मिटा देती है और मौत सब कुछ पराया बना देती है- मित्रों! हम अपनी सुख-सम्पत्ति एवं वैभव का इतना घमण्ड और अभिमान करते हैं कि फूले नहीं समाते, पर जब स्वाध्याय के समुद्र में गहरे में गोता लगाते हैं तो यह छठा मोती हाथ लगता है कि ''मौत सारे फ़र्क मिटा देती है और मौत सब कुछ पराया बना देती है।'' मित्रों! जीवन का सत्य यह है कि ''जिनके महलों में जलते थे हजारों रंग के सैकड़ों झाड़ और फानूस। आज उनकी कब्र पर इसका कोई निशां बाकी नहीं।'' मित्रों! जीवन का सत्य महात्मा कबीर ने उद्घाटित किया है कि आप चाहे राजा हो या रंक, सेठ हो कि गुमास्ते, स्वामी हो कि सेवक, कृषक हो कि जमींदार, मिल मालिक हो कि मज़दूर, मरने का हश्र एक ही है जो महात्मा कबीर के शब्दों में इस प्रकार है-''चार गजा चार गजी मँगाई चढ़ा काठ की घोड़ी, चारों कोने आग लगाकर फूँक रे जस के जये होरी।'' मित्रों! घर सत-खण्डा हो या नौखण्डा, घर इम्पाला खड़ी हो या ओड़ी, बी.एम. डब्ल्यू खड़ी हो कि मर्सिडिज बैंज, घर में लुभावने महँगे स्प्रिंगदार गद्दे के पलंग हों कि सोने-चाँदी की ईंटें, अन्तिम यात्रा तो लकड़ी की सीढ़ी या लकड़ी का कॉफिन ही है। सारा धन, वैभव रईसी धरी की धरी रह जाती है, कुछ काम नहीं आती। **फिर घमण्ड और अहंकार कैसा, किसका और किसलिए।**

मित्रों! एक धनाढ्य सेठ और माँगने वाले फकीर मँगते की मृत्यु एक ही दिन हुई। दोनों की चिताएँ पास-पास सजी। जब चिताओं की राख ठण्डी हुई तो एक औलिया फकीर वहाँ आया और दोनों की चिता की राख से एक-एक मुट्ठी भरी यह जानने को कि सूँघने पर किसमें माल-मलीदे, केसर-कस्तूरी, सेंट, इत्र और फुलेल की सुगन्ध आती है किसमें से फटे और बदबूदार चिथड़ों की, मैले शरीर तथा रूखे-सूखे टुकड़ों की बदबू आती है पर मित्रों! उसे दोनों ही राख की सुगन्ध में कोई फ़र्क नज़र नहीं आया, क्योंकि **मौत सारे फर्क मिटा देती है। फिर किसका गरूर, किसका अभिमान या घमण्ड?**

मित्रों! मौत सब कुछ पराया बना देती है। महाराज जसवन्तसिंहजी मारवाड़ नरेश थे। उनके पास एक अंगरखा था, उसमें हीरे-मोती, माणक पन्ने आदि जड़े थे। जब चौदह-सोलह रुपयों में एक सोने की मोहर आती थी, तब उसकी कीमत 50-60 हजार रुपये थी। महाराज को वह अंगरखा बहुत पसन्द था। अपने मुख्य वज़ीर से उन्होंने कहा मुझे सौ वर्ष पहुँचें तब मेरी बैकुण्ठी निकलेगी (राजाओं की मृत्यु पर शव को बैकुण्ठी में ले जाया जाता है) तब मुझे यह अंगरखा पहनाकर मेरी बैकुण्ठी निकालें। मुख्य वज़ीर ने कहा-''हुजूर अन्नदाता की

आज्ञा का शब्दश: पालन होगा बाकी तो बड़े महाराज कुमार की आज्ञा पर निर्भर करेगा। महाराज ने इस कथन की सच्चाई जाँचने को अपना श्वास कपाल में चढ़ा दिया (जिस कला में वह पारङ्गत थे) एवं शरीर को निढाल बना दिया। उन्हें मृत मान बैकुण्ठी की तैयारी होने लगी। मुख्य वज़ीर ने बड़े महाराज कुमार को महाराज की आज्ञा से अवगत कराया। महाराज कुमार जो अगले महाराज बनने थे, ने कहा-''वज़ीर साहब! आप कैसी मूर्खता की बात करते हैं? ऐसी कीमती ड्रेस कोई अग्नि में जलने के लिए है? इसे तो मैं स्वयं पहनूँगा। अब इन फालतू बातों को छोड़ो। महाराज क्या वापस देखने आयेंगे कि उनकी बैकुण्ठी में उन्हें क्या पहनाकर शव यात्रा निकाली गई थी। महाराज यह सब सुन रहे थे। थोड़ी देर में श्वास वापस मोड़कर खड़े हुए और यह श्लोक उसी वक्त गढ़कर बोला क्योंकि वे आशुकवि थे-''खाया पिया खरचिया दीना सोही दत्त। जसवन्त घर पोढावतां माल पराये हत्थ।'' जो खाया है, पिया है, खर्चा है एवं दान दिया है, वही आपका है। मरते ही माल पराया है।

इन्दौर के सेठ सर हुक्मीचन्द खानदेश मिल और इन्दौर के शीश महल एवं अकूत सम्पत्ति के मालिक थे। उनके मित्र ने पूछा-आपकी सम्पत्ति कितनी है तो कहा-साढ़े सत्ताईस लाख। मित्र ने कहा-क्यों मूर्ख बनाते हो? सुबह-सुबह मैं ही मिला क्या? आपकी खानदेश मिल ही करोड़-दो करोड़ की है। एक करोड़ का शीश महल है और शेष अकूत सम्पत्ति है, वह अलग। अत: किसे मूर्ख बना रहे हो? सेठ हुक्मीचन्द ने कहा कि-मित्र! मैं सच कह रहा हूँ। यह साढ़े सत्ताईस लाख मैंने दान दिये हैं जिसके साथ मेरा नाम जुड़ा है। शेष सम्पत्ति मरने पर किसकी होगी किसे पता?

मित्रों! जब यह अहसास होता है कि मौत सारे फर्क मिटा देती है एवं सब कुछ पराया बना देती है, उस उक्त स्वाध्याय में से समता का छठा स्रोत फूटता है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्मल तथा पवित्र बना देता है एवं वह समस्त समस्याओं से मुक्त बना देता है।

(7) सरलता निर्मलता तथा शुचिता ही जीवन का सार है, शेष असार है।

मित्रों! स्वाध्याय के सागर में गहरे उतरने पर जो सातवाँ मोती हाथ लगता है, वह यह है कि जीवन का सार निर्मलता, सरलता और शुचिता है। शेष तो मायाचार या कदाचार है। संत तिरूवल्लुवर कहते हैं कि ''निर्मलता ही चित्त कहलाती है धर्म, आडम्बर है शेष सब मात्र दिखावा कर्म।'' श्रीमद् राजचन्द्र कहते हैं कि ''जहाँ सर्वोत्कृष्ट शुद्धि वहाँ सर्वोत्कृष्ट सिद्धि। जितनी शुद्धि उतनी सिद्धि।'' प्रभु महावीर फरमाते हैं कि, ''**धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ**'' यानी शुद्ध हृदय में ही धर्म का निवास होता है। मित्रों! सरलता, निर्मलता तथा शुचिता व्यक्तित्व-विकास और समस्यामुक्ति की कुञ्जी तो है ही, यह समत्व की साधना का भी सुदृढ़ आधार है। जो सरल, निर्मल और शुद्ध हो उससे आगे आप किस व्यक्तित्व-विकास की कल्पना कर पायेंगे? ऐसा व्यक्ति यदि समता साधक और समस्यामुक्त नहीं होगा तो और कौन होगा? उसे आप दो उदाहरणों से समझें। मासतुष मुनि की ज्ञानान्तराय इतनी प्रबल थी कि वे एक गाथा भी वर्षों में याद नहीं कर पाते थे, पर थे बड़े सरल तथा विनीत। गुरु ने उन्हें मात्र दो शब्द याद करने को दिये। ''मा रुष मा तुष'' यानी न किसी पर रूष्ट हो न ही तुष्ट हो यानी सम रह। वह उसे भी याद नहीं रख पाये और याद रह गया मास-तुस मास यानी उड़द तथा तुस यानी छिलका। छिलका काला है, उसके उतरने पर भीतर जो प्राप्त होता है वह श्वेत है। बस इसी भाव में ऊँचे चढ़ वे सारे कर्म खपा कर केवली बन मोक्ष पधार गये, मात्र अपनी सरलता निर्मलता के बल पर। इसी तरह

कूरगडु के भोगान्तराय प्रबल थी। वे भूखे नहीं रह सकते थे। सम्वत्सरी को भी गोचरी की आज्ञा लेने गुरु के समक्ष गये तो गुरु ने बहुत फटकारा। कहा- आज तो पाँच वर्ष का बालक भी उपवास करता है। तुझे साधु होकर शर्म नहीं आती कि आज गोचरी कर रहा है। क्या मिलेगा? रूखे-सूखे खाखरे। क्योंकि जैनों के यहाँ भोजन तो आज बना नहीं होगा। कहा, गुरुदेव! क्या करूँ? मज़बूर हूँ, भूखा ही नहीं रह सकता। गुरु आज्ञा से गोचरी गये। भिक्षा में वही रूखे-सूखे खाखरे मिले। गुरु को गोचरी दिखाई तो रूखे-सूखे फाफड़े देख गुरु ने उन्हें धिक्कारते हुए क्रोध-वश उसमें थूँक दिया। पात्र खोल विचार करने लगे कि मैं कितना अभागी हूँ कि भूखा नहीं रह सकता। रूखे-सूखे खाखरे मिले तो गुरु ने कृपावश थूँक कर उसमें घी डाल दिया। यही निर्मल सरल-विचारधारा आगे बढ़ी तो सारे कर्म-बन्धन तोड़ कैवल्य प्रदान कर गई। हृदय शुद्ध था। अत: सरलता, निर्मलता एवं शुचिता ने मासतुष मुनि को मोक्ष एवं कूरगडु मुनि को केवलज्ञान प्रदान कर दिया। न गहरा ज्ञान, न अप्रतिम साधना, पर सरलता निर्मलता एवं शुचिता का प्रभाव अचिन्त्य है जो व्यक्तित्व-विकास की पराकाष्ठा प्रदान कर देती है, जीवन को समस्यामुक्त बना समता का निर्झर बहा देती है।

समत्व का प्रभाव-मित्रों! जिनके जीवन में समता उतरी है, उनके व्यक्तित्व के कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। प्रभु महावीर के कानों में कीले ठोके गये, पैरों में खीर रान्धी गई, चण्डकौशिक ने दो बार काटा, लाट देश में इतने उपसर्ग मिले, पर समता का वह सुमेरु अडिग रहा। महात्मा बुद्ध से खार खाए एक ब्राह्मण ने जब वे भिक्षार्थ गये तो उन पर गालियों की बौछार कर दी। वह चुप हुआ तो महात्मा बुद्ध ने पूछा, ब्राह्मण देवता! आप भिक्षा दें और मैं लूँ नहीं तो वह किसके पास रहेगी। ब्राह्मण झल्लाया और क्रोधित तो था ही बोला अरे मूर्ख! बुद्ध बना फिरता है, तुझे इतना भी होश और ज्ञान नहीं है कि मैं दूँ और तूँ न ले तो वह वस्तु तो मेरे पास ही रहेगी। तब महात्मा बुद्ध ने मुस्कुराकर कहा कि ब्राह्मण देवता! आपने जो गालियाँ दी मैंने नहीं ली। अत: आपकी गालियाँ आपके पास ही रहीं। कहा है, ''गाली आवत एक है, जावत होत अनेक। जो मन में समता धरो, रहे एक की एक।''

आचार्यश्री हस्ती का एक श्रावक व्याख्यान के पूर्व आकर उन्हें वन्दन नमस्कार कर अपनी साधना में रत हो जाता था। रोज व्याख्यान भी सुनता था। एक दिन व्याख्यान के बाद पहुँचा तो आचार्यप्रवर ने पूछा श्रावकजी! आज देर कैसे हो गयी? श्रावक ने कहा-''अन्नदाता एक मेहमान घर आया था। उसे जाने की जल्दी थी। अत: उसे पहुँचा कर सीधा आपकी सेवा में आया हूँ।''

लोगों ने कहा-''भगवन्! आज सुबह इनका जवान पुत्र स्वर्गवासी हो गया है। उसका श्मशान का क्रिया-कर्म निपटाकर एवं स्नान आदि से निवृत्त होकर ये सीधे आपकी सेवा में आये हैं।''

मित्रों! जीवन का सत्य यही है कि कोई किसी का नहीं है। सब अपने-अपने कर्मों के अनुसार जन्म लेकर अपना जीवन समाप्त होने पर अपने कर्मानुसार सुकृत-दुष्कृत का भारा ले आगामी यात्रा पर निकल पड़ते हैं। अत: स्वाध्याय से प्राप्त समता का नवनीत प्राप्त कर हम अपने जीवन में कर्मों का भार हल्का करें। संवर-निर्जरा की साधना कर अपनी गति सुधारें। यही जीवन का सार भी है और लक्ष्य भी है। आपकी जीवन यात्रा स्वाध्याय एवं सामायिक (समता) के आलोक में शुद्ध, निर्मल, पावन और पवित्र बनें, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

-सिरेह सदन, 20/33, रेनु पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 42
ISSN 2249-2011

आचार्य हस्ती दीक्षाशती

आचार्य हस्ती का प्रार्थना-चिन्तन*

डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह 'गौतम'

आध्यात्मिक साधना-पद्धति के अनेक अङ्गों में से एक अङ्ग है प्रार्थना। आचार्यप्रवर हस्तीमलजी म.सा. ने साधना-पद्धति के इस अङ्ग का विशद और गम्भीर विवेचन किया है, जिसमें उनकी तलस्पर्शी चिन्तन-दृष्टि स्पष्ट दिखाई पड़ती है। उनका अध्ययन क्षेत्र विस्तृत था। प्रार्थना-सम्बन्धी उनके विवेचन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने जैन वाङ्मय का तो गहराई से अध्ययन किया ही था, अन्य धर्म-परम्पराओं को भी समझा था। उन्होंने विभिन्न धार्मिक-दार्शनिक ग्रन्थों का आलोड़न किया था। वे कहते हैं-''जिसने आत्मा के विशुद्ध स्वरूप को किसी भी उपाय से हृदयङ्गम कर लिया है,..... उस मुमुक्षु के अन्त:करण में अपने असली शुद्ध स्वरूप की उपलब्धि की अभिलाषा उत्पन्न होना स्वाभाविक है। आत्मोपलब्धि की तीव्र अभिलाषा आत्मशोधन के लिए प्रेरणा जागृत करती है।''

प्रश्न उठता है कि आत्मशोधन कैसे? इस सम्बन्ध में अलग-अलग धर्म-मतों के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण हैं। कोई ज्ञान को आत्मशोधन का मार्ग मानता है तो कोई कर्मयोग को अनिवार्य मानता है। किसी ने इस हेतु भक्ति के सरल मार्ग को उपयुक्त माना है। पर, जैनधर्म 'ज्ञान और क्रिया के समन्वय द्वारा आत्मशुद्धि का होना प्रतिपादित करता है।'

प्रभु की प्रार्थना भी आत्मशुद्धि की पद्धति का एक अङ्ग है। चूँकि सभी साधक एक जैसी योग्यता वाले नहीं होते, इसलिए साधना-पद्धति के विभिन्न अङ्गों में से कोई अङ्ग किसी के लिए तथा कोई किसी के लिए विशेष उपकारक हो सकता है। पर, ''प्रभु की प्रार्थना साधना का एक ऐसा अङ्ग है जो किसी भी साधक के लिए कष्ट सेव्य नहीं है। प्रत्येक साधक जिसके हृदय में परमात्मा के प्रति गहरा अनुराग हो, प्रार्थना कर सकता है।''

आचार्य श्री हस्ती प्रार्थना का प्राण भक्ति को मानते हैं। उनके अनुसार-''जब साधक के अन्त:करण में भक्ति का तीव्र उद्रेक होता है तब अनायास ही जिह्वा प्रार्थना की भाषा का उच्चारण करने लगती है।'' प्रार्थना शब्द का प्रयोग सामान्य सांसारिक जीवन व्यवहार में भी होता है और पारमार्थिक सन्दर्भ में भी। एक को हम भौतिक या लौकिक प्रार्थना कह सकते हैं और दूसरी को आध्यात्मिक या लोकोत्तर प्रार्थना। आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के विचार का केन्द्र तो है पारमार्थिक प्रार्थना, पर इसे स्पष्ट करने के लिए आवश्यक था कि लोक-व्यवहार सम्बन्धी प्रार्थना को भी स्पष्ट किया जाय और उन्होंने यही किया भी है। दोनों में प्रार्थ्य की दृष्टि से भी अन्तर है और प्रार्थना के प्रयोजन की दृष्टि से भी। सामान्य जगत् में हम देखते हैं कि पद, अधिकार या हैसियत आदि में जो अपने से बड़ा है वह प्रार्थ्य होता है, लेकिन ये प्रार्थ्य भी कल को अपने से बड़ों की प्रार्थना करते नज़र आते हैं। यानी जो एक समय प्रार्थ्य है वही दूसरे समय प्रार्थी हो जाता है। जबकि पारमार्थिक क्षेत्र में ऐसी स्थिति नहीं। वहाँ ''प्रार्थ्य कृत-कृत्य होता है। उसने जीवन की वह चरम और परम सिद्धि प्राप्त कर ली है जिसके पश्चात् कुछ भी प्रार्थ्य नहीं रह जाता.... वह प्रार्थ्य राग और द्वेष से परे और पूर्ण निष्काम होता है।'' इसी प्रकार दोनों प्रार्थनाओं में उद्देश्यगत भिन्नता

* पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में पाली में आयोजित 'आचार्यश्री हस्ती का साहित्य एवं समाज को योगदान' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में 13 नवम्बर, 2010 को प्रस्तुत आलेख।

भी है। भौतिक प्रार्थना सांसारिक सुख के साधनों-भोगोपभोगों से सम्बन्ध रखती है। जबकि आध्यात्मिक प्रार्थना का लक्ष्य होता है आध्यात्मिक गुणों का विकास, आत्मिक सुख की प्राप्ति।

जैन वाङ्मय में प्रार्थना के अनेक रूप वर्णित हुए हैं। उनका अनुशीलन कर आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने उन विभिन्न रूपों को तीन वर्गों में रखा है- 1. स्तुतिप्रधान प्रार्थना 2. भावनाप्रधान प्रार्थना, 3. याचनाप्रधान प्रार्थना। प्रार्थ्य के गुणों का उत्कीर्त्तन स्तुतिप्रधान प्रार्थना है। निष्काम अभिव्यक्ति से सम्बद्ध इस प्रार्थना द्वारा प्रार्थ्य और प्रार्थी के बीच का पर्दा हट जाता है। स्तुतिप्रधान प्रार्थना का विश्लेषण करते हुए उन्होंने उसे दो भागों में बाँटा है- 1. बाह्य विभूति की स्तुति, 2. आन्तरिक विभूति की स्तुति। इन दोनों को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं- ''अरिहन्त भगवान में दो प्रकार की विशिष्टताएँ पाई जाती हैं-प्रकृष्ट एवं असाधारण पुण्य के उदय से उत्पन्न होने वाली बाह्य अर्थात् आत्मभिन्न विशेषताएँ और आवरणक्षय से जनित आत्मिक विशेषताएँ। इनमें से पुण्यजनित विशेषताएँ बाह्य वैभव हैं और आवरणक्षय-जनित विशेषताएँ आत्मस्वरूप होने से आन्तरिक वैभव कहलाती हैं।''

बाह्य वैभव की स्तुति सर्वसाधारण से सम्बन्धित है। वीतरागता के उपासक ज्ञानी जन इस प्रकार की स्तुति से परे होते हैं। जो लोग संसार के अन्य देवी-देवताओं के बाहरी, चामत्कारिक एवं अतिशयोक्तिपूर्ण वैभव वर्णन को सुनकर उनकी ओर आकृष्ट हो जाते हैं, उन सामान्य जनों की चित्तवृत्ति को आकर्षित करने के लिए इस प्रकार की स्तुति की जाती है, जिसे पढ़-सुनकर साधक यह समझ जाता है कि हमारे उपास्य परमात्मा में बाह्य वैभव का अभाव नहीं है। धीरे-धीरे साधक के मन में भगवान की वीतरागता एवं नि:स्पृहता के प्रति आस्था बढ़ती जाती है और वह उनके आन्तरिक वैभव के विचार के लिए प्रेरित होता है। आन्तरिक वैभव और उससे सम्बन्धित स्तुति को स्पष्ट करते हुए आचार्यप्रवर कहते हैं-''जैनदर्शन की यह मूलभूत मान्यता है कि प्रत्येक आत्मा स्वभाव से समान है चाहे सिद्ध परमात्मा हो या संसार में परिभ्रमण करने वाला साधारण जीव, दोनों में समान गुण-धर्म विद्यमान हैं। अन्तर है केवल विकास के तारतम्य का। आत्मा के आन्तरिक वैभव की इस समानता को समझने वाला साधक जब भगवान के आन्तरिक वैभव की स्तुति करता है तो अनायास ही उसके चित्त में यह भावना उत्पन्न हो जाती है कि आत्मा में भी उसी वैभव का विकास हो जिसके कारण भगवान को परमात्मा की प्राप्ति हुई है।''

बाह्य वैभव को भी उन्होंने दो वर्गों में बाँटा है-1. शारीरिक वैभव, 2. अष्ट महाप्रतिहार्य आदि शरीर व्यतिरिक्त वैभव। इन दोनों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने स्तुति साहित्य से जो उदाहरण दिए हैं उनके आधार पर कह सकते हैं कि शारीरिक वैभव बाह्य शरीर के सौन्दर्य, गुणों आदि की स्तुति से सम्बन्धित हैं और शरीर व्यतिरिक्त वैभव की स्तुति में व्यक्तित्व के प्रभाव की मुख्यता रहती है।

भावनाप्रधान प्रार्थना को उन्होंने इन शब्दों में स्पष्ट किया है-''इस श्रेणी की प्रार्थना में भी स्तुति का अंश पाया जा सकता है, तथापि उसका प्रधान स्वर आन्तरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति करना होता है। इस प्रार्थना में साधक या प्रार्थी अपने मन को सबल बनाने के लिए शुभ संकल्प करता है।''

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है तीसरे प्रकार की प्रार्थना अर्थात् याचना प्रधान प्रार्थना में याचना की मुख्यता रहती है। हालाँकि स्तुति और भावना भी विद्यमान रह सकती है। आध्यात्मिक वैभव की याचना और भौतिक वस्तुओं की याचना के भेद से याचनाप्रधान प्रार्थना के दो विभाग किए जा सकते हैं।

इन तीन तरह की प्रार्थनाओं में 'स्तुतिप्रधान

प्रार्थना उत्तम है और उसमें भी आत्मिक वैभव की स्तुति से सम्बन्धित प्रार्थना सर्वोत्तम है।' ''प्रार्थी को, प्रार्थना के रहस्य को और प्रार्थनाओं के क्रम एवं तारतम्य को भलीभाँति समझकर स्तुतिप्रधान प्रार्थना से भावनाप्रधान प्रार्थना में आना चाहिए।'' याचनाप्रधान प्रार्थना के सम्बन्ध में आचार्यश्री कहते हैं कि ''अगर याचनाप्रधान स्तुति की जाए तो भौतिक एवं सांसारिक पदार्थों की याचना न करते हुए आत्मिक वैभव की ही याचना करनी चाहिए।''

जैन परम्परा में देव को वीतराग मानते हैं। वह न रुष्ट होता है न तुष्ट। वह न तो उपकार करता है न अपकार। कुछ लेता-देता नहीं है। वह कर्त्ता-हर्त्ता-धर्त्ता भी नहीं है। ऐसी स्थिति में जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में प्रार्थना का क्या लाभ? वह क्यों की जाय? फिर भी जैनधर्म में प्रार्थना की परम्परा है। अगर कोई यह कहे कि यह वैदिक परम्परा का प्रभाव है तो आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. इसे नहीं मानते। क्योंकि पश्चाद्वर्ती साहित्य में ही वीतराग की प्रार्थना नहीं मिलती, प्राचीन साहित्य में यहाँ तक कि आगमों और अङ्ग साहित्य में भी यह परम्परा विद्यमान है।

प्रार्थना क्यों? इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का गम्भीर समाधान आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने प्रस्तुत किया है। जैन मतानुसार परमात्मा के दो रूप हैं- सिद्ध और अरिहन्त। सिद्ध परमात्मा अशरीरी हैं और अरिहन्त शरीरधारी। शरीरधारी अरिहन्त परमात्मा गिरती हुई आत्मा को स्थिर करने में एवं ऊँचा उठाने में योग प्रदान करते हैं। आचार्यश्री ने सुबाहुकुमार तथा मेघ मुनि के वृत्तान्त उदाहरणस्वरूप देकर यह सिद्ध किया है कि ''वीतराग होने पर भी भगवान एकान्त अकर्त्ता नहीं है। एकान्त अकर्त्ता होते तो तीर्थंकर अर्थात् तीर्थ के कर्त्ता कैसे कहलाते? शरीरधारी अरिहन्त देव कुछ करते भी हैं, मगर करते हुए भी उनकी वीतरागता अखण्डित रहती है।''

इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं ''अरिहन्त देव भव्य आत्माओं को तारते हैं, ज्ञान देते हैं, मिथ्यात्व की ओर से हटाकर सम्यक्त्व की ओर लाते हैं, अव्रती को व्रती बनाते हैं और चतुर्विध तीर्थ की स्थापना करके मोक्षमार्ग की परम्परा को चालू रखने का प्रयत्न करते हैं। इस अपेक्षा से उनमें कर्तृत्व भी है।'' अतः देवाधिदेव तीर्थंकर भगवन्तों की प्रार्थना निरर्थक नहीं है।

यहाँ यह नहीं समझना चाहिए कि केवल अरिहन्त देव ही प्रार्थ्य हैं, सिद्ध नहीं। वायु और सूर्य की इच्छा-अनिच्छा के बिना भी नीरोगता की प्राप्ति में उनके महत्त्व को रेखांकित करते हुए आचार्यश्री ने सिद्ध किया है कि सिद्ध परमात्मा के अकर्तृत्व के बावजूद उनके ध्यान से, चिन्तन से आत्मा को पोषण मिलता है, आत्मा स्वस्थ बनती है। इस प्रकार अरिहन्त भगवान के समान सिद्ध भगवान भी प्रार्थनीय हैं। आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के अनुसार- ''अरिहन्त भगवान सशरीर होने से हमारे कल्याण में निमित्त बनते हैं। सिद्ध भगवान मन, वचन और काया से अतीत होने के कारण यद्यपि अरिहन्त के समान निमित्त नहीं बनते, तथापि वे आध्यात्मिक विकास के चरम और परम आदर्श हैं। उनका परिपूर्ण विशुद्ध स्वरूप आदर्श बनकर ही साधक को प्रेरणा प्रदान करता है। अतएव उन्हें भी हम व्यवहार में प्रार्थ्य बनाते हैं।''

परमात्मा की वीतरागता के बावजूद ''जो भक्त शान्त चित्त से वीतराग की प्रार्थना करते हैं, स्मरण करते हैं उन्हें जीवन में अपूर्व लाभ की प्राप्ति होती है'' उसी प्रकार, जिस प्रकार सूर्य या वायु में तुष्ट होकर किसी को लाभ पहुँचाने की और रुष्ट होकर लाभ न पहुँचाने की वृत्ति नहीं है, फिर भी सूर्य और वायु नैसर्गिक रूप से अपने गुणों को प्रकट करते रहते हैं और सूर्य की किरणों से तथा वायु के सेवन से हम स्वास्थ्य आदि का लाभ उठाते रहते हैं।

भजन प्रार्थना का ही एक रूप है। लेकिन तोते की तरह पद रटना या शब्द बोलना भजन नहीं कहा जा सकता। आचार्यश्री हस्ती वास्तविक भजन उसे मानते हैं जिसमें मन, वचन और काया का योग होता है। साधक जो बोल रहा है उसे स्वयं भी सुनना चाहिए। यह नहीं कि दूसरे तो सुनें, पर आप ही न सुनें। कहने का तात्पर्य यह कि भजन में चित्तवृत्ति की एकाग्रता अर्थात् तन्मयता होनी चाहिए। वही सच्चा भजन है और ऐसा साधक ही सच्चा भजनीक। वस्तुत: अन्त:करण से उद्भूत प्रार्थना ही प्रभावी होती है।

व्यवहार में दिखाई पड़ने वाले प्रार्थना के रूपों पर विचार करते हुए आचार्यश्री ने उन्हें भेद-प्रभेदों सहित स्पष्ट किया है। पहले मानसिक प्रार्थना और वाचिक प्रार्थना ये भेद करते हुए उन्होंने मौन प्रार्थना को मानसिक प्रार्थना के अन्तर्गत रखा है और सस्वर उच्चरित प्रार्थना को वाचिक प्रार्थना की संज्ञा दी है। इसी प्रकार प्रार्थना के वैयक्तिक और सामूहिक ये भेद भी किए हैं। एक व्यक्ति का एकान्त में बैठकर प्रभु की स्तुति करना वैयक्तिक प्रार्थना कही जायेगी। समूह द्वारा एक साथ की जाने वाली प्रार्थना को सामूहिक प्रार्थना कह सकते हैं। सामान्यत: सामूहिक प्रार्थना कहने से हमारा ध्यान वाचिक प्रार्थना पर जाता है। यानी सामूहिक प्रार्थना का सम्बन्ध वाचिक से जुड़ता है। पर यह हर समय सही नहीं है। ''सामूहिक प्रार्थना में कभी-कभी बिना बोले ध्यान किया जाता है। जैसे लोगस्स का ध्यान।''

इस प्रकार प्रार्थना के अनेक रूप हैं। प्रार्थी किसी भी रूप को अङ्गीकार कर सकता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसके शब्द हृदय को स्पर्श किए बिना न निकलें। अर्थात् प्रार्थना अन्त:करण से उद्भूत हो।

सामान्यत: प्रार्थना का सम्बन्ध परमात्मा से है। गुरु भी प्रार्थनीय हैं। प्रार्थनियों के सम्बन्ध में गहराई से विचार करते हुए आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. आत्मदेव को भी प्रार्थनीय मानते हैं। यही नहीं, उन्होंने गुणों को भी प्रार्थनीय माना है। क्योंकि गुण भी देव-देवी रूप माने गए हैं। प्रश्नव्याकरणसूत्र से उदाहरण देकर उन्होंने सिद्ध किया है कि अहिंसा, सत्य आदि गुणों को परमात्म रूप माना गया है। चूँकि ज्ञानादि पूर्ण विशुद्ध गुणों का समूह ही परमात्मा है, इसलिए गुण भी प्रार्थनीय होते हैं।

प्रार्थना की प्रभावी सिद्धि अथवा अनुकूल परिणाम प्राप्ति हेतु प्रार्थी में भी कुछ विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक है। जैन वाङ्मय में ही नहीं वैदिक परम्परा के शास्त्रों में भी इस पक्ष पर पर्याप्त विचार हुआ है। आचार्यश्री हस्ती ने श्रीमद्भगवद्गीता की एक पंक्ति का उल्लेख करते हुए कहा है कि सर्वप्रथम साधक का अन्त:करण शान्त और स्वच्छ होना चाहिए और चित्त की शान्ति एवं स्वच्छता के लिए जितेन्द्रियता अनिवार्य रूप से अपेक्षित है। उनके अनुसार ''इन तीन गुणों से सम्पन्न साधक जब प्रार्थना के मञ्च पर आसीन होता है तब आत्मा की समस्त दैवीय शक्तियों को जगाना आसान हो जाता है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्यश्री हस्ती के प्रार्थना सम्बन्धी चिन्तन में एक ओर गहराई है तो दूसरी ओर वह व्यापकता लिए हुए है। अन्त:करण से सम्बद्ध साधना के इस अङ्ग का ठीक-ठीक विवेचन बिना गहराई में प्रविष्ट किए सम्भव नहीं हो सकता था। उन्होंने अपने व्यापक अध्ययन से पूर्व आचार्यों-चिन्तकों के विचारों से भी लाभ उठाया है। उनके चिन्तन का धरातल काफी व्यापक है। प्रार्थना से सम्बन्धित प्राय: सभी पक्षों पर उन्होंने विचार किया है। आचार्यश्री ने शास्त्रों, काव्यों तथा कथाप्रसङ्गों के उद्धरणों द्वारा जहाँ अपने कथन को सम्पुष्ट किया है वहीं विषय को सहज बोधगम्यता भी प्रदान की है।

-पूर्व प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 46
ISSN 2249-2011

आचार्य हस्ती दीक्षाशती

कतिपय विस्मयकारी संस्मरण

श्रीमती सुशीला बोहरा

अवसर्पिणीकाल के मनीषी रत्नसंघ के गौरव महामहिम आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. यद्यपि महाप्रयाण कर चुके, लेकिन उनकी यादें यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरी हुई हैं। वे अधिकांशत: आत्मज्ञान, आत्मध्यान, आत्मसमाधि में निमग्न रहते अथवा चिन्तन, मनन, ध्यान, स्वाध्याय, लेखन या माला आदि में ही लगे रहते थे। संथारे के समय में भी उनकी माला बराबर चलती रही। सम्प्रदाय विशेष के होने के कारण उन्हें चतुर्विध संघ का सञ्चालन अवश्य करना पड़ता था, लेकिन उनकी दृष्टि सदा आत्मा पर ही रही। श्रावक-श्राविकाओं से भी वे हमेशा यही अपेक्षा रखते थे कि वे माला, सामायिक और स्वाध्याय को दैनिक जीवन की क्रियाओं का अङ्ग बनायें। फिर भी यदा-कदा ऐसे कई प्रसङ्ग आये कि यत्र-तत्र विस्मयकारी घटनायें सुनने और देखने को मिलती हैं।

बात कुछ पुरानी है। मोहनलालजी गोगेवालों की सुपुत्री श्रीमती शान्तिजी धर्मपत्नी श्री अनिलचन्दजी भण्डारी को कई बार बेहोशी आ जाती थी जो तीन-चार घण्टे लगातार रहती। एक बार वे अपने ससुरजी और काकी ससुर के साथ कार में पीपाड़ में दर्शनार्थ गये। सांयकाल ससुरजी आचार्यप्रवर के पास जाने वाले थे, लेकिन वे जा नहीं सके। दूसरे दिन सवेरे आचार्यश्री के दर्शनार्थ गये तब आचार्य भगवन्त ने पूछ लिया- श्रावकजी रात को दया नहीं पाली यानी स्थानक आये नहीं। ससुरजी ने विनम्र पूर्वक अर्ज किया-भगवन्! पुत्रवधू को कई बार फिट्स आ जाते हैं कल सांय भी फिट्स आ गया तथा दो-तीन घण्टे बेहोश रही। इसलिए सेवा में उपस्थित नहीं हो सका। गुरुदेव अशुभ कर्म का उदय है, इसलिए पीपाड़ भी संघ सेवा में पहले पहुँच नहीं सका। पुत्रवधू निकट ही खड़ी थी। आचार्य भगवन्त ने मांगलिक पाठ फरमाया। वह दिन गया आज तक उन्हें कभी फिट्स नहीं आया।

गुरुदेव के परम भक्त विलमचन्दजी भण्डारी की सुपुत्री उच्छब भण्डारी जो सेन्ट पैट्रिक्स विद्यालय में प्राध्यापिका थी। उनके गले में थॉयराइड के कारण बाल के आकार की एक गाँठ हो गयी थी। बहुत इलाज कराने पर भी गला ठीक नहीं हुआ। तो मुम्बई के सबसे अच्छे अस्पताल जसलोक में डॉ. डी.जी. ओझा ने सारे परीक्षण, एक्सरे आदि कर यह निष्कर्ष निकाला कि तत्काल इसका ऑपरेशन करवाना उचित रहेगा। मन में गुरुदेव के प्रति असीम श्रद्धा थी। गुरुदेव उस समय जयपुर विराज रहे थे। डॉक्टर से अनुमति लेकर वे ऑपरेशन से पूर्व गुरुदेव से मांगलिक लेने आयी थी। गुरुदेव के उस समय आँखों का ऑपरेशन हुआ था। दर्शन होने की सम्भावना कम थी, लेकिन दरवाज़े के बाहर खड़ी रही। गुरुदेव की नज़र उन पर पड़ी तो इशारे से अन्दर बुलवाया।

आचार्य भगवन्त की वन्दना करते समय उनकी आँखों से आँसू आ गये तथा भर्रायी हुई आवाज़ में मांगलिक देने की अनुनय-विनय की। गुरुदेव ने पूछा- बहन इतनी विकल क्यों हो रही है? विनम्र भाव से उत्तर देते हुई बोली-''मेरे दो-तीन दिन में गले का बड़ा ऑपरेशन होने वाला है।'' डॉ. एस.आर.मेहता ने सारी जाँच कर ली है, बीमारी ठीक नहीं हुई तो मेरी सेवा कौन करेगा? यह कहकर बहन फफक पड़ी। सान्त्वना देते हुए गुरुदेव ने फरमाया-कर्मों की गति बड़ी विचित्र है। कर्म के बँध हैं भोगना पड़ेगा, कर्ज़ा है उसे चुकाना पड़ेगा।

फिर गुरुदेव ने उन्हें नवकार मन्त्र की माला निरन्तर फेरते रहने का फरमाकर मांगलिक प्रदान किया और वे मुम्बई चली गई। दूसरे दिन प्रात: उठकर देखा

गाँठ गायब हो चुकी थी। वे तुरन्त डॉक्टर के पास गयी। डॉक्टर बोला–शायद गाँठ पेट में उतर गयी हो। फिर सारे परीक्षण हुये। लेकिन गाँठ हमेशा के लिये मिट चुकी थी। डॉक्टर अचम्भित था एवं बोला–

''बहिन मुम्बई से जाने के बाद 5 दिन तक किनसे इलाज करवाया जिससे आपकी गाँठ बिखर गयी है।''

''मैंने किसी से इलाज नहीं करवाया'' उच्छब कँवर बोली।

ऐसा हो नहीं सकता 5 दिन पूर्व की जाँच रिपोर्ट में बॉल आकार की गाँठ थी और आज उसका नामोनिशान भी नहीं। कहीं रोगी बदल तो नहीं गया? फिर बोला–फिर भी बहिन आपने कुछ तो किया होगा।

नहीं डॉक्टर साहब! मैंने कोई दवाई नहीं खायी, यह तो मेरे गुरुदेव की कृपा का फल है। एक मंगल पाठ के प्रभाव से यह सारा चमत्कार हुआ।

आत्मिक शक्ति के सामने उनका विज्ञान फेल हो चुका था। मन ही मन डॉक्टर उनके प्रति नत मस्तक हो गया और धीरे से बोला–राजस्थान आने पर उनके दर्शन अवश्य करूँगा।

अब मैं अपनी आप बीती सुना रही हूँ। बात अक्टूबर 1989 की है। हम लोग गौहाटी (आसाम) गये थे। वहाँ से मारुति कार में शिलांग, चेरापूँजी आदि भ्रमणार्थ गये। रात्रि में करीब 9.00 बजे भंयकर जंगल के बीच हमारी कार एकाएक झटके से बन्द हो गयी। उसकी सारी बत्तियाँ एक साथ बुझ गयी। चारों ओर घोर अन्धियारा, हाथ से हाथ नहीं दिखाई दे रहा था। केवल ट्रकों के आवागमन से अवश्य प्रकाश की कोई किरण दिख जाती थी। साँय–साँय हवा चल रही थी, रास्ते में किसी व्यक्ति की शक्ल तो क्या पदचाप की भी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। हमारी कार चलाने वाले को मारुति की मशीनरी की बिल्कुल जानकारी नहीं थी और न हमारे पास टॉर्च थी। हम सब घबराकर नीचे उतर गये। हमने बहुत प्रयास किया कि कोई ट्रक ड्राइवर हमारी सहायता करे। लेकिन किसी को फुर्सत नहीं और न ही मारुतिकार की मशीनरी में सिद्ध हस्त थे।

कार ड्राइव करने वाले पुत्रवधू के भाई थे। उन्होंने कहा–अब तो सब अपने–अपने इष्ट को याद करो। वे ही बचा सकते हैं अन्यथा यह रात्रि काल रात्रि है।

मैंने मन ही मन गुरुदेव का स्मरण किया। इसी बीच एक ट्रक निकला। उसका ड्राइवर राजस्थानी था, वह रुका उसने हमें अपनी टॉर्च दे दी। फिर बोला–अच्छा आपकी गाडी मेरी ट्रक के पीछे टोचिंग कर (बाँधकर) दो, हालाँकि इसमें रिस्क है। घुमावदार पहाड़ियों का रास्ता है। थोड़ी–सी गड़बड़ हो गयी तो आपकी गाड़ी खड्डे में गिर जायेगी और उसके खिंचाव से मेरी ट्रक भी। लेकिन घने जंगल में आप लोगों को अकेले नहीं छोड़ा जा सकता। अतएव आप गाड़ी में बैठिये। ज्योंही कार में बैठे यकायक सारी लाइटें जल उठीं। मैंने मन ही मन गुरुदेव को अनेक नमन किया। मेरे बेटे की बहू के भाई बोल पड़े–यह तो किसी भक्त की पुकार प्रभु ने सुनी है। मैंने अपने गुरुदेव के नाम स्मरण का कमाल बताया तो वे भी बोल पड़े–आपके इन गुरु के हमें भी दर्शन करने होंगे। फिर हम आगे चले। रात के करीब 12:00 बजे थे। शहर के दस मील पहले हमने कार रोकी तथा ट्रक ड्राइवर को उसकी टॉर्च देने हेतु रुक गये। एक घण्टे तक भी वह नहीं आया तो हम चल पड़े। घर जाकर सो गये। दूसरे दिन उठे। उन्होंने ज्योंही कार सम्भाली वह स्टार्ट नहीं हुई। मैकेनिक को घर बुलाया वह अचम्भित था सारे इलैक्ट्रिक तार टूट गये थे। पुत्रवधू के भाई बोल पड़े–यह तो आचार्यप्रवर की कृपा का फल है कि हमारी जान बच गयी। मैंने गुरुदेव को सारी घटना सुनाई तो उन्होंने मुस्कराते हुये कहा कि यह तो तेरी श्रद्धा और भक्ति का प्रताप है। गुरुदेव की विशेषता देखिये शुभ कार्य सम्पन्न हो जाय या किसी परीषह से मुक्त हो जाय तो वे उसे अपने ऊपर न लेकर भक्त की भक्ति का ही प्रसाद मानते थे, न कि अपनी शक्ति का प्रतिफल। ऐसे निस्पृही गुरुवर को कोटिश: वन्दन।

यह घटना जिसका वर्णन मैं कर रही हूँ वह करीब 75 वर्ष पुरानी है। जिसे मैंने स्वयं ने नहीं देखा, लेकिन मेरी दादीजी भाव-विभोर होकर बताया करती थीं। उन दिनों विलमचन्दजी भण्डारी, वित्त-सचिव, राजस्थान सरकार थे। लोगो में उनकी प्रतिष्ठा थी। उनकी धर्मपत्नी के अशुभ कर्मों के उदय से मानसिक रोग होने के कारण 12 वर्ष तक बाँधकर कमरे में रखा हुआ था। परिवार के सदस्य उनकी असाता देख बहुत दु:खित थे, लेकिन वे डॉक्टर के इलाज के अलावा कुछ भी नहीं कर सकते थे।

आचार्य भगवन्त का जोधपुर पधारना हुआ। सभी भक्तगण सेवा में हाजिर हुये। उस समय आचार्य भगवन्त रोगी, अशक्त या तपस्वी को दर्शन देने, मांगलिक सुनाने पधारते रहते थे। एक दिन श्री विलमचन्दजी ने गुरुदेव को अपनी पत्नी को मांगलिक सुनाने का अनुरोध किया। गुरुदेव मांगलिक देने घर पधारे और भावपूर्ण मांगलिक प्रदान किया।

मांगलिक सुनते-सुनते ही उनकी शारीरिक क्रियाओं में अन्तर दृष्टिगोचर होने लगा और उन्होंने यकायक गुरुदेव को नमन किया। गुरुदेव दया पालो कह कर पधार चुके थे।

दिन ज्यों-ज्यों ढलता गया वे अपनी व्यथा से मुक्त होती गई। सारे घर में खुशी की लहर छा गयी। सब लोग अचम्भित थे। भण्डारी साहब गुरुदेव के पास दौड़े गये और चरण पकड़ लिये। खुशी के आसूँ ढलक गये, गद्‌गद् होते बोले-गुरुदेव! आपने मेरे परिवार को नई जिन्दगी दे दी। भगवान की भक्ति और गुरुभक्ति आत्मार्थ के मार्ग में तो रंग लाती ही है, लेकिन सांसारिक जीवन में भी परेशानियों से मुक्त कर देती है, आज मैंने साक्षात् अनुभव कर लिया, मैं आज कृतार्थ हुआ।

यह सच है कि गेहूँ की खेती करने से साथ में भूसा तो मिलता ही है, कहकर गुरुदेव मुस्करा दिये।

मेरे पुत्र अनिल की शादी 1985 वर्ष में हुई थी। उन दिनों गुरुदेव मेड़ता विराज रहे थे। हम लोग शादी के 2-3 दिन बाद गुरुदेव के दर्शनार्थ नई बहू को लेकर गये। आचार्य भगवन्त ने मांगलिक दिया और पूछा अब कहाँ-जा रहे हो? बेटे ने जवाब दिया-अपने गाँव देवरिया माताजी की जात देने जा रहे हैं। अरे ! तेरी माँ तो तेरे पास है। फिर आचार्य भगवन्त ने फरमाया-सुशीला! क्या अब भी तू इसमें विश्वास करती है?

मुझे लगा अरिहन्त भगवान में निष्ठा रखने वाले लोग इधर-उधर देवी-देवताओं की मनौती करते फिरें, यह उचित नहीं, हालाँकि मैं किसी देवी-देवता को नहीं धोकती, फिर भी शादी के मौके पर रस्म-रिवाज़ के रूप में कर लेते हैं। मैंने कहा-गुरुदेव वैसा ही होगा जैसा आप कह रहे हैं और वही किया भी। मैं अपने गाँव नहीं गई। बेटा अनिल, बहू एवं दो परिवार के लोग देवरिया गये और वे कार से वापसी में लौट रहे थे, रास्ते में कार दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। कार की ऐसी स्थिति हो गयी कि स्टेयरिंग, क्लच, एक्सीलेटर सब क्षत-विक्षत हो गये, लेकिन ड्राइवर सहित पाँचों व्यक्तियों के खरोंच भी नहीं आयी।

गुरुदेव से जब कुछ दिन बाद निवेदन किया तो मुस्कराते हुये बोले-किसी के चोट तो नहीं आयी, अरिहन्त में श्रद्धा पक्की हो तो बाल भी बाँका नहीं होता। बस परीक्षा जरूर होती है, मुझे लगा उस दिन ओर कुछ होने वाला था, यह तो गुरुदेव की कृपा से टल गया।

उनके बारे में जितना भी कहा जाय, वह कम है। आज वे साक्षात् रूप से नहीं रहे, लेकिन उनके गुणों की सौरभ चारों ओर बिखरी पड़ी है। आवश्यकता है उन्हें बटोरने वालों की।

ऐसे निस्पृही गुरुवर को कोटिश: वन्दन।

-पूर्व कार्याध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जी-21, शास्त्री नगर, जोधपुर-342003

जीवन चलाना महत्त्वपूर्ण बात नहीं है, लेकिन महत्त्वपूर्ण बात है-जीवन बनाना। **-आचार्यश्री हस्ती**

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 49
ISSN 2249-2011

आचार्य हस्ती दीक्षाशती

जनमानस के हृदय स्थल में विराजित : आचार्य श्री हस्ती

श्रीमती अंशु संजय सुराना

यों तो विश्व में अनेक साधक आत्माएँ होती हैं, उनमें से बहुत-सी आत्माएँ सम्मान पाती हैं, पर जो जन-जन के हृदय में बस जाए, श्रद्धा का केन्द्र बिन्दु बन जाए और प्रयाण करने के बाद भी जिनकी स्मृतियाँ जन मानस के स्मरण पटल पर तरोताजा बनी रहें, ऐसी आत्माएँ तो विरली ही होती हैं और ऐसा तब होता है जब वह जीव स्वयं श्रद्धावान हो, अपने श्रद्धेय के प्रति निष्ठावान और तन-मन-जीवन से धर्म के प्रति समर्पित हो। जो मन-वचन-काया से एकरूप हो अर्थात् जिसके चिन्तन-कथन-करनी में नाममात्र का भी हेरफेर न हो, तब जाकर कोई आत्मा अपनी अमिट छाप अनेकानेक जीवों के हृदय स्थल में छोड़ पाती है। इस भारत की वसुन्धरा में भी एक ऐसा रत्न प्रकट हुआ, जिनके महाप्रयाण के वर्षों गुज़र जाने के बाद भी जिनका स्मरण आँखों को सजल कर देता है, वे थे रत्नसंघ के सप्तम पट्टधर, बाल ब्रह्मचारी, इतिहास मार्तण्ड पूज्य 1008 श्री हस्तीमलजी महाराज साहब।

जिनका जन्म भी प्रेरणा, जीवन भी प्रेरणा और अन्तिम समय भी प्रेरणा बन गया। जन्म हुआ विपरीत परिस्थितियों में, किन्तु दुःख से कातर नहीं बने। वैराग्यवती माँ की प्रेरणा से संयम के मार्ग को चुन लिया। जिस उम्र में सामान्य बालक चिन्ता और चिन्तन दोनों धाराओं से परे होता है उस बचपन में आप चिन्तन की धाराओं में डुबकी लगा रहे थे। सम्पूर्ण जीवन अप्रमतत्ता का जीया और उस करुणामयी आत्मा ने यही सन्देश 'सामायिक और स्वाध्याय करो' के रूप में जनता को प्रमादरहित करने के लिए फरमाया। शरीर और आत्मा का भेद उन्होंने मात्र आगमों में पढ़ा ही नहीं, अपितु वास्तव में आचरण में आत्मसात् किया। सर्प को बचाने की घटना सर्वविदित ही है। एक सामान्य-सा चूहा या छिपकली भी आ जाए तो हम विचलित न हों, ऐसा होना मुश्किल है। पर सर्प को ओघे पर झोली में लेना उनकी शारीरिक अनासक्ति का, करुणा का जीवन्त उदाहरण है। वर्षा के मौसम में आमने-सामने के कमरों में प्रासुक पानी है, पर क्योंकि कुछ बूँदें बीच में टपक रही हैं। इसलिए न स्वयं जाना, न सन्तों को बुलाना, समता से पिपासा परीषह सहन करना दर्शाता है कि उस कर्मठ योगी के मन में पञ्च महाव्रतों के विशुद्धि से पालन की कितनी दृढ़ता रही होगी।

जरा को अर्थात् बुढ़ापे को तो स्वयं प्रभु महावीर ने महारोग बताया है। उस बुढ़ापे में जहाँ अच्छे-अच्छे लोगों का धैर्य जवाब दे देता है उसी उम्र के चढ़ाव में 105^0 बुखार में भी दीवार का सहारा नहीं, पैदल विहार बन्द नहीं, अन्य सन्तों से भी अनावश्यक सेवा के भाव नहीं। जिस प्रकार दर्पण में अक्स हूबहू नज़र आता है, ठीक वैसे ही जरा रूपी दर्पण में जीवन भर समता से की गई साधना का अक्स नज़र आ रहा था।

जीवन यात्रा का अन्तिम पड़ाव, जहाँ सहयोग की अपेक्षा सबसे ज्यादा होती है, उस अवस्था में पूर्णरूप से निर्लिप्त हो गए। उत्तराध्ययन सूत्र के पाँचवें अध्ययन में जहाँ सकाममरण और अकाममरण का वर्णन प्रभु ने किया वहाँ बताया कि पुण्यशाली आत्माओं के लिए मरण भी महोत्सव बन जाता है। मृत्यु की इच्छा से रहित उस आत्मा के चित्त में प्रसन्नता रहती है। किसी प्रकार का आघात उसे नहीं छूता। जन्म हुआ तब सगे-सम्बन्धियों के नाम पर एक-दो जीव रहे होंगे, पर महाप्रयाण पर भक्तों की संख्या इतनी कि उपलब्ध भूतल पर भी नहीं समा पा रही थी।

औदारिक शरीर का गुरुवर, कर डाला पूरा उपयोग,
औषधि त्यागी, त्यागा था पद, त्याग दिये सारे संयोग।

अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को और अन्तरात्मा के प्रत्येक प्रदेश को सम्यक् रूप से प्रतिपादित कर वे

महामना अपने देह के पिञ्जरे को यहीं छोड़कर उन्मुक्त गगन में विहार कर सद्गति के सामीप्य को वरण कर गए। पर अपनी खुशबू, समता की सौरभ हर भक्त की सांसों में बिखेर गए। उनके संथारे का नज़ारा आज भी जीवन्त नज़र आता है।

पुनः पुनः जिनके दर्शन को,
हर भक्त का मन तरसता है।
जिनके पावन स्मरण से,
नयनों से मेघ बरसता है।।

उन हस्तीमलजी म.सा. के गुणों का स्मरण हो सकता है, परन्तु समस्त गुणों का लेखन कदापि सम्भव नहीं। उन पुनीत पावन चरणों की वन्दना कर हम स्वयं को धन्य समझते हैं।

''तीर्थंकर की परछाई, हमने देखी तुममें हरदम।
तव चरणों में श्रद्धा से, शीश झुकाएँ तभी तो हम।।''

-एस-149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

सिद्धियों से बढ़कर आत्मज्ञान

श्री रणवीरमल भण्डारी

एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। बड़े को यौवन में ही वैराग्य उत्पन्न हो गया था और वह घर-द्वार छोड़ संन्यास लेकर अन्यत्र चला गया। जो छोटा था,उसने विद्याध्ययन किया और विवाह कर सद्गृहस्थ के रूप में संसार-धर्म निभाने लगा। संन्यास-परम्परा के अनुसार बारह वर्ष के उपरान्त वह संन्यासी बड़ा भाई अपने सांसारिक घर आया। छोटा भाई, इतने वर्ष बाद बड़े भाई को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। घर के भीतर ले जाकर उसकी बड़ी आवभगत की। भोजन करने के पश्चात् दोनों भाइयों में नाना प्रकार की चर्चाएँ होने लगीं। वार्तालाप के दौरान छोटे भाई ने अग्रज से पूछा- ''दादा! संसार के सुख-भोग को त्याग कर इतने वर्ष संन्यासी बनकर आप विचरते रहे हैं, कृपया बताइये आपने क्या प्राप्त किया है?'' सुनते ही संन्यासी ने कहा-''यदि तू देखना चाहता है तो मेरे साथ चल।'' इतना कह कर वह छोटे भाई को साथ लेकर घर के समीप बहने वाली नदी के किनारे आया और 'यह देख' कहकर वह पानी के ऊपर चलता हुआ दूसरे किनारे पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने फिर कहा- देखा! तत्काल छोटे भाई ने घाट पर मौजूद मल्लाह को एक धेला देकर नाव से नदी पार कर ली और बड़े भाई के पास पहुँच कर कहा-''किस बात के लिए आपने देखा कहा था?'' बड़े भाई ने कहा-''क्यों? पानी के ऊपर से मेरा पैदल नदी पार करना नहीं देखा?'' छोटे भाई ने हँसते हुए कहा-''दादा! आपने भी तो देखा कि एक धेला देकर मैंने भी नदी को पार कर लिया। बारह वर्ष तक इतना कष्ट उठाकर आपने बस इतना ही प्राप्त किया। एक धेले से मैं जितना कार्य अनायास ही कर लेता हूँ, बारह वर्ष तक घोर कष्ट उठाकर, कष्टसाध्य साधना कर आपने बस इतना ही प्राप्त किया? क्या इस शक्ति के द्वारा आप जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो चुके हैं? जरा-व्याधि से क्या आपको छुटकारा मिल गया है? अथवा आत्मस्वरूप के आपको दर्शन हुए हैं? वस्तुतः आपकी इस सामर्थ्य का मूल्य तो केवल एक धेला है।'' अनुज की इस सारगर्भित बात को सुनकर अग्रज संन्यासी के अन्तर्चक्षु खुल गये और उसकी चेतना को नई दिशा प्राप्त हो गई। वह अन्य सभी क्रियाओं से मन हटा कर आत्म साक्षात्कार की ओर उन्मुख हो गया। धर्म-साधना में संलग्न होने से यदाकदा सिद्धियाँ स्वतः उपस्थित हो जाती हैं। किन्तु आत्मज्ञान करने से पूर्व ऐसी सिद्धियों को प्राप्त करते ही मानव मन अहंकृत हो उठता है और अहंकार की वृद्धि से ही मानव सांसारिकता के जाल में फँसकर उच्च लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं हो पाता और अन्त में वही उसके पतन का कारण बन जाता है। परमहंस स्वामी श्रीरामकृष्ण के शब्दों में सिद्धियाँ विष्ठा की तरह हेय हैं। उनकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। जो उधर ध्यान देते हैं, वे वहीं रह जाते हैं, आत्म ज्ञान की ओर अग्रसर नहीं हो पाते।

-जोधपुर (राज.)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 51
ISSN 2249-2011

युवा-स्तम्भ

युवाओं के प्रेरणा स्रोत - आचार्यश्री हस्ती

श्री पदमचन्द गाँधी

'युवा' शब्द महा शक्तिशाली बीज मन्त्र है, जिसमें सम्पूर्ण विश्व को उलटने-पलटने की शक्ति है। युवा परिवर्तन का दूसरा नाम है। युवा शब्द क्रान्ति का द्योतक है। युवा एक जोश है, एक उत्साह है, साहस एवं सुरक्षा भी है। यदि आवश्यकता है तो उसे पहचानने की, उसके भीतर छुपी हुयी प्रतिभा को उजागर करने की। क्योंकि उसमें अपने यौवन को सिद्ध करने की क्षमता है, योग्यता है, शौर्य है, लेकिन उसे निखारने वाला, तराशने वाला एवं गढ़ने वाला चाहिए, उसे आगे बढ़ाने वाला चाहिए। प्रश्न उठता है युवाओं के प्रेरणा स्रोत कौन हैं? उनके आदर्श कौन हैं जो उनके उत्तम जीवन की राह प्रशस्त कर सकें। क्योंकि गुरुकुल अब प्रचलन में नहीं हैं, माता-पिता को समय नहीं है तथा शिक्षक वाणिज्यिक हो गये हैं। समस्या यह भी आती है कि युवा तर्क करते हैं, वे प्रमाण चाहते हैं तथा हर वस्तु को सिद्ध करना चाहते हैं, परिणाम पाना उनकी पहली पसन्द है, प्रेरणा किस की प्राप्त करें, उनका आचरण कैसा है, क्योंकि युवा जिसको अपना मानते हैं, वहीं वे धोखा खा जाते हैं।

प्रेरणा के स्रोत एवं आदर्श वे बन सकते हैं जो युवाओं में गुणात्मक परिवर्तन ला सके। जिनमें जीवन की गुणवत्ता झलकती हो। युवा के आदर्श वही हो सकते हैं जो स्वयं अद्भुत साहस के धनी हों। जो संवेदनाओं से युवा हों, जिनमें जमाने की हवा को बदलने का दमखम हो। जिनमें कुछ कर गुज़रने का भाव उत्पन्न हुआ हो। क्योंकि आदर्श तो वह साँचा है जिसके बारे में सोचकर हम स्वयं को ढालते हैं, गढ़ते हैं, और सँवरते हैं। जिनकी पहचान सही हो, और खोज पूरी हो तो वे युवाओं के प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं तथा वे ही युवाओं को प्रेरित कर सकते हैं। ऐसे ही युवाओं के प्रेरणा-स्रोत, युवाओं के मसीहा, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का नाम सर्वोच्च स्थान पर आता है, क्योंकि वे स्वयं अपार साहस के धनी, ज्ञान के प्रकाश पुञ्ज थे, जिन्होंने भर यौवन में आचार्य पद को सुशोभित करते हुए चतुर्विध संघ के शासन की बागडोर सम्भाली। युवा क्या नहीं कर सकता, यह उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया। उन्होंने जोश को होश के साथ, युवाओं की मनोदशा को ध्यान में रखते हुए उनकी प्रतिभाओं को निखारने का कदम ही नहीं उठाया, वरन् मञ्ज़िल भी प्राप्त की।

1. जाग्रत बनने का सन्देश-आचार्य भगवन्त ने प्रेरणा दी कि-"हे मानव! तुम अन्तर्मुखी बनो, तुम्हारे में दानव से मानव, नर से नारायण और जन से जिन बनने की शक्ति है। अपनी सुषुप्त ऊर्जा को जाग्रत करो। यदि तुम्हारे पास वह शक्ति आ गयी तो भवसागर से पार कर जाओगे।" जिस प्रकार भगवान महावीर ने गौतम स्वामी को पलभर के लिए भी प्रमाद न करने की प्रेरणा दी उसी प्रकार आचार्य भगवन्त ने अप्रमाद की प्रेरणा दी। सोते-जागते, आत्मकल्याण साधना एवं संयम पालने की भावना बनी रहे ऐसा उपदेश देकर भगवान महावीर के अनुयायियों का मनोबल बढ़ाया।

2. युवा संगठन की प्रेरणा-आचार्य हस्ती ने कहा-"नौ जवानों! संगठित होकर नवयुवक दल बनकर सामाजिक और धार्मिक कार्यों में तथा धर्म-साधना में संलग्न होकर अपने तन और धन को उपकारी बनाओ। इसी में जवानी की शोभा है। जोश के साथ होश को न भूलें, अपनी शक्ति रचनात्मक कार्यों में लगायें, मादक पदार्थों के सेवन से दूर रहें, जीवन में सादगी एवं सात्त्विकता रहे। इसी प्रेरणा के आधार पर अखिल भारतीय युवा संघ का गठन हुआ, जिसके अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों के अनेक युवा समाज सेवा में प्रवृत्त हैं।

यह युवा-संघ अब युवक परिषद् के रूप में वट वृक्ष की तरह विभिन्न गतिविधियों को अञ्जाम दे रहा है।

3. युवारत्न पारखी-आचार्य श्री में सूक्ष्म दृष्टि, व्यक्ति की पात्रता की पकड़ और उनकी योग्यता के अनुसार कार्य कराने की प्रदत्त प्रेरणा सदैव जीवन्त रहती। वे धर्म को किसी पर लादते नहीं थे, इसलिए हर कोई उनकी प्रेरणा से धर्म को जीवन में उतारने को तत्पर हो जाता। यही कारण है कि उनके पास युवा ही नहीं अनपढ़ से लेकर विद्वान् तक भक्त थे। श्रीमान् कन्हैयालालजी लोढ़ा ने अपने लेख में लिखा है 'मुझे 20 वर्ष की उम्र से ही आचार्यश्री ने लेखन कार्य की प्रेरणा दी, जिससे मेरा जीवन सुधर गया। आचार्यश्री की प्रेरणा रहती थी कि यह जीवन प्रमाद में न बीत जाए। इसके लिए वे सदैव सजग करते रहते। उन्होंने कहा मैं जो कुछ हूँ आचार्यश्री की प्रेरणा और महान् कृपा का ही परिणाम है। आचार्यश्री ने मुझे छोटे से स्थान केकड़ी से कहाँ तक पहुँचा दिया, मुक्ति का मार्ग दिखलाया, इस महान् उपकार को भुलाया नहीं जा सकता। इस प्रकार आचार्यश्री ने अज्ञात, इधर-उधर बिखरे हुए लोगों को खोजा, उनकी प्रतिभाओं को चमकाया। ऐसे कई नाम हैं जो समाज में अपनी उत्कृष्ट सेवाएँ दे रहे हैं। इस दृष्टि से आचार्यश्री युवाओं के पारखी थे, उनकी प्रेरणा से कई युवाओं का जीवन सँवर गया। इस रत्न गर्भा वसुन्धरा में अनगिनत रत्न हैं, गुदड़ी के लाल हैं, परन्तु सागर तल में, पर्वतों में, खन्दकों में, मिट्टी एवं कीचड़ में छिपे हुए हैं। उनकी प्रभा पर आवरण आया हुआ है। उनका कोई उपयोग नहीं हो रहा है। उनमें से जो रत्न जौहरी के हाथ लगते हैं वे ही निखर पाते हैं, ऐसे ही जन समुदाय में हजारों लाखों नररत्न इधर-उधर बिखरे छिपे पड़े हैं, उन्हें आचार्यश्री ने खोजा और जिसमें जो भी विशेष योग्यता और प्रतिभा थी उसे उसी क्षेत्र में आगे बढ़ाया।

4. गुणिषु प्रमोदम्-आचार्यश्री विद्वानों के प्रति सदैव प्रमोद भाव रखते थे तथा जब भी उनसे मिलते तो आनन्द विभोर हो जाते तथा उन्हें सदैव प्रेरणा देते रहते थे। आचार्यश्री की मान्यता थी कि केवल पढ़-लिख जाना और डिग्रियाँ प्राप्त करना ही विद्वत्ता का परिचय नहीं है। विद्वान् के जीवन में श्रद्धा होनी परम आवश्यक है। उसका चरित्र उज्ज्वल होना नितान्त आवश्यक है। वे कहते थे-''यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्'' अर्थात् जो क्रियावान् पुरुष है वही विद्वान् है। समाज में विद्वानों की बड़ी कमी है यह बात उन्हें खटकती थी और सद्भाग्य से जो विद्वान् हैं तो उनका समाज में कोई सम्मान नहीं है। यह आचार्य श्री के हृदय की जबरदस्त पीड़ा थी। आचार्य श्री वस्तु को खण्ड-खण्ड देखकर भी जीवन की अखण्डता और सम्पूर्णता के पक्षधर थे। उनका विचार था कि जैन समाज सब प्रकार से सम्पन्न होकर भी अपना पुरुषार्थ नहीं कर पा रहा है। समाज के श्रीमन्त अपनी धन-सम्पदा में मस्त हैं, विद्वान् अपने ज्ञानलोक में एकाकी मस्त हैं। कार्यकर्ता की जो प्रतिष्ठा होनी चाहिए वह नहीं है और अधिकारियों का अपना अलग अहम् है। यदि चारों अङ्ग मिल जायें तो समाज का निर्माण सहज हो सकता है। इसी पीड़ा से प्रेरणा पाकर इन्दौर चार्तुमास वर्ष 1978 में अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् की स्थापना के संकेत दिए। इसके लिए डॉ. श्री नरेन्द्रजी भानावत को प्रेरित कर ज्ञान कार्य को अञ्जाम दिया। इसमें लगभग 100 विद्वान् जुड़े। इस विचार से इसमें श्रीमन्तों सामाजिक कार्यकर्ताओं, प्रशासनिक अधिकारियों को भी जोड़ा। आचार्यश्री ने विद्वानों को भी क्रियावान् होने की प्रेरणाएँ दी और कहा कि-''यदि एक विद्वान् भी धर्म-आराधना से जुड़ जाता है तो वह अनेक भाई-बहनों के लिए प्रेरणा स्तम्भ बन जाता है।''

जैन विद्वत् परिषद् के तत्त्वावधान में 'युवा पीढ़ी और अहिंसा' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गयी, जिसमें आचार्यश्री ने सन्देश दिया कि अपने ज्ञान को शस्त्र के साथ नहीं शास्त्र के साथ जोड़ो। अपनी विद्वत्ता को कषाय वृद्धि में नहीं जीवन वृद्धि में लगायें। विद्वत्

परिषद् का उद्देश्य था-ज्वलन्त, व्यावहारिक एवं धार्मिक विषयों पर मन्थन किया जाये, जिससे आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक स्तर पर नये-नये विचार एवं समस्याओं के समाधान सामने आ सकें तथा उन्हें व्यवहार में भी लाया जा सके। विद्वत् गोष्ठियों का आयोजन अभी भी निरन्तर किया जा रहा है जिसकी सभी सराहनाएँ करते हैं। ये गोष्ठियाँ युवापीढ़ी के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर रही हैं। सन् 2018 में मेड़ता में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में 'युवा पीढ़ी : दशा और दिशा' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें अनेक विद्वान् वक्ताओं ने प्रेरक विचार प्रस्तुत किए।

5. जीवन की उच्चता की प्रेरणा-आचार्यश्री जहाँ एक ओर परम्पराओं का कठोरता से अनुसरण करते थे वहीं दूसरी तरफ युवाओं के प्रति उनके विचारों में काफी उदारता थी। परम्परा और आधुनिकता का यह अद्भुत सामञ्जस्य उनके व्यक्तित्व की अनूठी विशेषता थी। आचार्यश्री युवाओं के लिए विशेष प्रेरणा स्रोत थे जिन्होंने आचरण की पवित्रता पर सदैव बल दिया। वे कहते थे कि मनुष्य जीवन को उच्चता की ओर उठाने तथा अधमता से बचाने का प्रमुख साधन सदाचरण है। उनका मानना था कि ज्ञान और दर्शन ये दोनों तब तक निष्फल हैं जब तक कि व्यक्ति आचरण धर्म (चारित्रधर्म) की आराधना में इनका उपयोग न करे। उदाहरण के तौर पर स्पष्ट है कि एक युवा व्यवसायी श्री रत्नेशकुमारजी बाँठिया 18 अप्रैल, 1991 को जब बैंकॉक के लिए रवाना हुए तब जीवन की सफलता के लिए गुरुदेव ने तीन बातें बतायी-(1) **'पढमं नाणं तओ दया'** अर्थात् पहले ज्ञान बाद में दया आदि व्रत। उन्होंने कहा आध्यात्मिक ज्ञान जो जीवन को ऊँचा उठाने वाला है, इहलोक एवं परलोक सुधरने वाला है इसे प्राप्त करना चाहिए जो स्वाध्याय से मिलता है। (2) **सात्त्विक आहार**-इसका असर विचारों पर पड़ता है। सप्तकुव्यसन को त्यागकर शुद्ध शाकाहार करें। मादक पदार्थों के सेवन से बचें। (3) **सादा जीवन उच्च विचार**-अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण रखें। आवश्यकताएँ कम करें। जीवन में सादगी बरतें और मन में शुभ विचार लाएँ।

जीवन की उच्चता को साक्षात किया, एक नन्हे बालक नूरमोहम्मद अगवान ने जब कोटा में आयोजित 'वीर उपासिका पुरस्कार सम्मान' कार्यक्रम का आयोजन दिसम्बर वर्ष 1990 (29 दिसम्बर, राजस्थान पत्रिका, कोटा अंक में प्रकाशित समाचार) में हुआ। इस कार्यक्रम में उसे भी 68 बालकों के साथ सम्मानित किया गया। उन्होंने बताया कि वे बाल्यकाल से ही जिनवाणी से जुड़े रहे तथा महासती छगनकँवरजी म.सा. से जीवन पर्यन्त मांस-मदिरा का त्याग किया और अहिंसा प्रचार समिति पच पहाड़ से जुड़कर अहिंसा प्रचार में संलग्न हो गये। उन्होंने कहा कि जिनवाणी ने ही मुझे शाकाहारी बनाया जिससे मेरे जीवन में सुखद मोड़ आया। यह थी गुरु भगवन्तों की प्रेरणा जिससे जीवन उन्नत बन गया।

जीवन की उच्चता को प्राप्त करने एवं अपने लक्ष्य की पूर्ति की प्रेरणा के फलस्वरूप युवा स्वाध्यायी केशरी किशोर नलवाया छोटी सादड़ी से गुरुकुल शिक्षा पूर्णकर जब भोपालगढ़ गये (1940-41) तब गुरुदेव ने उनसे कहा-कार्य की सफलता तीन बातों पर निर्भर करती है। (1) उचित ज्ञान (2) भरपूर प्रयत्न और (3) अविचल धैर्य। लक्ष्य की पूर्ति इन तीनों से हो सकती है, केवल एक से नहीं। ऐसे एक ही मिनट की बात ने जीवन के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा दे दी।

आचार्यश्री ने युवक-युवतियों को सर्वोच्च स्थान देकर हजारों-लाखों को धर्म के पथ पर चलना सिखाया तथा उन्हें आगम के अनुसार मर्यादाओं में चलने की प्रेरणा दी। क्योंकि बाहरी ज्ञान से युवा परिपूर्ण नहीं बनता, वह पूर्ण होता है अन्तस्थ में व्याप्त भीतरी ज्ञान से। उसे उजागर करने की आचार्य भगवान सदैव प्रेरणा करते रहते थे।

6. शिक्षा की प्रेरणा–नाणस्स सव्वस पगा–सणाए इस गाथांश को ध्यान में रखकर आचार्यश्री ने भोपालगढ़ में जैन रत्न विद्यालय की स्थापना की। जबरदस्त प्रेरणा समाज को दी, जो जोधपुर सम्भाग के लिए प्रेरणा बन गई। इसी प्रेरणा से अनेक चरित्रवान् और समाजसेवी विद्वान् इस संस्थान ने तैयार किए जो आज समाज में सक्रिय सेवाएँ दे रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीनता एवं नवीनता का समन्वय करने हेतु जयपुर में जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान स्थापित किया जिसका उद्देश्य ऐसे ठोस विद्वान् तैयार करना रहा जो प्राच्य विद्याओं के प्रकाण्ड पण्डित होकर आधुनिक ज्ञानविज्ञान और शोध क्रियाओं में निष्णात हों तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को शिक्षित कर उनको धार्मिक शिक्षा के साथ आगे बढ़ाया जाये। ऐसी सुन्दर प्रेरणा से आज इस संस्था ने कई युवाओं को तैयार किया है, जो अपना परचम प्रशासनिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक क्षेत्र में अनेक पदों को सुशोभित करते हुए समाज में अग्रणी सेवाएँ दे रहे हैं। अब इस संस्थान ने छात्राओं के लिए धार्मिक शिक्षण के साथ व्यावहारिक शिक्षा के कार्यक्रम की अलग से सुन्दर व्यवस्था शुरू की है। यह सब गुरु कृपा का ही प्रसाद है।

7. महिला जागृति की प्रेरणा–स्त्रियों की स्थिति में सुधार हुए बिना संसार के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। एक पक्षी का एक ही पंख के सहारे उड़ सकना असम्भव है। इस भावना को समझते हुए आचार्य भगवन्त ने महिला जागृति पर बल दिया। वे चाहते थे कि उनमें ऐसी क्षमता उजागर हो जिससे वे अपनी समस्याएँ अपने ढंग से हल करें। ऐसी क्षमता उनमें है, बस आगे लाने की जरूरत है। इसके लिए आचार्यश्री ने नारी शक्ति को पहचाना। उन्हें सदैव सादगी से रहने की प्रेरणा दी। प्रवचन–स्थल पर सादगी से आने, महँगे परिधान, आभूषण आदि के स्थान पर साधारण परिवेश में आने की प्रेरणा दी। समाज में शिक्षित नारियों को उनकी योग्यतानुसार आगे बढ़ने की सदैव प्रेरणा दी। नारी संगठन के लिए अखिल भारतीय महावीर जैन श्राविका संघ की स्थापना आपकी प्रेरणा का ही परिणाम है। इस संघ द्वारा वीर उपासिका, पत्रिका भी प्रकाशित हुयी। इस संघ ने आचार्यश्री की प्रेरणा द्वारा अधिवेशनों में आभूषण प्रियता, फ़ैशन फरस्ती, समाज के बढ़ते हुए प्रदर्शनों, आडम्बरों, दहेजप्रथा, बढ़े हुए व्यसन, मादक पदार्थों का सेवन आदि के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी। महिलाओं एवं युवतियों में जो आज जागृति दिखाई दे रही है वह आचार्यश्री की ही देन है। आचार्यश्री ने समाज की पढ़ी–लिखी महिलाओं को एकता के सूत्र में बाँधा, चाहे वह रूप गोष्ठी, संगोष्ठी आदि हो या अन्य। उन्होंने महिलाओं और नवयुवतियों को मञ्च पर लाने की सदैव प्रेरणा दी।

आचार्यश्री ने महसूस किया कि जैन समाज में और विशेषत: मारवाड़ी जैन समाज में कई कुरीतियाँ प्रचलित थी इन कुरीतियों से महिलाएँ जकड़ी हुयी थीं, उन्हें दूर करने की प्रेरणा इस प्रकार दी कि नारी इनसे मुक्त हो। वे अपना सर्वांगीण आध्यात्मिक विकास करें। इनसे हजारों बहनों का जीवन बदला।

8. स्वाध्याय संघ की प्रेरणा–आचार्यश्री ने महसूस किया कि सन्त–सतियों की संख्या सीमित है, सभी जगह वे नहीं जा सकते हैं, अत: पर्युषणकाल में स्वाध्यायी हो तो सेवाएँ दे सके। यही सोचकर आपकी प्रेरणा से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत स्वाध्याय संघ की स्थापना हुई। आपने स्वयं ने स्वाध्यायी बनने की युवकों को प्रेरणा दी जिसके फलस्वरूप आज भारत के कोने–कोने में स्वाध्याय संघ के स्वाध्यायी हैं जिनमें युवा स्वाध्यायी भी अपनी सेवाएँ देने जा रहे हैं। यह गुरु कृपा का ही प्रसाद है कि वे आज जिनशासन को प्रेरणा कर रहे हैं।

9. शिविरों का आयोजन–डॉ. प्रेम सुमन जैन, अध्यक्ष प्राकृत एवं जैन विद्या विभाग, सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर ने स्पष्ट किया कि आचार्यश्री जितना साहित्य सम्वर्धन के लिए प्रयत्नशील थे उतने ही

नयीपीढ़ी को सुसंस्कारित करने, स्वाध्यायी बनाने के प्रति भी प्रयत्नशील थे। उनके निर्देशन में युवापीढ़ी के कई शिविर आयोजित हुए। जिनमें युवापीढ़ी के चरित्र-निर्माण के प्रति सार्थक चर्चाएँ की गयी। आचार्य श्री के हृदय में बच्चों के प्रति बड़ी करुणा भावना थी, वे चाहते थे कि समाज के बच्चे से लेकर युवक तथा युवतियों का जीवन सामायिकमय बन जाये, स्वाध्याय के रंग में रंग जाय जिससे स्वयं का तथा आने वाली पीढ़ी का जीवन सुधर जाए, इसलिए शिविर आयोजन किए जाने लगे।

आज भी युवक परिषद् पूरे भारत में शिविरों का आयोजन कुशल तरीके से कर रही है जिसमें युवक-युवतियाँ एवं बालक-बालिकाएँ धार्मिक शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण कर रहे हैं। यह आचार्यश्री की प्रेरणा का ही पुण्य प्रताप है।

10. सामायिक स्वाध्याय की प्रेरणा- आचार्यश्री चाहते थे शस्त्र-सेना नहीं शास्त्र-सेना तैयार हो। इसके लिए वे स्वयं सदैव इनकी प्रेरणा देते। इसलिए यह राष्ट्र स्तर का नारा बन गया। घर-घर में सामायिक-स्वाध्याय की गूञ्ज को आचार्यश्री की प्रेरणा से युवकों ने पहुँचाया। आज भी नियमित सामयिक-स्वाध्याय में युवक बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। यह गुरु भगवन्त की कृपा का ही परिणाम है।

आचार्यश्री युवापीढ़ी के सच्चे मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत तथा आदर्श थे। उन्हें नमन एवं वन्दन करते हुए कहना चाहता हूँ-

हे भारत के महान् सन्त! महान् क्रान्तिकारी, महान् युग पुरुष, महान् सुधारक, महान् संगठन प्रेमी, समाज के सही नेतृत्वकर्ता, स्वाध्याय-सामायिक और साधना की ज्योति प्रज्वलित करने वाले ज्योतिर्धर! युवा शक्ति को प्रबल पुरुषार्थ की प्रेरणा देने वाले मार्गदर्शक, आपका जीवन सदैव प्रेरणा देता रहेगा तथा इस प्रकार की प्रेरणा पाकर अपने आपको धन्य-धन्य समझेगा।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.) 9414967294

व्यापार

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

धनार्जन में मत बनिए अन्धे।
मत करिए कर्मादान के धन्धे।।
न्याय-नीति से करोगे-व्यापार।
तो बन जाओगे ग्राहकों के हृदय के हार।
बेईमानी तो एक न एक दिन फूट-फूट कर रोती है।
ईमानदारी तो सदा हँसती है।।
ग्राहकों के साथ मधुरतम हो व्यवहार।
खूब फलेगा-फूलेगा आपका व्यापार।।
धन से ज्यादा धर्म हो प्यारा।
तो संसार से हो अवश्य किनारा।।
जीना है यहाँ दिन चार।
अधिक आरम्भ वाला न हो व्यापार।।
व्यापार में मत रचा-पचा इस मन को।
यहीं छोड़कर जाएगा इस धन को।।
धन तो यहीं रह जाएगा।
धर्म ही साथ चल पाएगा।
न्याय-नीति से हो आय, तो भव सुधर जाय।
अन्याय-अनीति की हो आय, तो भव बिगड़ जाय।।
सुन मेरे भाई! ईमानदारी से कर कमाई।
इसी में है तेरी भलाई।।
सुश्रावक का ऐसा हो व्यवसाय।
जिसमें अधिक नहीं बिगड़े अध्यवसाय।।
पैसा कमाना नहीं,
प्राणियों के प्राण बचाना है प्रमुख।
धर्मीजनों को तो इसी में है सच्चा सुख।।
व्यापार में मत करना अधिक गृद्धि।
वरना संसार की होगी वृद्धि।। धनी को नहीं,
धर्मी (सन्तोषी) को होता है सच्चा सुख।
आप भी करिए, उधर अपना रुख।।

-संकलन : धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 56
ISSN 2249-2011

आध्यात्मिक-चिन्तन

2021 में 21 दिन का लॉकडाउन?

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

10 जनवरी, 2021 की शाम लन्दन की सबसे बड़ी होटल में संजयजी अपनी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी व्यापारिक डील करके उठे .....और सोचा यह इतनी बड़ी खुशखबरी तो सबसे पहले बाऊजी को सुनानी चाहिए ...आज तक जो भी कमाया है वह सब बाऊजी के पुण्य प्रताप से ही तो कमाया है, पर ये गाँव के मोबाइल नेटवर्क भी न ....कॉल भी आसानी से नहीं लगता है ... और यह गोविन्द भी न ...इसका मोबाइल भी व्यस्त आ रहा है ....कॉल लग गया...

गोविन्द.... यह तुम्हारा मोबाइल भी हमेशा व्यस्त ही रहता है क्या ? ...कितनी देर से कोशिश कर रहा हूँ...बाऊजी से बात कराओ ...

जी सेठजी ...प्रणाम करूँ सेठजी ...मैं खुद भी आप ही को कॉल लगा रहा था ...इसलिए मोबाइल व्यस्त बता रहा होगा ...बाऊजी कह रहे थे आपसे बात करने के लिए ...

अच्छा-अच्छा ...चल बाऊजी से बात करा।

जी सेठजी

जय जिनेन्द्र ...प्रणाम करूँ बाऊजी !

जीते रहो संजू बेटा सौ साल की उम्र है तुम्हारी ...

सौ साल की उम्र तो होगी ही बाऊजी ... आखिर कमाई भी पूरे 100 करोड़ की होगी बाऊजी ....अभी अभी डील नक्की हुई है बाऊजी ....5 करोड़ रूपए का पेमेण्ट एडवान्स में कर दिया है नए वाले कोरोना की वैक्सीन बनाने वाली कम्पनी को बाऊजी ..40 करोड़ का माल अगले महीने आ जायेगा और उसमें कई गुना ज्यादा यानी पूरे 100 करोड़ का मुनाफा मिलेगा बाऊजी .....

पर बेटा मैं तो तुम्हें बरसों पहले ही बता चुका हूँ ...कि न तो मुझे अंग्रेजी दवाइयों में या हिंसात्मक तरीकों से बनने वाली इन वैक्सीनों में रुचि है ...और न ही उनसे होने वाले व्यापार-मुनाफे में या फिर धन-सम्पत्ति में। बेटा याद रखना आचार्य हस्ती फरमाते थे कि ... **धन की भूख धन से नहीं बल्कि सन्तोष से ही मिटती है** ...इस ब्रह्म वाक्य को आत्मसात् कर मैं भी जीवन भर सन्तुष्ट रहा ...पिछले जन्मों के पुण्य और इस जन्म के पुरुषार्थ के जोड़ से जो कुछ भी मिला उसमें संतोष रखा । संजू बेटा...मैंने तो तुम्हें याद किया ही था कि तुम्हारा ही फोन आ गया ...वह भी इसलिए कि बात ऐसी है संजू ...कि अब अन्तिम समय नज़दीक लग रहा है और अपने पास वाले स्थानक में सन्त-मुनिराज भी पधारे हुए हैं ...उनके श्रीमुख से ही संथारा ग्रहण करने की प्रबल भावना हो रही है ...इसलिए ....

क्या ....? बाऊजी ....यह सब अचानक ...इतनी जल्दी ...आप थोड़ा रुकिए बाऊजी ...आज और कल की तो सारी उड़ानें रद्द हो चुकी हैं। अभी नए कोरोना स्ट्रेन के कारण इंग्लैण्ड सरकार ने फिर से सारे एअरपोर्ट कल तक के लिए बन्द कर दिए हैं ...मैं परसों सुबह की पहली फ्लाइट से रवाना हो जाऊँगा... एअरपोर्ट से सीधा गाँव आपके पास आता हूँ ...फिर संथारे का सोच लेना बाऊजी ...प्लीज़ बाऊजी ....

संजू .... अभी तो मेरे पास इतना समय नहीं है बेटा ...वैसे समय तो ...तुम्हारे पास भी नहीं है तभी तो, न तो मार्च के लॉकडाउन में आ पाये ...और न ही उसके बाद आ पाए ...कोई बात नहीं बेटा ...मैंने 21 दिनों के उस लॉकडाउन में **उपासकदशाङ्गसूत्र** का स्वाध्याय पूर्ण किया था। उसके सारांश और अपने जीवन के अनुभवों को मिलाकर लिखी एक डायरी गोविन्द को तुम्हें देने के

लिए दी है ...वह डायरी तुम्हारे लिए मेरी वसीयत भी है और मेरी नसीहत भी ...इस डायरी को आत्मसात् कर लेना ....अभी रखता हूँ ...सन्त मुनिराज भी पधारने वाले ही होंगे .... सूर्य अस्त होने वाला है ....और शायद मेरा जीवन भी .....ठीक है संजू ...खमतखामना बेटा।

खमतखामना बाऊजी ....मैं जल्दी ही आ रहा हूँ आपकी सेवा में ...बस इतना ही बोल पाए ...संजयजी!

फिर फोन लगाया हरिराम काका को ....प्रणाम हरी काका ....बाऊजी को समझाओ न काका ...कि अभी रुक जाएँ ...मैं परसों तो पहुँच ही रहा हूँ न काका।

समझा तो सुबह से रहा हूँ बेटा ...पर तुझे तो पता ही है न ...कि तेरे बाऊजी जितने सिद्धान्त के पक्के हैं ...संकल्प के भी उतने ही पक्के हैं ...एकदम स्वस्थ ही दिख रहे हैं ...पर फिर भी एक ही बात कहे जा रहे हैं ...कि साँसों की डोर टूटने वाली है ...जीवन तो उत्सव जैसा जी लिया ...बस अब मृत्यु को महोत्सव बनाना है!

रो ही पड़े संजयजी ...हरी काका ...पूरा ध्यान रखना मेरे बाऊजी का .....

बड़ी मुश्किल से रुन्धे गले से धर्मपत्नी को सूचना दी ...और तुरन्त बेटे और बहू के साथ गाँव रवाना होने के लिए कहा ...और फिर बेटी के ससुराल भी समाचार किये ...वे लोग भी रवाना हो गए।

ज्यादा दूर तो नहीं है गाँव ...बस दो घण्टे में ही परिवार के सभी सदस्य गाँव पहुँच गए ...सरलाजी ने फोन पर समाचार बताये कि ...बाऊजी हमेशा की तरह शान्त और प्रसन्नचित्त हैं .... पूरे होशो हवास में सन्त मुनिराज के श्रीमुख से संथारा ग्रहण किया है ...गाँव के कई श्रावक भी उनको धर्म सुना रहे हैं ...कुल मिलाकर अलौकिक सा माहौल है ...बस आप की ही कमी है!

देर रात तक भी संजयजी की आँखों से नींद बहुत दूर ही है ...खुद लन्दन की होटल में हैं, पर मन तो कब का गाँव पहुँच चुका है ...बार-बार याद आ रही है ... बाऊजी की उनके दिए संस्कारों की .....करीब एक साल पहले अम्माजी के गुज़र जाने के बाद बाऊजी ने कहा था कि अब वे गाँव वाले घर में ही रहना चाहते हैं ...वहाँ पास में ही स्थानक भी है और धर्मसाधना करते हुए ही अपना अन्तिम समय सार्थक करना चाहते हैं। सबका मन तो नहीं था, लेकिन ...बाऊजी की जिद कहो या उत्साह ...सबको झुकना ही पड़ा ..अगले ही दिन पूरे परिवार के साथ सभी ...गाँव में स्थित घर पहुँचे ...घर क्या ..यह पुरखों की हवेली है ...पूरी रजवाड़ों के महल-सी लगती है ... बड़ी इतनी कि ...सैकड़ों सदस्य रह सकें। वहीं गोविन्द को भी बाऊजी की देखरेख के लिए रखा ...वो हरिराम काका का बेटा है ..... बाऊजी के एकदम ख़ास है हरिरामजी...लंगोटिया दोस्त तो हैं ही ...बचपन के सहपाठी भी हैं ....और साथ ही वे बाऊजी के मुनीम भी हैं ...हवेली के पिछले हिस्से में ही रहते हैं अपने परिवार के साथ .....बाऊजी के खेत-खलिहान के साथ साथ गौशाला का काम भी परिवार के साथ मिलकर बखूबी सम्भाल लेते हैं ...साल में तीन - चार बार शहर आते और बाऊजी को फसल का पूरा का हिसाब और मुनाफ़ा सम्भला देते और गौशाला का जमा खर्च इत्यादि का ब्यौरा बता देते ... और उनकी पत्नी राधा काकी ...ऐसा स्वादिष्ट खाना बनाती है कि उसके सामने शहर की बड़ी होटल वाले भी पानी भरें... उनका बेटा गोविन्द भी है एकदम होशियार ....बाऊजी का लाड़ला... हवेली की साफ़-सफाई भी बढ़िया करता है ...और भी सारे काम निपटा लेता है ...कुल मिलाकर बाऊजी का पूरा ध्यान रख लेता था ...फिर भी बाऊजी की चिन्ता तो रहती ही थी ...इसलिए हफ्ते-दो हफ्ते में गाँव जाकर उनको सम्भाल आते थे, पर इस लॉकडाउन के बाद न तो गाँव जा पाए और न ही बाऊजी को सम्भाल पाए ...हाँ फ़ोन पर जरूर उनसे बात हुई थी!

12 जनवरी को सुबह कोहरा था ...इसलिए लन्दन से फ्लाइट भी करीब एक घण्टे देरी से रवाना हुई ...दो रात ठीक से सो नहीं पाए थे संजयजी ....और पर अभी भी न तो सो पा रहे थे और न ही जग पा रहे थे ...हवाई जहाज पूरी रफ़्तार पर था और संजयजी के

विचार भी ...विचारों का यह प्रवाह बत्तीस साल पहले जा पहुँचा ... बाऊजी ने ही गाँव से शहर आकर एक छोटी-सी देशी दवाइयों की दुकान खोली थी ....उनका शहर आने का मन तो नहीं था, पर अम्माजी की इच्छा थी कि संजयजी शहर के कॉलेज की पढ़ाई करें ...आँखों का इकलौता तारा ...अकेला दूर भेजें भी तो कैसे ...इसलिए तीनों जने गाँव की हवेली, खेत खलिहान और गौशाला की सब जिम्मेदारी हरिराम काका को सम्भला कर गाँव से शहर आ गए। गाँव से धन तो कुछ ख़ास नहीं ला पाए थे बाऊजी ...पर हाँ अपने धार्मिक संस्कारों और नैतिक उसूलों की पोटलियों को कन्धों से कभी अलग नहीं किया... पाँच-सात वर्षों की मेहनत और बाऊजी की ईमानदारी और मधुर व्यवहार से ग्राहकों की संख्या निरन्तर बढ़ती ही गई और बढ़ते-बढ़ते पूरे शहर में देशी दवाइयों की नम्बर वन दुकान बन गई। कॉलेज की पढ़ाई के बाद संजयजी जब दुकान पर बैठने लग गए ...तो अच्छे परिवार में देखकर बाऊजी और अम्माजी ने संजयजी का विवाह सम्पन्न कराया सरलाजी से! ....और उसके एक साल के अन्दर तो बाऊजी ने व्यापार से निवृत्ति ले ली और फिर उनका अधिकतम समय धर्म स्थान में ही बीतता था।

अब तो संजयजी ने देशी दवाइयों के साथ-साथ अंग्रेजी दवाइयों का खूब सारा स्टॉक भी मँगवा लिया ...और अंग्रेजी दवाइयों के मोटे मुनाफ़े का रंग ऐसा चढ़ा ...कि देशी दवाई पूछने वाले ग्राहकों को भी जबरदस्ती अंग्रेजी दवाइयाँ बेची जाने लगीं। बाऊजी को पता चला तो जबरदस्त नाराज़ हुए ...फिर भी नाराज़गी को दबाकर उन्होंने बड़े प्रेम से समझाया ...देख संजू ...अंग्रेजी दवाइयों में हिंसा की प्रबल सम्भावना है ...और अपनी देसी दवाइयों की बिक्री भी अपने को पर्याप्त मुनाफा दे ही तो रही है .... यही तो बात है बाऊजी ...पर्याप्त नहीं हो रहा है ...अभी तो दोनों बच्चे भी बड़े हो रहे हैं ...उनकी महँगी पढ़ाइयों के खर्चें ...ये हर दिन बढ़ती महँगाई ...कैसे चलेगा ....

वास्तव में तो यह बात नहीं है संजू...सच्चाई तो यह है कि अंग्रेजी दवाइयों की कम्पनियाँ अन्धाधुन्ध मुनाफ़ा देती हैं ...डॉक्टरों को भी मोटा कमीशन देती हैं ...इसलिए डॉक्टर के पास जाते ही वह भी अंग्रेजी दवाइयों का महीने-दो महीने का कोर्स भी लिख ही देता है ....और हक़ीकत तो यह है कि तुझे कम मेहनत में ज्यादा कमाई का लोभ आ गया है ...

बाऊजी के अनुभव से कोई भी बात भला छिपी भी कैसे रहती ...?

किन्तु बाऊजी ...व्यापारी लोभ नहीं करेगा तो आगे कैसे बढ़ेगा?

लोभ और लाभ में फर्क होता है बेटा ...लाभ में भी सन्तुष्टि से ही शान्ति कायम रहेगी ...लेकिन जहाँ लाभ बढ़ता है वहाँ लोभ भी बढ़ता ही है ...और लोभ अशान्ति का मूल है । नैतिकतायुक्त व्यापार से जितना भी लाभ मिले उसमें सन्तुष्ट होना ही बुद्धिमानी है ...और हाँ तुम्हारा यह निर्णय कि ...पुरानी दुकान को नए ज़माने के हिसाब से नई स्टाइल में करना तो समझ आता है ...किन्तु ये महँगाई की दलीलों के पीछे तुम्हारा लोभ भी नज़र आ रहा है । सुनो ...जो देशी दवाइयों का व्यापार तुम अपने शहर में कर रहे हो उसी व्यापार को और बढ़ाकर दूसरे शहरों और अन्य राज्यों में भी फैला सकते हो ...उससे तुम्हारी बिक्री और मुनाफ़ा दोनों ही बढ़ेगा .....

बाऊजी ...क्या आप नहीं चाहते कि मैं भी बहुत पैसा वाला ...बड़ा आदमी बनूँ...?

बेटा ...बड़ा आदमी वही होता है जिसकी सोच बड़ी होती है ...और आज क्या कमी है हमारे पास ...शहर में बंगला-गाड़ी हैं ...गाँव में हवेली है ..खेत खलिहान हैं ...अपने परिवार की गौशाला है ...और जितना हमें जीने को चाहिए ...उतना तो साल की एक फसल से भी मिल जाता है ....तो ...और क्या चाहिए?

पर मुझे और भी बहुत कुछ चाहिए बाऊजी ... अंग्रेजी दवाइयों का व्यापार शुरू करने के बाद बड़े-बड़े

अरबपतियों से मेरा सम्पर्क हुआ है ...बड़े-बड़े व्यापारी मेरे दोस्त बन गए हैं ...कई नामी और रईस डॉक्टरों के साथ मेरा उठना-बैठना है ....अब मैं भी दवाइयों की ...मेडिकल उपकरणों की बड़ी फैक्ट्री शुरू करूँगा... मैंने बहुत बड़े सपने देखे हैं बाऊजी ....एक बहुत बड़ा अस्पताल भी बनाऊँगा...जिस पर आपका नाम .....भी .....

अच्छा ...तो यह बात है ...यानी कमी हमारे दिए संस्कारों में नहीं, बल्कि इन कॉर्पोरेट व्यापारिक घरानों के साथ तेरी संगत का परिणाम है यह .... सुन बेटा मैंने देशी दवाइयों का व्यापार शुरू किया लोगों को वाज़िब मूल्य पर आरोग्य प्रदान करने के लिए ...जिससे लोगों को स्वास्थ्य का भी लाभ हो और हमारी घर गृहस्थी भी आराम से चल सके। अनेक गरीब मरीजों से तो हम दवाइयों के पैसे भी नहीं लेते ...क्योंकि मोल दवाओं का तो हो सकता है, पर दुआओं के मोल की कोई सीमा नहीं ...वे तो अनमोल होती हैं ...और मेहनत, ईमानदारी के साथ-साथ ऐसी दुआओं के कारण ही हमने गाँव से शहर आकर नाम और पैसा दोनों कमाये हैं। उससे जो कुछ मुझे सीमित कमाई होती ...उसमें मैं सन्तुष्ट रहा। लेकिन यह आधुनिक अस्पताल बनाकर तुझे सेवा का धाम नहीं, बल्कि पैसों का महल बनाना है... आज अनीति का जो पैसा...तुम्हें सब कुछ लग रहा है वही पैसा एक दिन खटकने लगेगा...याद रखना संजू...लोभ के वश अपने सिद्धान्तों से समझौता करने वाले को पछताना ही पड़ता है।

ठीक है बाऊजी ...आप मुझे सोचने के लिए कुछ दिनों का समय दीजिये ....मैं आपको बताता हूँ... और वह कुछ दिनों का समय इतने वर्षों के बीतने पर भी नहीं आया ...आता भी कैसे? लोभ और सन्तोष तो जीवनधारा के विपरीत किनारें जो हैं।

उस दिन के बाद बाऊजी ने उस विषय पर कुछ कहा तो नहीं ....पर हाँ अब उनका ज़्यादातर समय धर्म-ध्यान में ही बीतता रहा ....

कितना दिल दुःखा होगा उनका ....कितना ज्यादा .... हवाई जहाज ज़मीन पर क्या उतरा ....अचानक कुछ बूँदें हथेली पर गिरीं ...तो संजयजी के विचारों की लड़ी टूट गई ... आँखों से बहा पानी तो कुछ बूँदों तक ही सीमित था ...पर एअरपोर्ट पर हो रही सर्दबारिश का पानी भी ...दिल में उठे इस तूफ़ान के सामने कुछ भी तो नहीं ...!

गाड़ी तेजी से दौड़ रही थी एअरपोर्ट से गाँव की तरफ ....और पिछले कुछ सालों में संजयजी की किस्मत ने भी खूब तेजी दिखाई ....दुकान के बिल्कुल पास वाली बड़ी जमीन खरीदी थी पूरे 21 करोड़ में .... शहर का सबसे बड़ा अस्पताल बनाने के लिए ... वही सपनों वाला। जनवरी में ही अचानक एक मेडिकल उपकरणों की तैयार फैक्ट्री भी आधे दामों में खरीदी थी ....जिसमें सम्यक् की देखरेख में मेडिकल उपकरण बनकर सभी अस्पतालों में सप्लाई हो रहे थे ....उसमें भी रेट तो संजयजी ही तय करते थे ....क्योंकि सम्यक् को मोटा मुनाफ़ा कमाना कहाँ आता है ..? फिर करीब साल भर पहले ही बेटी सुहानी की शादी की और कुछ महीने के बाद बेटे की भी शादी हुई सलोनी से ...कुल मिलाकर सब ओर से खूब पैसा भी बरस रहा था ...रहन सहन एकदम राजाशाही ...खाने पीने में भी छप्पनभोग और नित नए पकवान ...कुछ भी तो कमी नहीं थी ...कुछ सुख भी महसूस हो रहा था ... किन्तु बाऊजी ....बाऊजी के मन का दुःख भी छिपा नहीं था। जीवन भर ईमानदारी की दाल-रोटी खाने वाले को वैसे भी अनैतिकता की कमाई से बने पकवान कैसे सुहाते? पर भले ही बाऊजी कुछ भी न कहते, लेकिन दर्द तो सभी समझ ही रहे थे। अम्माजी भी और खुद संजयजी भी...!

बाऊजी ने अम्मा जी को कहा भी कि .... दोनों गाँव की हवेली में रह लेंगे ...खेत-खलिहान की आमदनी से भी पीछे का जीवन तो आराम से गुज़र जायेगा ...और धर्मध्यान का, साधु-सन्तों के समागम का लाभ ...उनको आहार-पानी बहराकर सुपात्रदान का महान् लाभ ...गाँव में तो निरन्तर मिलेगा ...पर

...इसे इकलौते बेटे-बहू पर राग कहें या पोते-पोती पर अनुराग ...अम्मा जी का मन नहीं बना! ऐसा नहीं था कि उनको गाँव में रहने का मन नहीं था ...बल्कि उन्हें शहर छोड़ने का बिल्कुल भी मन नहीं था ...पर मन न हो तो भी शरीर तो छोड़ना ही पड़ता है ...और कुछ दिनों के बाद मामूली-सा बुख़ार क्या आया ... अम्माजी स्वर्ग सिधार गयी।

बैठक के अगले दिन बाऊजी ने सामान बाँध लिया था ...सभी की आँखों में आँसू थे ..पर संजयजी की आँखों में आँसुओं के साथ-साथ दिल में अपराध-बोध भी था ...लोभ के तले दबा हुआ ...बहुत मन हुआ कि सब लोभ के धन्धे छोड़कर ... माया के फंदे तोड़कर ...बाऊजी को रोक लें ...पर खुद ही खुद को नहीं समझा पा रहे थे ...पर बाऊजी तो सब समझ ही रहे थे ...कन्धे पर हाथ रखकर बोले ...संजू बेटा ...मैं मेरे सन्तुष्टिपूर्ण जीवन के लिए गाँव जा रहा हूँ ...तुम सब लोग प्रेमपूर्वक रहना ....और हमेशा की तरह प्रसन्नचित्त मुद्रा से मांगलिक सुना कर गाड़ी में बैठ गए।

आधुनिक अस्पताल के निर्माण का कार्य शुरु करना ही था कि ...कोरोना के कारण मार्च में 21 दिन का लॉकडाउन लग गया ...सब धन्धे तो लगभग मन्दे ही थे ...पर मेडिकल दुकानों की खूब चाँदी हो गई ...और संजयजी की मेडिकल दुकान तो सोना उगलने लगी ....ग्राहकों की इतनी लम्बी लाइन कि 18 घण्टे दुकान खुली रहती और अगले दिन सुबह दुकान खुलने से पहले ही फिर ग्राहकों की बाढ़ तैयार! जनता में रोग का तो भय भी अजीब होता है... न चैन से सोने देता है न चैन से जीने देता है ... संजयजी भी कहाँ चैन में थे ...छप्परफाड़ कमाई से भोजन की भूख और पानी की प्यास ...सब मिट सी गई थी ...पर हाँ, लोभ की विकराल प्यास और बड़ा आदमी बनने की भूख कई गुना बढ़ चुकी थी ...!

इधर फैक्ट्री से मास्क, सेनिटाइजर, इञ्जेक्शन इत्यादि का उत्पादन भी ...और विक्रय भी ...जोरो पर था ...और फिर उग्र हुआ तूफ़ान ....कोरोना का भी और बिक्री का भी ...मास्क और सेनिटाइजर की। पूरे भारत से करोड़ों मास्क के आर्डर भी आ चुके हैं और पूरा पेमेण्ट भी एडवान्स में मिल रहा है। 2 रुपए का मास्क 20 रुपए में बेचा ...150 रुपए लीटर का सेनिटाइजर 800 रुपए लीटर में बिक रहा है ...140 रुपए का दर्द निवारक इञ्जेक्शन 2-3 हजार तक भी बिक रहा है ...सम्यक् ने कहा भी ...पापा ..इतने ज्यादा रेटों में माल बेचना यानी जनता के साथ नाइंसाफी है ...अन्याय है ...लेकिन संजयजी ने दो टूक कह दिया सम्यक् ...जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो ...तुम बस फैक्ट्री में माल बनवाते जाओ...किसको बेचना ....कितने में बेचना ...ये सब मैं सम्भाल लूँगा ....घर बैठे गंगा आई है बेटा...ऐसी महामारी हर साल थोड़ी न आती है ...जितना कमा सकते हो उतना कमा लो ...और अभी तो नए कोरोना की विदेशी वैक्सीन में भी करोड़ों की कमाई होगी ...और सम्यक् की उदासी भी कहाँ दिख पाई संजयजी को...लालच का मोटा चश्मा जो लगा था आँखों पर।

करोड़ों रुपए के ऑर्डर आ गए हैं ...चौबीसों घण्टे फैक्ट्री चल रही है ...और सभी अस्पतालों में सप्लाई भी ....साँस लेने की भी फुर्सत नहीं है ... कई नामी अस्पतालों के अनेक डॉक्टरों से भी पूरी जान-पहचान थी ..... डॉक्टर से लेकर कम्पाउण्डर तक का कमीशन बँधा हुआ है ....दिन तो खूब नोट गिनने में गुज़र रहे थे ...परन्तु रात को सोते समय ...बाऊजी के संस्कार चोट करते ....यानी दिन नोट गिनने में और .रातें चोट सहने में ...गुजर रही थीं। भीतर में ही एक युद्ध-सा शुरू हो चुका है ..एक तरफ लोभ और लाभ ...दूसरी तरफ बाऊजी और संस्कार! अन्तरात्मा गवाही नहीं दे रही थी ...पर लोभ की भारी-भरकम चट्टान ...के नीचे दबी उस अन्तरात्मा की आवाज़ भी रात के एकान्त में सुनाई तो दे ही रही थी ...परन्तु संजयजी तो चाहकर भी सुनना ही कहाँ चाह रहे थे ....कानों में

दौलत की खनक और शोहरत का शोर जो सुहा रहा था।

अचानक झटका-सा लगा ..... गाड़ी के ब्रेक लगे थे ...गाँव के अन्दर घुसते ही सामने शायद कच्ची सड़क थी ... गली के नुक्कड़ तक पहुँचे ही थे ... सन्त मुनिराज स्थानक से बाहर पधारते हुए दिखे ...शायद विहार कर रहे थे ....संजयजी ने वन्दन किया ....

दया पालो ...आप तो श्रावक श्रेष्ठ सम्पतराजसा के सुपुत्र हैं न ....

जी महाराज साहब ....

म.सा. : बहुत ही किस्मत वाले हो जो आपको ऐसे श्रमणोपासक पिता की छत्रछाया मिली ....उन्होंने अपना जीवन और अन्त दोनों सार्थक कर लिए।

संजयजी : खूब कृपा करी म.सा. आपने ....अभी तो आपका लाभ और मिलेगा न म.सा.?

म.सा. : नहीं ...बात ऐसी है कि अभी कुछ कारण विशेष से समीपवर्ती गाँव की ओर विहार हो रहा है ...फिर जैसा अवसर ...और म.सा ने मांगलिक फरमाई।

हवेली के बाहर तक पहुँचे तब तो एकदम ही शान्त माहौल ...पर नज़दीक पहुँचे तो जयकारों की आवाज़ सुनाई दी ... लोग कह रहे थे .....ऐसा संथारा तो किस्मत वालों को ही आता है ...देखो तो ...कितनी शान्ति और समाधि है चेहरे पर ...संजयजी के पाँव तो वहीं जम गए ...अब न तो कुछ बोल पा रहे और न ही कुछ सुन या देख पा रहे ...चक्कर-सा आया और ...तभी सम्यक् ने सम्भाल लिया ....पापा सम्भालो अपने आप को ...सरलाजी भी सम्भालने में लगी ...सम्भल तो गए ...पर आँखों से आँसू नहीं सम्भल पायें ...काश ...मैं पहले पहुँच जाता ....पर बाबूजी की खुली-सी आँखें जैसे अभी भी कुछ बोल रही हों ...संथारा तो सीझ गया है ...दीपक बुझ गया है ...पर उनके चेहरे पर शान्त समाधि की ज्योति ...जैसे अलग ही राह दिखाने को तत्पर-सी है।

अर्थी को कन्धा देते हुए भी पैर लड़खड़ा ही रहे थे....कुछ देर बाद जब अन्तिम संस्कार कर के लौटे...फिर कमरे में जाकर निढ़ाल होकर बैठे ही थे ....कि गोविन्द ने एक डायरी देते हुए कहा ...बाऊसा तो आपका इन्तजार करते ही रह गए सेठजी ...आपके लिए यह दी है...

'मेरी वसीयत' ...डायरी के अन्दर पहले पेज पर बाऊजी ने कुछ लिखा था ...

प्रिय संजू, बेटा तुम्हारे मन में इस डायरी को देखकर प्रश्न उठा होगा ...कि बाऊजी तो पहले ही सब कुछ मेरे नाम कर चुके हैं ....तो फिर इस वसीयत में क्या है? बेटा वह मेरी सांसारिक वसीयत थी ...और यह मेरी **आध्यात्मिक वसीयत** है। कोरोना के कारण देश भर में लागू मार्च 2020 के 21 दिनों के लॉकडाउन में असीम गुरुकृपा से मैंने **'उपासकदशाङ्गसूत्र'** का स्वाध्याय करते हुए ... .प्रतिदिन 1 विषय पर पूर्ण चिन्तन-मनन कर एक एक पेज लिखा ...सो ...21 दिनों में पूरे 21 विषय हुए ..इन 21 विषयों को मिलाकर ही यह आध्यात्मिक वसीयत बनी है ...यह मैं तुम्हारे नाम करता हूँ ...तुम सांसारिक भागदौड़ के साथ में यह आध्यात्मिक वसीयत सही तरीके से नहीं पढ़ पाओगे ...उसके लिए तुम्हें पूर्ण एकान्त में रहना होगा ....हाँ मुश्किल जरूर है, पर असम्भव नहीं ...इसलिए मेरी एक छोटी-सी इच्छा है कि जिस तरह इन 21 विषयों को लिखने में मुझे 21 दिन लगें ....वैसे ही तुम भी 21 दिनों तक सारी दौड़धूप बन्द करके अपने आप को आध्यात्मिक लॉकडाउन यानी पूर्ण एकान्त में रखो ...और प्रतिदिन एक-एक विषय को पढ़कर...चिन्तन-मनन करके ...अपने जीवन को तोलों... तथा उसके अनुसार स्वयं के जीवन से अवगुणों को बाहर करो और सद्गुणों को धारण करो ...यही मेरा मंगल आशीर्वाद है। तुम्हारा हितैषी पिता ...गुरु चरणरज **सम्पतराज।**

(क्रमशः)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 62
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

5. न्याय से विपरीत पाया धन, वास्तव में धन नहीं है, वरन् नकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है। ऐसा कोई भी लाभ अथवा सहायता, जिसके न्याय संगत पात्र आप नहीं बल्कि कोई और है, और न्याय विरुद्ध वह आपको दिया जा रहा है, तो विश्वास कीजिये, वह लाभ या सहायता आपके निरन्तर पतन एवं पराभव का न केवल प्रथम चरण है, बल्कि वह भविष्य में आपकी पराजय तथा विनाश का मूल कारण भी बनेगा। न्याय विरुद्ध अर्जित धन एवं लाभ अपने साथ न केवल नकारात्मक ऊर्जा का स्रोत लेकर आता है, अपितु वह उसके न्याय संगत पात्र की उन आहों एवं बददुआओं को भी लेकर आता है, जो अन्तहीन एवं निरन्तर आर्थिक हानि के साथ ही सम्पूर्ण कुल के पराभव का कारण भी बनती हैं। अतः न्याय के विपरीत प्राप्त होने वाले धन एवं लाभ को अपने एवं अपने परिवार के जीवन से दूर ही रखना श्रेयस्कर होगा।
6. व्यक्ति को समाज कल्याण के लिए बिना आसक्ति के काम करना चाहिए। आसक्ति का अर्थ है जहाँ स्वयं का स्वार्थ समाहित हो। हमें सबके कल्याण हेतु ही कर्म करना है और हमारा हर कृत्य सर्वत्र समाज के सम्पूर्ण हित हेतु होना चाहिए। समाज के कल्याण का अर्थ है, सबके लिये समान रूप से लाभ देने वाला। यदि हमारे हृदय में आसक्ति आ गई, चाहे वह स्वयं के लाभ हेतु हो अथवा अपने किसी प्रिय या सम्बन्धी के प्रति, तो हमारे द्वारा किया गया कार्य तथा सेवा स्वयं अपने अथवा उस व्यक्ति विशेष के लाभ को साधने हेतु ही होगी, जिससे सर्व-समाज की सेवा अथवा समाज के हित की भावना को आघात पहुँचेगा। अतः जब भी समाज के हित की बात हो तो आसक्ति से दूर रहें।
7. ज्ञान के लिए किये गए निवेश में हमेशा अच्छा प्रतिफल प्राप्त होता है। ज्ञान एक ऐसी पूँजी है जिसे न तो कोई छीन सकता है और न ही चुरा सकता है। यह सदा साथ रहने वाला एक ऐसा निवेश है, जो हर देश, काल एवं परिस्थिति में साथ देता है। इस अति-विशिष्ट पूँजी से आकर्षित होकर अन्य लाभ तथा सेवाएँ स्वयंमेव ही उपलब्ध हो जाती हैं। उनके लिए कोई बहुत खास प्रयास नहीं करना पड़ता। ज्ञान स्वयं ही हर तरह की पूँजी, लाभ एवं सुविधा को आकर्षित करने वाला मूलकारक है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम इस पूँजी के प्रकाश से जन-जन को आलोकित करते हुए इसका हर स्तर पर उपयोग करें। यह निर्बाध एवं असीमित मात्रा में निरन्तर फल प्रदान कर सुख देने वाला अद्भुत निवेश है। निरन्तर और अन्तिम क्षण तक ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा को अक्षुण्ण रखें।
8. तीन शब्द हैं : इतिहास, विज्ञान और धर्म तीनों की पोथियाँ अलग-अलग हैं। इतिहास सदा अतीत में उलझा रहता है। वह सदैव अतीत का गुणगान करता है.. जैसे कि ... पहले जमाना कितना सस्ता था लोग कितने भले और नैतिक होते थे राम राज्य था लोग घरों के दरवाजों पर कभी ताले नहीं लगाया करते थे राजा लोग भी कितने उदार और परोपकारी हुआ करते थे.... आदि-आदि। विज्ञान हमेशा भविष्य को निहारता है वह कहता है कि आने वाले समय में ऐसे ऐसे अनुसन्धान मैं कर दूँगा कि कहीं कोई समस्या नहीं रह जायेगी .... इतनी सुविधाएँ और साधन मैं खोज लूँगा। आदमी को चाँद का

(शेषांश पृष्ठ 64 पर)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 63
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (10)

(श्रुतज्ञान के भेद)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–मति ज्ञान द्वारा जाने हुए विषय में और अधिक स्पष्ट बोध होना, हेय-उपादेय का विवेक होना, कार्य-कारण, वाच्य-वाचक सम्बन्ध स्थापित करने का सामर्थ्य प्रकट होना, श्रुतज्ञान कहलाता है। यह श्रुतज्ञान भी इन्द्रियाँ और मन की सहायता से जीव को प्राप्त होता है। सुनकर-जानने की प्रधानता होने से ऐसा भी कहा जाता है कि जो सुनकर जाना जाये, उसे श्रुतज्ञान कहते हैं। सुनकर जानने में सुनने की प्रमुखता होने के साथ ही गौण रूप में देखकर, सूँघकर, चखकर, स्पर्शकर जानना भी इसमें समाहित समझना चाहिए।

जिज्ञासा– श्रुतज्ञान के कितने व कौन-कौन से भेद बतलाये गये हैं?

समाधान–श्रुतज्ञान के चौदह भेद बतलाये हैं, जो इस प्रकार हैं-1.अक्षर श्रुत, 2. अनक्षर श्रुत, 3. संज्ञी श्रुत, 4. असंज्ञी श्रुत, 5. सम्यक् श्रुत, 6. मिथ्या श्रुत, 7. सादि श्रुत, 8. अनादि श्रुत, 9. सपर्यवसित श्रुत, 10. अपर्यवसित श्रुत, 11. गमिक श्रुत, 12. अगमिक श्रुत, 13. अङ्गप्रविष्ट श्रुत और 14. अङ्गबाह्य श्रुत।

जिज्ञासा– अक्षर श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–विभिन्न प्रकार के अक्षरों के उच्चारण से जो ज्ञान होता है, वह अक्षर श्रुतज्ञान कहलाता है। अक्षर श्रुतज्ञान तीन प्रकार का है-1. संज्ञा-अक्षर (संज्ञाक्षर), 2. व्यञ्जन-अक्षर (व्यञ्जनाक्षर), 3. लब्धि-अक्षर (लब्ध्यक्षर)।

जिज्ञासा– संज्ञाक्षर श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–विभिन्न प्रकार के आकार से, मोड़ से युक्त जो अक्षर कागज, ताड़पत्र आदि पर लिखे जाते हैं, वे संज्ञाक्षर कहलाते हैं। प्राचीन काल में प्रचलित एवं शास्त्रों में वर्णित हंसलिपि, भूतलिपि आदि अठारह प्रकार की लिपियाँ व वर्तमान में प्रचलित हिन्दी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, कन्नड, तमिल आदि अक्षर लिपिबद्ध होने से और आकृति-मोड़ स्वरूप होने से इन्हें संज्ञाक्षर जानना चाहिए। इन लिपियों का ज्ञान संज्ञाक्षर श्रुतज्ञान कहलाता है।

जिज्ञासा– व्यञ्जनाक्षर श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–'अ' से लेकर 'ज्ञ' तक के बावन अक्षरों को व्यञ्जनाक्षर कहते हैं। हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी या दूसरी कोई भी भाषा बोली जाये, उस भाषा के उच्चारण में 'अ' से लेकर 'ज्ञ' तक के बावन अक्षर सहायक अथवा निमित्त भूत बनते ही हैं। इसलिए इन अक्षरों का उच्चारण व्यञ्जनाक्षर कहलाता है।

जिज्ञासा– लब्ध्यक्षर श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–उच्चारण किये जाने वाले एवं लिखे गये अक्षरों का अर्थ-भावार्थ समझना लब्ध्यक्षर श्रुतज्ञान कहलाता है। वक्ता के शब्दों में तथा शास्त्रादि पुस्तकों के शब्दों में रहे हुए भाव को, आशय को समझना लब्ध्यक्षर श्रुतज्ञान है। आत्मा में जो ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से समझने की सामर्थ्य प्रकट होती है, वह भी लब्ध्यक्षर रूप ही जाननी चाहिए।

अक्षर श्रुतज्ञान के उपर्युक्त तीन भेदों में से प्रथम दो भेद जड़ रूप हैं तथा अन्तिम भेद अर्थ का बोध कराने वाला होने से भाव रूप है।

जिज्ञासा– अक्षर श्रुतज्ञान के प्रथम दो भेद जड़ रूप होते हुए भी उन्हें श्रुतज्ञान क्यों कहा गया है?

समाधान–कार्य में कारण का आरोप करके प्रथम दो

भेद भी श्रुतज्ञान रूप माने गये हैं। लेखन या शब्दों के द्वारा व्यक्ति के भाव प्रकट होने से वे भावरूप ज्ञान में कारण रूप बनते हैं। इसलिए प्रथम के दो भेद भाव श्रुत के अर्थात् लब्धि अक्षर के साधन हैं। अत: ज्ञानरूप कार्य में कारण रूप प्रथम दो भेदों को अक्षर श्रुतज्ञान मानने में कोई बाधा नहीं है।

जिज्ञासा– अनक्षर श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–अक्षरों के उच्चारण के बिना खँखार, अँगुलियों का इशारा, छींक, ताली बजाना, चुटकी बजाना, सिर हिलाना, आँखों के इशारे आदि से जो ज्ञान होता है, वह अनक्षर श्रुतज्ञान कहलाता है। हाथ, चेहरे आदि की चेष्टाओं के द्वारा यह जानना कि वह मुझे बुला रहा है अथवा मना कर रहा है आदि जानना अनक्षर श्रुतज्ञान कहलाता है।

जिज्ञासा– संज्ञी श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–जिन जीवों के पास मनोलब्धि है, जिनमें चिन्तन-मनन करने की शक्ति है, जो हेय-उपादेय का निर्णय कर सकते हैं, भूत-भविष्य का सम्यक् विचार कर सकते हैं, वे संज्ञी जीव कहलाते हैं। ऐसे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के द्वारा मन और इन्द्रियों की सहायता से जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसे संज्ञी श्रुतज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा– संज्ञा कितने प्रकार की बतलायी गई है?

समाधान–संज्ञा मुख्य रूप से तीन प्रकार की बतलायी है-1. हेतुवादोपदेशिकी, 2. दीर्घकालिकी, 3. दृष्टिवादोपदेशिकी।

1. जिस संज्ञा में मात्र वर्तमान कालीन इष्ट-अनिष्ट का विचार हो सके, भूत-भविष्य की कोई विशेष विचारणा नहीं हो सके, उसे हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा कहते हैं। यह संज्ञा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रियादि असंज्ञी जीवों में मुख्य रूप से होती है।

2. जिस संज्ञा में वर्तमान, भूत एवं भविष्य तीनों कालों का विचार हो सके, स्व-पर के हित का निर्णय हो सके, उस संज्ञा को दीर्घकालिकी संज्ञा कहते हैं। यह संज्ञा मन वाले संज्ञी जीवों में होती है।

3. तीर्थंकर भगवन्तों की आज्ञा के अनुसार जिसमें हेय-ज्ञेय-उपादेय का विचार हो सके, आत्म चिन्तन हो सके, उसे दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा कहते हैं। यह संज्ञा सम्यग्दृष्टि जीवों में होती है।

जिज्ञासा– असंज्ञी श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान– बिना मन वाले जीवों को इन्द्रियों की सहायता से जो श्रुतज्ञान प्राप्त होता है, उसे असंज्ञी श्रुतज्ञान कहते हैं। हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा वाले जीवों का श्रुतज्ञान असंज्ञी श्रुतज्ञान कहलाता है। दूसरी अपेक्षा से कहें तो एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों का श्रुतज्ञान असंज्ञी श्रुतज्ञान कहलाता है।

जिज्ञासा– सम्यक् श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान–सम्यग्दृष्टि जीवों का श्रुतज्ञान सम्यक् श्रुतज्ञान कहलाता है। सम्यक् श्रुतज्ञान दो प्रकार का है- 1. द्रव्य सम्यक् श्रुतज्ञान और 2. भाव सम्यक् श्रुतज्ञान।

1. द्रव्य सम्यक् श्रुतज्ञान अर्थात् सम्यक् दृष्टि जीवों के द्वारा रचित ग्रन्थ, शास्त्र, सूत्र आदि द्रव्य सम्यक् श्रुतज्ञान कहलाते हैं। जैसे-आचाराङ्गसूत्र, सूत्रकृताङ्गसूत्र, स्थानाङ्गसूत्र आदि-आदि।

2. भाव सम्यक् श्रुतज्ञान अर्थात् सम्यक् दृष्टि जीवों के द्वारा ग्रहण किया गया ज्ञान भाव सम्यक् श्रुतज्ञान कहलाता है।

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

(शेषांश पृष्ठ 62 का)

निवासी बना दूँगा.. आदि-आदि। इतिहास अतीत की गाथाएँ गाता है और विज्ञान भविष्य को सँवारने की बात करता है। पर हमें तो वर्तमान में जीना है। वर्तमान को सजाने की बात कौन करेगा? उसका नाम है धर्म! धर्म का सन्देश है-तुम अपने वर्तमान को सजाओ, भविष्य अपने आप सज जायेगा। वर्तमान को सजाने का अर्थ है-अपने आचरण को सद्गुणों से सजाना। **(क्रमश:)**

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 65
ISSN 2249-2011

रिपोर्ट

आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला में वीतराग-ध्यान, प्रार्थना एवं आगमदृष्टि पर चर्चा

डॉ. धर्मचन्द जैन

(1) 4 अक्टूबर, 2020–अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी के उपलक्ष्य में चल रही आचार्य हस्ती-स्मृति वेबिनार व्याख्यान माला-5 के अन्तर्गत 4 अक्टूबर 2020 को पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी एवं ध्यान साधक, स्वाध्यायी **श्री रणजीतसिंहजी कूमट** ने **'वीतरागध्यान और कषाय-विजय'** विषय पर प्रेरक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि दु:ख का आधुनिक नाम तनाव है तथा हमने भौतिक साधनों को सुख का स्वरूप मान लिया है, यही तनाव का प्रमुख कारण है। ध्यान-साधना हमारा तनाव दूर करती है एवं हमें हर परिस्थिति में समता में रहना सिखाती है। कषाय को जीतने में भी ध्यान-साधना उपयोगी है। आचाराङ्गसूत्र में अपने आपको देखने का निर्देश मिलता है तथा यह कहा गया है कि जो क्रोध दर्शी है वह मानदर्शी है, तथा जो मानदर्शी है वह मायादर्शी है आदि। इस प्रकार तटस्थ भाव से देखना वीतराग ध्यान-साधना है। श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा ने इस ध्यान-साधना का सूत्रपात किया था। वीतराग ध्यान-साधना से समता पुष्ट होती है, कषाय शान्त होते हैं तथा सबके प्रति मैत्री भाव का विकास होता है। उन्होंने इस ध्यान-साधना की आवश्यकता को प्रतिपादित किया तथा आचाराङ्गसूत्र को ध्यान-साधना का प्राचीन प्रमुख स्रोत बताया।

इस वेबिनार में पद्मविभूषण **श्री डी. आर. मेहता** ने भी सम्बोधित किया तथा ध्यान-साधना का जीवन में महत्त्व प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि श्री लोढ़ा साहब ने विभिन्न जैन ग्रन्थों के आधार पर वीतराग ध्यान प्रणाली प्रस्तुत की। प्राचीनकाल में प्राय: ध्यान की पद्धति समान ही प्रचलित थी। इसलिए विपश्यना एवं वीतराग ध्यान-साधना में समानता हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। वेबिनार में प्रश्नोत्तर भी हुए।

टिप्पणी करते हुए **डॉ. धर्मचन्दजी जैन** ने कहा कि आचार्य हस्ती ध्यान-साधना के माध्यम से शरीर के साथ चेतना की भिन्नता का अनुभव करने में दक्ष थे। अशान्तचित्त को शान्त करने के लिए जितने उपाय हैं, उनमें ध्यान साधना प्रमुख है। कर्मनिर्जरा भी इससे ही सर्वाधिक होती है। ध्यान-साधना के माध्यम से ही कोई केवलज्ञानी बनता है। ध्यान में मन तब लगता है जब हिंसा, झूठ, चोरी आदि का त्याग करने के साथ भोजन पर नियन्त्रण हो। इस जीवन में कार्यकुशलता भी ध्यान से सम्भव है। आर्त्त और रौद्र नामक अशुभ ध्यान को त्याग कर ध्यान-साधना केन्द्रित होनी चाहिए।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत ने प्रमुखवक्ता एवं अतिथियों का स्वागत किया। कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्दजी डागा** ने कहा कि इस वेबिनार से अच्छी प्रेरणा प्राप्त हुई है। वेबिनार का कुशल सञ्चालन मण्डल के **कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा** ने सुन्दर रीति से किया।

(2) 8 नवम्बर, 2020–प्रमुख वक्ता के रूप में **डॉ धर्मचन्दजी जैन** ने 8 नवम्बर, 2020 को आयोजित वेबिनार में **'आचार्य श्री हस्ती की दृष्टि में प्रार्थना की महत्ता-6'** का प्रतिपादन करते हुए कहा कि प्राचीन साहित्य में वीतराग प्रभु से प्रार्थना तो की गई है, किन्तु 'प्रार्थना' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। स्तव, स्तुति, स्तोत्र, भजन, मन्त्र आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। पूज्य

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. ने 1962 में जयपुर के लालभवन में जो प्रार्थना के सम्बन्ध में प्रवचन दिए उनका 'प्रार्थना प्रवचन' पुस्तक के रूप में प्रकाशन हुआ है। प्रार्थना के सम्बन्ध में इस पुस्तक में जितना सुन्दर विवेचन हुआ है उतना अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। आचार्य श्री हस्ती तीन प्रकार की प्रार्थना का प्रतिपादन करते हैं- 1. स्तुति प्रधान प्रार्थना, 2. भावना प्रधान प्रार्थना और 3. याचना प्रधान प्रार्थना। याचना प्रधान प्रार्थना निकृष्ट कोटि की है, भगवान से जो हम आत्मगुणों की याचना करते हैं, वह याचना तो फिर भी ग्राह्य है, किन्तु भौतिक धन-सम्पदा, पुत्र-पौत्र आदि की याचना निकृष्ट है। वीतराग प्रभु से वीतराग बनने की याचना करते हैं तो हम वीतराग बन सकते हैं। 'आरुग्ग बोहि लाभं' में बाहर ही नहीं भीतरी आरोग्य एवं बोधि लाभ की याचना की गई है। कहीं भगवान की स्तुति करके भी उनके गुणों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति की जाती है, जिससे उन गुणों का प्रभाव अपने जीवन पर प्रकट हो। 'भावना प्रधान' प्रार्थना में अपनी भावना व्यक्त की जाती है कि मैं भगवान का भक्त बन जाऊँ या मेरी आत्मशुद्धि हो जाय। 'सच्चा भक्त बन जाऊँ भगवान तुम्हारा अब मैं' इसी प्रकार की प्रार्थना है। स्तुति प्रधान प्रार्थना में वीतराग प्रभु के आन्तरिक गुणों एवं बाह्य प्रतिहार्यों आदि की स्तुति की जाती है। इस स्तुति प्रधान प्रार्थना में तन्मयता से उनके गुणों से एकात्मता स्थापित होती है। प्रार्थना के पाँच आवश्यक तत्त्व हैं-श्रद्धा, समर्पण, एकाग्रता, आत्म-निवेदन और आत्मशुद्धि। इन पाँच तत्त्वों के आधार पर प्रार्थना सफल होती है। पूज्य आचार्यश्री हस्ती ने कहा है कि प्रार्थना तुम्ब की तरह तारक है। भगवान यद्यपि हमें कुछ देते नहीं है किन्तु उनकी स्तुति से उसी प्रकार लाभ होता है जिस प्रकार वायु के सेवन से आरोग्य प्राप्त होता है।

इस वेबिनार में उपस्थित अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के **अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया** ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि-प्रार्थना, भौतिक वस्तुओं के लिए नहीं आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए होना चाहिए। प्रार्थना से अहं का नाश एवं विनय की अभिव्यक्ति होती है। प्रार्थना से ज्ञान-दर्शन-चारित्र की प्राप्ति होती है। प्रार्थना का एक अर्थ है पूर्ण तल्लीनता से निवेदन करना। प्रार्थना में नर को नारायण तथा पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने की शक्ति होती है।

मण्डल **अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत** ने प्रमुखवक्ता एवं अध्यक्ष माननीय टाटिया सा का स्वागत किया। **कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्दजी डागा** ने कहा कि प्रार्थना के सम्बन्ध में आज अद्भुत विचार प्रस्तुत हुए। प्रार्थना का लक्ष्य लौकिक नहीं, लोकोत्तर होना चाहिए। प्रार्थना तल्लीन होकर की जाने पर उसका विशेष फल प्राप्त होता है। **कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा** ने व्याख्यान माला का दक्षतापूर्वक सञ्चालन किया।

(3) 6 दिसम्बर, 2020-प्रमुखवक्ता **श्री प्रकाशचन्दजी जैन** (पूर्व प्राचार्य-महावीर विद्या पीठ, जलगाँव) ने आचार्य श्री हस्ती व्याख्यान माला वेबिनार-7 को सम्बोधित करते हुए **'आचार्य हस्ती की आगम दृष्टि एवं आगम साहित्य को देन'** विषय पर प्रकाश डाला। अध्यात्मयोगी, पूज्य आचार्य श्री हस्ती इस युग के एक महान् सन्त थे। उन्होंने सवाईमाधोपुर चातुर्मास के पूर्व चौका-प्रथा प्रारम्भ की एवं वह सफल रही। पूज्य आचार्य हस्ती में ऐसी आगम की शक्ति थी जिसके कारण वे जो सोचते थे, उस कार्य को स्वयं भी पूर्ण कर लेते थे एवं दूसरों से भी सम्पन्न करा लेते थे। 'आगमबलिया समणा' वाक्य पर उन्हें पूरा विश्वास था। आप्त पुरुषों के द्वारा जो जाना गया है वह आगम है। वे जीवन भर आगम के वाक्यों का आचरण करते रहे। आगमवचन वह औषधि है जो विषयों का विरेचन करती है तथा सब दुःखों का हरण करती है। उन्होंने अपने जीवन में आगमों को जीया ही नहीं, अपितु

आगमों को सरल भाषा में लोगों के लिए प्रस्तुत भी किया। उन्होंने दशवैकालिकसूत्र का अवचूरि के साथ सम्पादन 29 वर्ष की वय में किया। इसी तरह नन्दीसूत्र का भी उन्होंने विद्वत्तापूर्ण सम्पादन किया। उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिक सूत्र आदि आगमों का हिन्दी अनुवाद के साथ जो विवेचन किया है, वह विशेष उपयोगी है। प्रश्नव्याकरण, बृहत्कल्पसूत्र की टीकाओं का भी उन्होंने सम्पादन किया। प्रकाशजी ने डॉ. सागरमलजी के संथारे के साथ समाधिमरण की चर्चा करते हुए कहा कि श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा में विद्वानों की कमी है, इस सम्बन्ध में समाज के अग्रणी महानुभावों को विचार करना चाहिए। आचार्य हस्ती की प्रेरणा से आगमनिष्ठ विद्वान् तैयार करने के लिए दो संस्थाएँ प्रारम्भ हुई, किन्तु वर्तमान में उनकी विशेष उपलब्धि नहीं है। हम आगमनिष्ठा बढ़ाएँ एवं स्थानकवासी समाज में 25 विद्वान् तैयार करने का लक्ष्य रखें।

डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने कहा कि पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. आगमनिष्ठ सन्त थे एवं आगम की आचार-संहिता के अनुसार जीवन जीते थे। वे क्षमाशील, निरभिमानी, स्वाध्याशील, ध्यानी होने के साथ 'जहावाई तहाकारी' थे। अर्थात् जैसा कथन करते थे, वे वैसा ही जीते थे। त्रिगुप्ति के उत्कृष्ट पालक थे। दूसरे के गुणों को देखकर प्रमोद का अनुभव करते थे, वचन गुप्ति के साथ अल्पभाषी थे, कर्कश शब्दों का कभी प्रयोग नहीं करते थे। वे चेतना के स्तर पर अप्रमत्त थे। इस प्रकार उनकी आगमदृष्टि उनके जीवन में परिलक्षित होती थी। वे आत्मविजेता थे तथा वीतरागियों के चरित्र को लक्ष्य में रखते थे। उनका पण्डित मरण भी उनकी आगमदृष्टि का ही सूचक है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत** ने प्रमुखवक्ता का स्वागत किया। मण्डल के **मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ** ने वक्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने वेबिनार का निपुणतापूर्वक सञ्चालन किया।

(4) 3 जनवरी, 2021-इस वेबिनार व्याख्यानमाला के दो वक्ता थे-(1) शासन सेवा समिति के सह-संयोजक एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व अध्यक्ष **श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, जयपुर** तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **पूर्व अध्यक्ष श्रावकरत्न श्री कैलाशमलजी दूगड़, चेन्नई।** वेबिनार का विषय- **'क्यों बने मेरी श्रद्धा के केन्द्र आचार्यश्री हस्ती।'** प्रथम वक्ता के रूप में श्री कैलाशमलजी दूगड़ ने कहा कि जब वे साढ़े पाँच वर्ष के थे, उनके लघुभ्राता 3 वर्ष के एवं छोटी बहिन 20 दिन की थी, तभी उनके पिता का देहान्त हो गया था। माता श्रीमती पुष्पाबाईजी, जोधपुर वैष्णव परम्परा से थी। पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के सान्निध्य में उन्होंने जो सम्बल एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उससे सम्पूर्ण परिवार इस संकट से उबर गया। माताजी एक अच्छी स्वाध्यायी बन गई एवं वर्षों तक उन्होंने पर्युषण सेवाएँ प्रदान की। उनके सकारात्मक मोड़ को देखकर मेरी श्रद्धा बदल गई। सादड़ी सम्मेलन में जाने का मुझे अवसर मिला उस समय श्रमण एकता की घटना उल्लेखनीय रही। उसके अनन्तर जब मैं 24 वर्ष का युवक था तब आचार्यश्री ने श्रमणसंघ से पृथक् होने की घोषणा की, जो मुझे अखरी, किन्तु उसके पश्चात् जब मैंने देखा तो पाया कि आचार्यश्री का निर्णय सर्वथा उपयुक्त था। लगा कि सिद्धान्त सर्वोपरि होता है।

विहार-व्यवहार में कटुता को स्थान नहीं दिया। मतभेद हो सकता है, मनभेद नहीं होना चाहिए। चेन्नई में उनका चातुर्मास हुआ तो मेरी श्रद्धा और प्रगाढ़ हो गई। उस समय उनको नज़दीक से देखने का अवसर मिला। वे अप्रमत्त साधक थे। दिन में लेखन का कार्य चलता रहता था। आचार्यश्री दिव्यदृष्टि सम्पन्न एवं मितभाषी थे। उनके निकट बैठने से स्फुरणा का अनुभव होता एवं लगता कि साक्षात भगवान के दर्शन हुए हैं। उनसे

सामायिक का महत्त्व जाना, इसीलिए मैं प्रतिदिन सामायिक करता हूँ।

द्वितीय वक्ता के रूप में श्रावकरत्न श्री कैलाशचन्दजी हीरावत ने अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति में कहा कि आचार्यश्री हस्ती अहिंसा एवं करुणा से सम्पन्न महापुरुष थे। वे एक आगम पुरुष थे एवं भगवान के अनुपम प्रतिनिधि थे। मेरे व्यापार में जब घाटा लग गया था एवं हाँगकाँग के बड़े एक व्यापारी ने स्वयं को दिवालिया घोषित कर हम भाइयों का पैसा नहीं लौटाया तो स्थिति गम्भीर बन गई। मैं हाँगकाँग से निराश दिल्ली लौटा, जहाँ एक शादी में आए मेरे श्वसुर श्री उग्रसिंहजी बोथरा ने कहा कि आप जयपुर जाने से पूर्व पूज्य आचार्यश्री के दर्शन करें। मैं और धर्मपत्नी हैदराबाद के निकट पहुँचे तो आचार्यश्री हैदराबाद से 40 किमी. दूर ग्राम से विहार कर रहे थे। हम भी विहार में साथ हो गए। उस समय मेरे कोई विशेष श्रद्धा नहीं थी। 10 मिनट नंगे पाँव चलने पर अहसास हुआ कि ये सन्त कैसे इस गर्मी में नंगे पाँव चलते होंगे। एक फार्म हाउस में आचार्यश्री विराजे। हमने दर्शन किए। मैंने पत्नी से कहा-दर्शन हो गए, अब चलें। धर्मपत्नी ने कहा कि मांगलिक लेकर चलेंगे। आचार्यश्री जंगल से लौटकर आए तो आचार्यश्री से चर्चा हुई। उन्होंने पूछा तो व्यापार की मैंने वास्तविक स्थिति बतायी। आचार्यप्रवर ने कुछ देर बाद पूछा-धर्म में क्या करते हो? मैं उस समय न सामायिक करता था और न माला फेरता था। आचार्यश्री ने कहा-धर्म में दृढ़ता नहीं होगी तो ये स्थितियाँ होंगी। तेरे पिता उत्कृष्ट श्रावक थे। उनका अच्छा पुण्य था। तुम भी सुबह 27 लोगस्स एवं शाम 27 नमोत्थु णं जपना प्रारम्भ कर दे एवं माह में 40 सामायिक कर। मैं उस समय भी आश्वस्त नहीं था कि यह मैं कर पाऊँगा। मैं सोच रहा था-करना न करना तो मेरे में है। घर लौटने पर उदासीन बैठा रहता। पत्नी ने कहा-'ये ऐसे क्या बैठे हो, एक सामायिक कर लो।' धीरे-धीरे सामायिक करने लगा। प्रतिदिन दो सामायिक होने लगी। आज मैंने जीवन में अनुभव किया, जो व्यक्ति एक माला नहीं फेरता था, उसके जीवन में प्रतिदिन की दो सामायिक छूटी नहीं। हमारा व्यापार का घाटा एक साल के पूर्व आठ-दस माह में पूरा हो गया एवं स्थितियाँ बदल गईं। मेरे जीवन का यू-टर्न हो गया। मैंने जाना कि वे लब्धिधारी सन्त थे। वे किसी जीव को दुःखी देख ही नहीं सकते थे। वे तीर्थङ्कर तो नहीं थे, किन्तु मुझे लगता है कि तीर्थङ्कर जैसा एक जीव यहाँ से चला गया। मैं निवेदन करता हूँ सब दुःखों का अन्त धर्म में निहित है। आचार्यप्रवर के सामायिक एवं स्वाध्याय के सन्देश को हम हल्के में नहीं ले।

प्रारम्भ में दोनों वक्ताओं का वचनों से स्वागत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत** ने किया। मण्डल के **कार्याध्यक्ष डॉ. धर्मचन्द जैन** ने दोनों वक्ताओं के पश्चात् टिप्पणी करते हुए कहा कि-पूज्य आचार्यप्रवर संघहितैषी ही नहीं, सर्वहितैषी थे। वे वचनसिद्ध थे। जो यथावादी तथाकारी होता है तथा सत्यनिष्ठ जीवन जीता है उसका वचन सिद्ध होता है। वे लब्धि एवं सिद्धि सम्पन्न थे, किन्तु उनका प्रयोग नहीं करते थे, वे धर्म को ही औषधि के रूप में प्रयुक्त करते थे। जो भी उनकी सन्निधि में गया उसे अपनत्व दिया एवं दुःख निवारण में सहयोगी बने। वे श्रद्धा के केन्द्र बने धर्म के माध्यम से। धर्मसाधना से मन मज़बूत बनता है एवं संकट टल जाते हैं।

तदनन्तर प्रश्नोत्तर भी हुए जिसमें कहा गया कि धर्म सच्चा सहारा है। श्री बच्छावत साहब ने कहा कि उनके जीवन का परिवर्तन भी पूज्य आचार्यश्री हस्ती की सन्निधि से हुआ। **कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्दजी डागा** ने वक्ताओं का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अपने मनोभाव व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य भगवन्त करुणासागर थे एवं उनके सान्निध्य मात्र से कष्ट दूर हो जाते थे। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में कोई जाकर साधना का सूत्र लाता है तो उसका भी उद्धार हो जाता है। उन्होंने 7 फरवरी, 2021 को होने वाली वेबिनार की घोषणा की। ◆

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 69
ISSN 2249-2011

English-Section

Justice, Humanity, Science and Jainism

Report : Sh. Shekhar Bhandari

(Brief contents of webinar-7, 8 & 9 held on 30th August, 27th Sept. & 25th Oct. 2020 organised by Shri Shekhar Bhandari under Ratna Sangh forum of professionals **-Editor**

WEBINAR-7 (30th August, 2020)

Justice Vineet Kothari (Keynote Speaker)– *"Tenets of Justice"*

- There is a **very fine difference between Justice and Law**. Typically, lower courts of judiciary are called as Courts of Law and higher courts are referred to as Courts of Justice. This is because higher courts have more discretion and more power to mould the law.
- The Recycle of birth and the theory of Karma which means that every person is an account of their karma with both debits and credits.
- Understanding the **difference between dispute resolution and justice** is critical. Real justice happens when there is happiness and peace of mind in both parties.
- Jainism has been identified as minority status recently and hence it is that much more increased responsibility for every Jain to uphold the highest values of Jainism.
- There needs to be a focus on education and health with **special focus on primary education** as it helps build knowledge, moral values and code of conduct at an early age.
- Justice needs to be ensured and hence although it is said that Justice delayed is Justice denied but it is also said that "**Justice hurried is justice worried**".
- A person should detach himtself from the position he holds so if he is praised or criticized it is for the position and not him as a person. This helps person to focus only on discharge of his duties.
- All disputes primarily arise from three core reasons.
  - ◇ **Age**–Matters of seniority or superiority complex.
  - ◇ **Property**–Dispute around land / gold / silver / movable assets.
  - ◇ **Human relationships**–Fight between brothers, husband and wife, etc.
- Taking the example of an insurance case where happiness was achieved by maximizing the compensation a crippled boy received from an insurance company without the company challenging the decision of the court in a higher court.
- In an ideal society judiciary is not required, but it is a necessary evil given the practicality of society.
- Achieving anything in life with strong principles gives much more peace of mind than just achievement.

Mr. Prakash Tatia (President, ABSJRHSS)

- Education and Knowledge are different from each other. Their difference is based on religion and behavior.
- Without Gyaan there is no Charitra, and only with Charitra and Gyaan a person can do Tapa (penance).
- Experience of working with Human Rights Commission has been the most enriching experience of my life as it gave

me an understanding of human life which is crucial to have Gyaan and Charitra.

Dr. Vinod Surana (Guest Speaker)– *"Vote of Thanks"*

- Jain religion is a ***"Achaar Pradhan"*** and not ***"Prachaar Pradhan"*** – Justice Vineet Kothari in his message through his real life anecdotes have captured the essence of the same beautifully.
- **Forgiveness is the gateway to heaven** and if there is no ego then the disputes get resolved on their own.
- A detached mindset is important as it helps us stay away from any form of wrong doing.
- Karuna must be the basis of our actions which can help us lead better lives as individuals.

Shri Shekhar Bhandari (Convener, JRFOP)– *"Exploration of Reality or Justice"*

- Doing Justice is very complex – many facts, many angles, many propositions and satisfying all the parties.
- Quoting **Tattvartha Sutra–right faith, right knowledge and right conduct together constitute the path to liberation.** This first sutra guides us about life.
- Gyaan, Darshan, Tapa and Charitra are considered to be ways to achieve "Aatmakalyan".
- **Jain theory of Syadvada** ensures each statement is expressed from seven different viewpoints/propositions–**Syād-asti** *(in some ways it is)*, **Syād-nāsti***(in some ways it is not)*, **Syād-asti-nāsti***(in some ways it is and it is not)*, **Syād-asti-avaktavya** *(in some ways it is and it is indescribable)*, **Syād-nāsti-avaktavya** *(in some ways it is not and it is indescribable)*, **Syād-asti-nāsti-avaktavya** *(in some ways it is it is not and it is indescribable)*, **Syād-avaktavya** *(in some ways it is indescribable)*.

WEBINAR-8 (27th September, 2020)

Shekhar Bhandari (Convenor, JRFOP)– *"Humanity juxtaposed with Justice"*

- Humanity can be classified as **one of the six virtues** and is consistent across all cultures. Human dignity enables us to live with each other and respect each other.
- Lord Mahavira saying – **"Live and let live"** is found on the basic essence of human right.
- **Non-violence** is the biggest virtue of all – peace, harmony, welfare, trust, fearlessness being the others.
- We combine humanity with ethos as personal traits exist-*Pramod* (affection), *Maitri*(friend liness), *Karuna* (compassion) and Madhyastha bhāva (equanimity).
- Humanity differs from justice and is much above justice in all aspects.

Justice Prakash Tatia(Keynote Speaker)– *"Humanity, Ethos and Profession"*

- Coronavirus has affected the society in a large way. We need to look at learnings from the virus – if we end the virus, have we won as human beings or have we still failed.
- **If this is true that a human created the virus then only a human could have been evil enough to do it and if it is a rumor then also only a human could have been capable of lying.**
- Human body, be it the human brain or its body structure with two legs and two hands is a unique creature of the animal kingdom and has been able to put itself above other creatures through year of evolution.
- When asked a basic question like"Who are you" to a larger audience of people most people just think that they are humans because it is the **most basic essence and identification of our existence.**

- Human beings have used their brains to invent and achieve great comfort in life - **From Gurukul to distant learning, a wheel making the world smaller, internet to capture and access the world in the power of your hands.**
- Through the examples of ultra-luxurious cars, pens, watches, cigars, homes we are only trying to achieve more comfort guided by our human greed.
- **Where is the height of this greed**–for some context, In just INR 3,000 crores a canal was built in Rajasthan which helps irrigate large areas of agricultural land and support livelihoods compared to a car that costs INR 1,00,000 cr.
- Nature has built all types of species – herbivorous, carnivorous, and omnivorous. Nowhere in the animal kingdom has any species built tools to destroy its own species. **Humans are the only species who built bow and arrow, guns and missiles to end the existence of its own species.**
- Humans involved in slaughtering of animals –large beef exports from India, a country which in its constitution asks for protection of all animals that provide us with milk and dairy. Almost a billion dollars of fish and crab exports from India. Meat exports from India reaching new highs.
- Tax on liquor sales is at INR 1.75 lac crores. Even in times of the pandemic, liquor shops were opened and long queues were seen, people were ready to risk their lives because they couldn't control their desire to drink alcohol.
- Tobacco and liquor leads to cancer and other diseases. **Tobacco itself leads to 14 lac people dying in India and 80 lac people globally and yet the government takes no action** and consciously kills so many people.
- Tobacco not to be sold within 100m of a school and to a person less than 18 years of age which at a legislative level is a joke given the inefficiency and non-enforceability of such laws.
- The **current education curriculum and campaign to highlight the ill effects of alcohol and tobacco is not doing enough** as people are still consuming such substances and lacs of people die annually.
- Requests all professionals to look at the numbers shared today, introspect on them and give the message to a larger audience of professionals that there is a dire need to change the course of our society.

Mr. Anand Chopra – *"Vote of Thanks"*

- Provided his thanks to Tatiaji for sharing his views on humanity, ethos and using the example of tobacco to explain human greed and the fact that we are the only species trying to kill itself through multiple tools.

WEBINAR-9 (25th October, 2020)

Shekhar Bhandari (Convenor, JRFOP)– *"Jainism as Science and Darshan"*

★ **Knowledge** is born out of sense of wonder and mystery. Man alone has the capacity to enquire. Urge to know is embedded in man.

★ **Gautam Gandhara**, the chief disciple of Lord Mahavira is prime example of a man delving deeper into knowledge through queries has put the conversations and teaching into texts.

★ **Bernard Shaw** said: "Some men see things as they are and ask why. Others dream things that never were and ask why not."

Dr. Narendra Bhandari(Keynote Speaker)- *"Jainism is the law of nature, rituals are only peripheral"*

★ **Jainism** has passed down to us through two ways 1. Acharya's talking to disciples 2. Grandmother tradition . Both of these have been influenced by outside factors and key points are often neglected.

★ **Four Sutras** – 1. There is only misery in this world. 2. The cause of misery is karma. 3. The remedy for karma is Jñāna. 4. The method of acquiring Jñāna is Dhyāna. Dhyana is most important aspect of Jainism.

★ **4 Pillars**–1. Ātmavāda : Ātman exists 2. Karmavāda : Ātman and karma interact. 3. Kriyāvāda: There are procedures to purify ātman from karma. 4. Lokavāda : Truth is interwoven in universe.

★ **Parasparopgraho Jeevanaam:** The words written in emblem means everything depends on everything else. Its call co-existence/interdependence. In science it is called entanglement. This is the basic law. The tenets of non-violence, non-stealing, non-interference, vegetarianism comes from this law.

★ **Search for truth :** Lord Mahavir's teaching was to focus on search of truth. To be in the search of self.

★ **Karya- Karan :** Every action or thought has a consequence: Every event or process is due to cause. One who believes in coexistence, interdependence and mutual entanglement cannot harm anybody.

★ **Oneness :** Each cell makes 2000 proteins every second. We have 10^15 cells in the body. This is biggest workshop known to us. Galaxy and universe also work in a similar fashion. The micro and macro have oneness in the sense that coherent physical process is running in them. Earth is also a living being.

★ **Commonality between Science and Jain Darshan:**

Science	Jain Darshan
No God	No God
The physical universe is governed by laws	Living and non-living are governed by laws.
These are derived by observation of nature, proved by experiment	Laws derived by meditation and verified by experience.
No miracles, no exceptions	No miracles, only purushartha
Theory of everything	Moksha

★ **Deep Insights in Science:** Things already written in texts are credited to Westerners: Paramaṇu, Autophagy (2016 Nobel prize); Metabolism dependent on sun(2017 Nobel prize); Climate cycle; Wave particle duality and many more.

Dr. Mahaveer Golecha (NITI AAYOG)

★ **Scientific appeal of Jainism:** All humanity will follow Jain principles and practices if we can establish them scientifically, by laboratory experiments and theory, and present to the world in their language, methodology and logic.

★ **Educating Youth:** Many of the problems the world is facing today will be resolved by Jain life style and doctrines. Understanding of rituals and its effects on daily lifestyle, like building perseverance and patience needs to be inculcated in youths.

★ **Credit by Scientific community:** Scientific community has acknowledged Jainism to be one of the religions which knew the existence of microorganisms. Many of the rituals and practices are recognized to treat diabetes and hypertension.

◆

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 73
ISSN 2249-2011

चिन्तन

निधन समाचार : एक निवेदन

डॉ. दिलीप धींग

इस संसार में कोई परिवार ऐसा नहीं, जहाँ किसी की मृत्यु नहीं हुई हो। उदय के साथ अस्त की तरह जन्म के साथ मृत्यु का अटूट सम्बन्ध है। किसी परिवार में जब किसी का निधन हो जाता है तो आजकल अखबारों में विज्ञापन के जरिये सूचना देने का रिवाज चल पड़ा है। शोक समाचार के अलावा कुछ लोग श्रद्धाञ्जलि भी विज्ञापन के जरिये देते हैं। इस प्रकार के विज्ञापनों में काव्यात्मक पंक्तियाँ भी डाली जाती हैं। प्राय: ऐसी पंक्तियाँ कोई विशेष सन्देश नहीं दे पाती हैं।

जैन आगम-ग्रन्थों में आत्मा की अमरता, शरीर की नश्वरता एवं आत्मा और शरीर की भिन्नता का बोध कराने वाली अनेक सारगर्भित गाथाएँ और पद उपलब्ध हैं। जब कभी कोई शोक या श्रद्धाञ्जलि सन्देश लिखना हो और यदि स्थान (स्पेस) की सहूलियत हो तो उसमें किसी आगम की गाथा दी जानी चाहिये। इसी उद्देश्य से यहाँ जैन आगम ग्रन्थों की तीन चयनित गाथाएँ सन्दर्भ और सरल-संक्षिप्त अर्थ के साथ दी जा रही हैं-

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो।

-उत्तराध्ययन सूत्र (23/73)

यह शरीर नौका है, आत्मा नाविक है और संसार समुद्र है। श्रेष्ठ जन इसे तैरकर पार कर जाते हैं।

एगो मे सासओ अप्पा, णाण-दंसण-संजुओ।
सेसा मे बहिरा भावा, सव्वे संजोग-लक्खणा।

-समणसुत्तं (516)

ज्ञान दर्शन से युक्त एक आत्मा ही शाश्वत है। शेष सब बाहरी भाव हैं और संयोग मात्र हैं।

जो अप्पाणं जाणदि, असुइ-सरीरादु तच्चदो भिन्नं।
जाणग-रूव-सरूवं, सो सत्थं जाणदे सव्वं।।

-समणसुत्तं (255)

जो आत्मा को इस शरीर से तत्त्वत: भिन्न और ज्ञानस्वरूप जानता है, वह समस्त शास्त्रों को जानता है।

पाठकों से अनुरोध है कि वे प्राकृत भाषा की इन गाथाओं को अर्थ और सन्दर्भ के साथ सम्भाल कर रखें। जब कभी विज्ञापन के रूप में किसी का निधन समाचार या श्रद्धाञ्जलि सन्देश बनाना हो तो इनमें से किसी एक गाथा का चयन करके उसका उपयोग करें। इससे आगम वाणी और प्राकृत भाषा का महत्त्व बढ़ेगा। उपर्युक्त के अलावा किसी अन्य जैन आगम ग्रन्थ की कोई प्रासंगिक गाथा चुनकर भी दी जा सकती है।

कुछ आधुनिक और शिक्षित कहलाने वाले नवधनाढ्य लोग हिन्दी अखबारों में, हिन्दी भाषी पाठकों के बीच भी अंग्रेजी में श्रद्धाञ्जलि देते हैं। वे उनकी अंग्रेजी की श्रद्धाञ्जलि में भी आप्तवचन डाल सकते हैं। अंग्रेजी या अन्य भाषा के अखबारों में दिये जाने वाले शोक समाचार या श्रद्धाञ्जलि सन्देश में भी देवनागरी लिपि में प्राकृत भाषा का आगम-पद दिया जा सकता है। उस पद का हिन्दी, अंग्रेजी या सम्बन्धित भाषा में अर्थ भी दिया जा सकता है।

भावना यही है कि प्रसंग के अनुरूप जिनवाणी की महिमा को उजागर किया जाए। साधारण लगने वाला कार्य भी इतनी निपुणता से किया जाए कि वह असाधारण और प्रेरणादायी बन जाए। किसी के चिर-वियोग की घड़ी में आगम का एक पद भी संस्कृति और स्वाध्याय से जुड़ने और जुड़े रहने की प्रेरणा दे सकता है।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन हाउस, 18, रामानुज अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौत्तमचन्द जैन

मैं कौन हूँ?-लेखिका-श्रीमती रतन चोरड़िया, **प्रकाशक एवं प्राप्ति**-श्रीमती रतनकँवर चंचलमल चोरड़िया चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, थार हैण्डलूम के सामने, गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.), Website : www.chordiahealth.com, Email : cmchordia.jodhpur@gmail.com., **पृष्ठ**-112, **मूल्य**-50 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने दस अध्यायों में विचार प्रस्तुत किये हैं। प्रथम अध्याय-'मैं कौन हूँ?' में लेखिका ने अपने आपसे अर्थात् अपनी आत्मा से परिचय करवाया है और आत्मा के स्वरूप का विशद एवं विस्तृत विवेचन किया है। दूसरे अध्याय में मानव-जीवन की दुर्लभता का वर्णन किया है और इसकी अन्य प्राणियों एवं गतियों से विशेषता भी बताई गई है। तीसरे अध्याय में लेखिका ने मानव को सम्बोधित करते हुये कहा है कि हे चेतन! स्व-चिन्तन में मन को लगा। स्व-चिन्तन करने के लिए प्रस्तुत अध्याय में 54 सूत्र दिये गये हैं। चतुर्थ अध्याय में आत्म-स्वरूप का चिन्तन करने का निर्देश एवं विधि का विवेचन किया गया है। पाँचवें अध्याय में महत्त्वपूर्ण बिन्दु की ओर ध्यान आकर्षित कर बताया है कि रोग के क्षणों में समाधि कैसे रखें? इस अध्याय में शास्त्रीय उदाहरण देकर रोग के क्षणों में समभाव रखने के लिए नौ सूत्र बताये गये हैं। छठे अध्याय में बहुत ही सुन्दर, सारगर्भित एवं प्रेरणादायी अट्ठारह पापों की आलोचना प्रस्तुत की गई है। छठे अध्याय में मृत्यु का बोध करवाया गया है। सभी जानते हैं कि जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है।

सातवें अध्याय में मृत्यु-समय का आध्यात्मिक वसीयत नामा का उल्लेख किया गया है जो वास्तव में चिन्तन करने योग्य है। आठवें अध्याय में बताया गया है कि मृत्यु-जीवन का विदाई समारोह है। इस अवसर पर हमें दु:खी नहीं होकर मृत्यु का स्वागत करना चाहिये।

अन्त में दो सुन्दर प्रेरणादायी और बोधप्रद कवितायें प्रस्तुत की गई हैं-(1) सोने की तिज़ोरी में और (2) यदि चाहों कष्टों से मुक्ति।

सम्पूर्ण पुस्तक सभी प्रबुद्ध जनों के लिए पठनीय, चिन्तन करने योग्य और जीवन जीने की सम्यक् दिशा का बोध कराने वाली है और आत्मस्वरूप का परिचय कराने वाली तथा आत्मस्वरूप की प्राप्ति में सहायक है।

पानी से दीप-डॉ. दिलीप धींग। **प्रकाशक**-श्री अभय श्री श्रीमाल जैन, प्रबन्धन्यासी : अभुषा फाउण्डेशन्स, 27, मइलै रंगनाथन स्ट्रीट, टी. नगर, चेन्नई-600017 (तमिलनाडु), फोन 044-42984141, Email : abhaya@abushaims.com **अन्य प्राप्ति-स्थल**-डॉ. दिलीप धींग, उमराव सदन, 53 बी, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.), मो. 94144-72720, Email : drdhing@gmail.com, **प्रथम संस्करण**-सितम्बर 2020, **पृष्ठ**-120, **मूल्य**-200 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. दिलीप धींग ने विभिन्न विषयों से सम्बन्धित 67 कविताओं का संग्रह प्रस्तुत किया है। इसमें बालकों, युवकों, प्रौढ़ों और वृद्धजनों सभी के लिए श्रेष्ठ कविताएँ प्रस्तुत हैं। प्रारम्भ में नमोकार महामन्त्र है प्यारा, जयजिनेन्द्र हम बोलें और रोज सुबह झुकाएँ शीश आदि शीर्षक की कविताएँ बालकों में अच्छे संस्कार पैदा करने वाली हैं। कम खाना, गम खाना और नम जाना तथा फूलों का व्यापारी शीर्षक की कविताएँ भी सभी के लिए शिक्षाप्रद चिन्तनीय एवं अनुकरणीय हैं।

शाकाहार सर्वोत्तम है, जियो और जीने दो, आओ! मन को साधें और आओ! प्रत्याख्यान करें-शीर्षक की कविताएँ जहाँ एक ओर वर्तमान समय की माँग है, वहीं दूसरी ओर धार्मिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी आवश्यक है।

लेखक की अन्य सभी कविताएँ जीवन के विविध पहलुओं को समेटे हुए हैं और प्रेरणाप्रद एवं जीवन को सम्यक् दिशाबोध देने वाली हैं। कवि ने अपनी कल्पना शक्ति और ज्ञान के आधार पर विविध विषयों को सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया है। कविताओं में शब्दालङ्कार का भी प्रयोग किया गया है और उनमें गेयता भी है। अर्थात् कविताओं को गाकर आनन्द की अनुभूति प्राप्त की जा सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक में लिखित सभी कविताएँ सभी उम्र के लोगों के लिए पठनीय हैं और अपनी समझ के अनुसार जीवन में आचरणीय हैं।

जैन दिवाकर 100 तथ्य-डॉ. दिलीप धींग। **प्रकाशक**-अ.भा. श्री भगवान जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ, 501, प्रिंसेस एम्पायर, रेसकोर्स रोड़, इन्दौर-452003 (म.प्र.) मो. 9425106054, **अन्य प्राप्ति-स्थल**-डॉ. दिलीप धींग, उमराव सदन, 53 बी, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.), मो. 94144-72720, Email : drdhing@gmail.com, **प्रथम संस्करण**-2020, **पृष्ठ**-68, **मूल्य**-100 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण 100 तथ्य प्रस्तुत किये हैं। श्री चौथमलजी म.सा. श्रमण संघ परम्परा के तेजस्वी, मनस्वी और प्रभावक एवं लोकप्रिय सन्त थे। इनका जन्म 18 नवम्बर, 1877, रविवार (कार्तिक शुक्ला 13, विक्रम सम्वत् 1934) को नीमच (म.प्र.) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गंगारामजी चोरड़िया और माता का नाम श्रीमती केसरबाईजी था। इनकी पत्नी का नाम मानकुँवर था। इनका विवाह होने पर भी ये श्री जम्बूस्वामी की तरह विरक्त ही रहे। 16 फरवरी, 1896 को रविवार के दिन महज पाँच व्यक्तियों की मौज़ूदगी में इन्होंने उन्नीस वर्ष की आयु में वटवृक्ष के नीचे बोलिया (म.प्र.) में मुनि श्री हीरालालजी से दीक्षा अङ्गीकार कर ली। कुछ समय पश्चात् इनकी माँ, मौसी एवं पत्नी ने भी दीक्षा ले ली। 17 दिसम्बर, 1950 रविवार (मार्गशीर्ष शुक्ला 9 विक्रम सम्वत् 2007) को कोटा (राजस्थान) में 72 वर्ष की आयु में श्री जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. का महाप्रयाण हुआ। यह एक अद्भुत संयोग रहा कि आपका जन्म, विवाह, दीक्षा, बड़ी दीक्षा, अन्तिम प्रवचन और देवलोकगमन, ये सभी घटनाएँ शुक्लपक्षीय रविवार को ही हुई। सचमुच उनका जीवन शुक्ल अर्थात् उज्ज्वल, धवल एवं रवि के समान आलोकमय था।

प्रस्तुत पुस्तक में 'श्री जैन दिवाकर स्मृति-ग्रन्थ' एवं अन्य अनेक पुस्तकों से प्राप्त तथ्यों को सम्मिलित किया गया है। इसके साथ ही सन्त-मनीषियों के कथनों को भी इसमें शामिल किया है। इसमें श्री जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. के जीवन की प्रेरक घटनाओं, प्रभावशाली गतिविधियों और उपलब्धियों का रोचक वर्णन तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। अहिंसा, जीवदया, शाकाहार, सदाचार, व्यसनमुक्ति और सामाजिक एकता के सम्बन्ध में उनके ऐतिहासिक कार्यों का भी उल्लेख है। श्री जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. से अनेक राजा-महाराजा भी प्रभावित थे और उनके व्याख्यानों से प्रेरित होकर उन्होंने कुव्यसनों का त्यागकर अपने जीवन को संस्कारित बनाया। वे अनेक भाषाओं के जानकार एवं विद्वान् सन्त होते हुए भी जन-सामान्य की भाषा में व्याख्यान देते थे, जिससे सभी जाति के लोग सुनते थे और प्रभावित होते थे। उनके उपदेशों से प्रेरित होकर कई स्थानों पर पशुबलि बन्द हो गई और कई राजाओं ने निश्चित तिथि को मांस-विक्रय आदि को बन्द करवाया। कई खटीक जाति के लोग जैन बन गये और चर्मकार बन्धुओं ने मद्य-मांस का त्यागकर दिया। वे एक महान् सन्त थे जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों को अपने प्रवचनों के माध्यम से दूर किया तथा दुष्ट प्रकृति के लोगों का भी उन्होंने हृदय परिवर्तन कर दिया। उनकी प्रेरणा से अनेक लोकोपकारी संस्थाओं की स्थापना हुई।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 76
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

वीर प्रसूता पीपाड़ की धर्मधरा पर पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान, साधना-आराधना मय वातावरण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग एवं व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा की पावन सन्निधि में दर्शन-वन्दन, मांगलिक श्रवण, तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान, भक्तिभावना, साधना-आराधना की दृष्टि से श्रद्धालु भक्तों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है। अब लॉकडाउन एवं कोरोना संकट काल से उभर कर नवप्रभात की भाँति उत्कट भावना से भक्तजन लाभ ले रहे हैं और आत्मतृप्ति का अनुभव कर रहे हैं। पीपाड़ श्रीसंघ ने सरकार एवं संघ के निर्देशों की समन्वित युक्ति से ऐसी सुन्दर व्यवस्था की है कि जो देखने में समवसरण जैसी अनुभूति कराती है। एक बार में पाँच भक्त छह फुट की दूरी से संरक्षित व्यवस्था में दर्शन-वन्दन आदि का लाभ ले रहे हैं। पीपाड़ श्रीसंघ के सभी घटकों का पुरुषार्थ अनुमोदनीय है।

तपस्विनी बहिन बिन्दुजी मेहता ने निरन्तर तप में अग्रसर होकर एक रिकार्ड कायम किया है। 30 सितम्बर, 2020 को कोसाना में पूज्य आचार्यप्रवर से सरल स्वभावी, भक्तिभावना से ओतप्रोत एवं तप-त्याग की प्रतिमूर्ति साधिका रत्न बिन्दुजी ने तपस्या का शुभारम्भ किया था। कोसाना में विराजते हुए 68 उपवास हुए, फिर भी आगे बढ़ने की भावना बनी रही। अत: पूज्य आचार्यप्रवर के विहार के पश्चात् भी नानण ग्राम में 73 उपवास के पच्चक्खाण किये एवं पीपाड़ पधारने के पश्चात् निरन्तर 5-5 उपवास बढ़ाते हुए 123 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किये हैं। अभी भी उनकी भावना है कि जब तक साता रहेगी तब तक आगे बढ़ती रहूँगी। उन्होंने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा है कि पूज्य गुरुदेव के अतिशय एवं अनन्त कृपा से यह सब सम्भव हो रहा है, मैं कुछ नहीं हूँ। उनका यह भाव निम्नाङ्कित पंक्तियों में प्रकट होता है-

बिन्दु कहता है कि मैं हूँ, जब जुदा दरिया से था।
जो मिला दरिया में तो कहता है मैं हूँ नहीं।।

जोधपुर के श्रावकरत्न श्री भागचन्दजी मेहता एवं उनकी धर्मसहायिका, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता की सुपुत्री बिन्दुजी मेहता की इस तपस्या से यह सम्पूर्ण परिवार उत्कट तपस्वी परिवार हो गया है। श्री भागचन्दजी एवं श्रीमती बीनाजी मेहता विगत वर्षों में मासक्षपण से अधिक दिवसों की दीर्घ तपस्याएँ कर चुके हैं। इस तपस्या में पीपाड़ श्रीसंघ के सभी घटकों का भक्तिभाव पूर्ण सहयोग मिल रहा है। तप की अनुमोदना हेतु जोधपुर से पदाधिकारिगण का प्रत्येक रविवार को आगमन होता है। 108 की तपस्या के अवसर पर पञ्चपरमेष्ठी के 108 गुणों की स्तुति करते हुए राता उपासरा में तपस्वी परिवार द्वारा एक भक्ति कार्यक्रम रखा गया। 117 की तपस्या होने पर भी राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा, उपाध्यक्ष श्री मनमोहनचन्दजी कर्णावट, श्री नौरतनमलजी मेहता, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा आदि पदाधिकारियों ने गुरु वन्दन-दर्शन के साथ तपस्वी बहिन की अनुमोदना एवं सुख-साता की पृच्छा की।

ब्यावर, नागौर, भोपालगढ़, गोटन, अजमेर, जयपुर, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, बिलाड़ा, रणसीगाँव, मेड़ता,

बारनी खुर्द, नाडसर, चेन्नई, विजयनगर, भीलवाड़ा, पाली, देई, किशनगढ़, बेंगलोर आदि ग्राम-नगरों के श्रीसंघ उपस्थित हुए तथा धर्म-साधना का लाभ लिया। प्रत्येक रविवार को दोपहर 1 से 3 बजे तक अभी गुरुभक्ति का कार्यक्रम चलता है तथा प्रतिदिन आयम्बिल, एकाशन, उपवास आदि की लड़ी चल रही है। रत्नसंघ के अनेक गुरुभ्राता देश के सभी क्षेत्रों में अपनी-अपनी भावना अनुसार उपवास, आयम्बिल, एकाशन, नींवी, लोगस्स का ध्यान, नवकार मन्त्र का जाप, मौन, जप-तप आदि कर रहे हैं।

पौषशुक्ला सप्तमी 20 जनवरी, 2021 को परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने गुणानुवाद करते हुए फरमाया कि उपाध्यायश्री का जीवन आन-बान-शान से भरपूर था। उन्होंने मानव जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बनाया। उनके जीवन में स्वाभिमान था। वे संघ में सदैव अनुशासनप्रिय, अल्पभाषी एवं सेवा के पर्यायवाची रहे। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने कहा कि महापुरुषों के गुणगान करते समय उत्कृष्ट भाव आ जायें तो तीर्थङ्कर नामकर्म का उपार्जन हो सकता है। उपाध्यायप्रवर सरलता, सहजता, सेवा, विनयशीलता आदि गुणों के कारण चौथे आरे की बानगी कहलाते थे।

24 जनवरी, 2021 को जोधपुर शाखा से श्राविका मण्डल के पदाधिकारी सजोड़े उपस्थित हुए एवं धर्म-लाभ लिया। 26 जनवरी को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा तपस्विनी बहिन बिन्दुजी मेहता की 119 दिवसीय तपानुमोदना में राता उपासरा में गुरुभक्ति का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें श्राविका मण्डल के राष्ट्रीय प्रमुख पदाधिकारियों सहित लगभग 250 श्राविकाओं ने भाग लिया।

पौष शुक्ला चतुर्दशी को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के 111वें जन्मदिवस एवं मरुधरकेशरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. की पुण्यतिथि पर गुणानुवाद के साथ तप-त्याग के अनेकानेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। यहाँ 111 उपवास, 2 तेला, 1 बेला, दिन में पाँच-पाँच सामायिक आदि की साधना हुई। *-गिरराज जैन*

सवाईमाधोपुर, जयपुर आदि में चातुर्मास जैसा भव्य नजारा

सवाईमाधोपुर-सवाईमाधोपुर का अहोभाग्य है कि मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. जैसे क्रियानिष्ठ सन्तों का उप-नगरों में विचरण चल रहा है। चातुर्मास की समाप्ति के साथ ही जहाँ कहीं सन्त गण पधारे-प्रवचन आदि में विशाल उपस्थिति दिखाई दी। यहाँ हर स्थान पर चाहे वह हाउसिंग बोर्ड, रणथम्भौर रोड़ या आदर्श नगर, प्रवचन में लोगों का हुजूम श्रद्धेय मुनिराजों का प्रवचन प्यासे चातक की तरह एकाग्र मन से सुनने को उत्सुक रहता मुनिश्री के प्रवचन भी सम-सामयिक प्रसङ्गों को लेकर हृदय को छूने वाले और झकझोर देने वाले होते हैं।

इसी क्रम में रविवारीय कक्षा को जब प्रवचन की शक्ल दी तो लोगों की प्रतिक्रियायें यही रहीं हकीकत में चातुर्मास का श्रावण मास चल रहा है। 1 जनवरी को आदर्श नगर में मांगलिक प्रवचन के समय तीन-तीन सामायिक के साथ सवाई माधोपुर क्षेत्र में ऐसा नज़ारा सम्भवतया पहली बार ही लोगों को देखने को मिला। श्रद्धेय श्री अविनाश मुनि जी महाराज साहब के साथ श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी महाराज साहब ने नये साल का प्रारम्भ दोषों का शमन और गुणों के विकास की प्रेरणा देते हुए कहा कि हम एक सुन्दर जीवन-निर्माण का लक्ष्य बनाएँ। महाराज साहब ने प्रेरणा देते हुए कहा कि चलते-चलते भटक जाना, निराशाजनक जरूर है , मगर लक्ष्य से भटक जाना अपराध है।

गुरु हस्ती के प्रेरक चिन्तन सूत्र को याद दिलाते हुए मुनिश्री ने फरमाया कि कुछ मत सीखो, सीखो सबसे पहले मन का दृढ़ निश्चय करना। चेहरे पर मुस्कान, वाणी की मधुरता एवं हृदय की उदारता जैसे व्यावहारिक गुणों को विकसित करने वाला ही अध्यात्म-मार्ग में आगे बढ़ सकता है।

आदर्श नगर से 2 जनवरी को विहार करके सन्त मुनिराज जब महावीर नगर मण्डी रोड़ पधार रहे थे तो वह विहंगम दृश्य किसी चातुर्मासिक प्रवेश की भव्यता से कम नहीं था । जब से मंडी रोड उपनगर पधारे, हर दिन प्रवचन

में विशाल उपस्थिति रही। स्थानीय लोग भी सन्त-सन्निधि का उत्साह से लाभ उठा रहे हैं ।

पौष वदी दशम भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक और पूज्य उपाध्याय भगवन्त का प्रथम पुण्य स्मृति दिवस क्रमशः 251 आयम्बिल एवं 501 एकाशन से अधिक तप आराधना के साथ मनाया गया । पूरे शहर के अलावा आस-पास के गाँवों से भी आकर लोगों ने आत्म-साधना में भाग लिया। इसी क्रम में दानवीर, भामाशाह श्री प्रमोदजी महनोत ने सन्त दर्शनों का लाभ लिया और महावीर नगर मण्डी रोड़ उपनगर में धर्मस्थान की आवश्यकता को महसूस करते हुए स्थानक भवन बनाने का संकल्प व्यक्त किया। पूरे शहर में हर्ष का वातावरण छा गया। दो दिन बाद ही अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया साहब पधारें जिन्होंने यहाँ की गुरुभक्ति और संघ-भक्ति को देखकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि सवाईमाधोपुर क्षेत्र रत्न संघ की राजधानी बनने की ओर अग्रसर है। उन्होंने शहर और हर उपनगर में पधारकर गुरुभक्तों की मीटिंग ली और संघ के उद्देश्यों से सबको अवगत कराकर प्रेरित किया।

जयपुर-तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 जयपुर में 20 दिसम्बर से 1 जनवरी के प्रात: 8.30 बजे तक लाल भवन विराजे। यहाँ 15 से 30 वर्ष के युवक-युवतियों के लिए 25 से 27 दिसम्बर तक 9 से 1 बजे तक यू-टर्न शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 50 शिविरार्थियों ने भाग लिया। 25 दिसम्बर को आरोग्य विषय पर, 26 दिसम्बर को बोधि विषय तथा 27 दिसम्बर को समाधि विषय पर तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने विशेष प्रवचन फरमाये। 1 जनवरी, 2021 को प्रात:काल प्रार्थना एवं मांगलिक के समय हॉल खचाखच भरा हुआ था। मांगलिक प्रदान कर आप महावीर नगर पधारे एवं दूसरे दिन महारानी फार्म पधार गये। यहाँ पर श्री जैन रत्न युवती मण्डल द्वारा 7 से 9 जनवरी तक पार्श्वनाथ जयन्ती के अवसर पर शक्ति-भक्ति और विरक्ति विषय पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। ये सभी कार्यक्रम महारानी फार्म संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्पन्न हुए, जिनमें प्रथम दिन आयम्बिल, दूसरे दिन एकाशन और तीसरे दिन उपवास की साधना सम्पन्न हुई तथा तीनों दिन प्रवचन हुए। श्रद्धेय तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. 9 जनवरी को प्रात:काल विहार कर गये थे। प्रवचन महासती मण्डल के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इन तीनों दिनों में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही तथा प्रवचन उत्तम स्वाध्याय भवन के निकट श्री विनोदजी लोढ़ा की बिल्डिंग में सम्पन्न हुए। युवती मण्डल का उत्साह एवं प्रयास सराहनीय रहा तथा महारानी फार्म संघ की भूमिका भी सराहनीय रही। 20 जनवरी को शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का प्रथम पुण्यस्मृति दिवस साध्वीप्रमुखा परम विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि महासती-मण्डल की सन्निधि में उत्तम स्वाध्याय भवन में तप-त्याग, सामायिक-साधना के साथ मनाया गया। महारानी फार्म में एकाशन की तपस्या का आयोजन संघ की ओर से किया गया। 27 जनवरी को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 111वाँ जन्मदिवस महासती मण्डल के सान्निध्य में सामायिक-साधना एवं एकाशन तप के साथ मनाया गया। लगभग 155 एकाशन तप सम्पन्न हुए।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. महारानी फार्म से अजमेर रोड़ पर व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 को वैराठ भवन में 9 जनवरी को दर्शन एवं तत्त्वचर्चा का लाभ प्रदान करते हुए, कोठारीगढ़, दहमीकलॉ, बगरू होते हुए 15 जनवरी, 2021 को दूदू पधारे हैं। उनके दूदू पदार्पण से यहाँ के श्रावक-श्राविका अत्यन्त प्रमुदित होकर धर्माराधना का लाभ ले रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-9 महावीर नगर से विहार कर बापू नगर होते हुए शिवाजी मार्ग स्थित अजयजी मेहता के आवास पर विराजे। यहाँ श्राविका मण्डल एवं युवती मण्डल ने प्रात: एवं

दोपहर में ज्ञानार्जन कर धार्मिक अध्ययन को आगे बढ़ाया। 25 जनवरी को महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 जवाहरनगर संघ की विनति पर जवाहरनगर पधारे, जहाँ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 111वाँ जन्म-दिवस सामायिक एवं एकाशना की साधना के साथ मनाया गया। लगभग 100 एकाशन तप सम्पन्न हुए।

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में पाँच्यावाला में चातुर्मास प्रारम्भ से एकाशन, आयम्बिल, उपवास आदि की लड़ियाँ कोरोना काल में निरन्तर गतिमान रहीं। चातुर्मास के प्रथम दो माह में आवश्यकसूत्र की वाचनी हुई, जिससे श्रावक-श्राविकाओं को भी ज्ञानार्जन हुआ। पर्युषण पर्व के अष्ट दिवसों में अन्तगडदसा सूत्र के वाचन एवं विवेचन ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया, दोपहर में कल्पसूत्र का वाचन हुआ तथा सम्वत्सरी के अवसर पर भाई-बहिनों में 25 पौषध व्रत हुए। एकाशन, उपवास, बेला, तेला, पंचोला एवं नौ की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। श्रीमती अञ्जनाजी धर्मसहायिका श्री अरविन्दजी जैन ने प्रथम बार 9 की तपस्या पूर्ण की। 9 जनों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। कइयों ने 25 बोल, 33 बोल, 67 बोल, कर्मप्रकृति आदि थोकड़ों के अलावा कर्मग्रन्थ सीखा। 'आओ लोक की सैर करें' पुस्तक के माध्यम से हाउजी गेम करवाया गया। पाँच्यावाला में दो माह तप-धर्माराधना कराने के पश्चात् 1 सितम्बर को महासती मण्डल का नित्यानन्द नगर में पदार्पण हुआ। यहाँ दशवैकालिकसूत्र की वाचनी हुई। उसके पश्चात् भक्तामर स्तोत्र का विवेचन हुआ। भगवान महावीर निर्वाण दिवस के अवसर पर एकाशन और तेले की तपस्या सम्पन्न हुई। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 58वें दीक्षा दिवस पर एकाशन तप हुए। अनेक श्रद्धालुओं ने 58 दिन के लिए बड़ी स्नान, जमींकन्द आदि अनेक प्रकार के त्याग स्वीकार किये। पाँच दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अङ्गीकार किया-1. श्रीमती लाड़देवी-मोहनलालजी जैन, 2. श्री दयाचन्दजी-सरलाजी जैन, 3. श्री अशोक कुमारजी-शीलाजी जैन, 4. श्री भागचन्दजी-ताराजी जैन, 5. श्री सुरेन्द्रजी-इन्दिराजी जैन। चातुर्मास के पश्चात् विहार कर पुनः नित्यानन्द नगर के स्थानक में शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से विराज रहे हैं।

-सुरेशचन्द कोठारी, मन्त्री

अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के 111वें जन्मदिवस पर सामायिक एवं एकाशन तप की साधना

देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में अध्यात्मयोगी युगमनीषी पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. का 111वाँ जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी 27 जनवरी, 2021 को आचार्यश्री हस्ती दीक्षा शती वर्ष के अन्तर्गत सामायिक-साधना, व्रत-नियम, एकाशन आदि की तपस्या के साथ मनाया गया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में पीपाड़ में, मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में बजरिया-सवाईमाधोपुर में, सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में अहमदाबाद में, तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में दूदू में, श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में पाली-मारवाड़ में, श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में जोधपुर में, साध्वीप्रमुखा परम विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में जयपुर में इसी प्रकार जहाँ-जहाँ महासती मण्डल का विराजना हुआ वहाँ-वहाँ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के गुणानुवाद करते हुए त्याग-तप एवं व्रत-प्रत्याख्यान सम्पन्न हुए। अन्य सम्प्रदायों के सन्त-सतियों के सान्निध्य में भी यह पावन दिवस साधना-आराधना पूर्वक सम्पन्न हुआ। जहाँ सन्त-सतियों का सुयोग नहीं था, वहाँ भी श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने भावना पूर्वक सामायिक-साधना की तथा उपवास, एकाशन, आयम्बिल आदि तप किये। अखिल

भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् आदि के आह्वान पर पाँच सामायिक की साधना एवं एकाशन तप की साधना हुई। एकाशन तप एवं सामायिक-साधना देश में हजारों की संख्या में हुई।

पूज्य आचार्यप्रवर के अप्रमत्तता, करुणा, गुणग्राहकता, प्रमोद-भावना, वचनसिद्धि, आचारनिष्ठा, सत्यनिष्ठा आदि विभिन्न गुणों पर प्रकाश डाला गया।

पालड़ी अहमदाबाद-परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म. सा. का 111वाँ जन्मदिवस एवं पूज्य मरुधर केशरी श्री मिश्रीमलजी म. सा. की पुण्यतिथि तप-त्याग के साथ रत्नसंघ के श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म. सा. एवं खम्भात सम्प्रदाय के पूज्य श्री जितेन्द्रऋषिजी म. सा., तथा महासती श्री भावनाबाईजी म. सा. आदि ठाणा 2 और अजरामर सम्प्रदाय के महासती श्री वंदिताजी म. सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में बड़े ही उत्साह पूर्वक तपत्याग एवं 3-3 सामायिक के साथ 150 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में मनाई गई। गुरु भगवन्त ने दोनों गुरु भगवन्त के जीवन पर प्रकाश डाला और जीवन में महापुरुषों के सद्गुणों को स्थान देकर जीवन जीने का और सामायिक-स्वाध्याय, जीवदया, साधर्मी की भक्ति के लिए तत्पर रहने का सन्देश दिया। 60 एकाशन, 6 उपवास, 6 आयम्बिल के तप-आराधना से अपनी भक्ति का नज़ारा पेश किया। अन्त में श्री पदमचन्दजी कोठारी ने सभी का आभार प्रकट किया और पधारे हुए सभी साधर्मिक भक्ति का लाभ देकर पधारें, ऐसी विनति की। *-पदमचन्द कोठारी*

मैसूर-27 जनवरी, 2021 को स्थानक भवन महावीर नगर मैसूर में सामयिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म. सा. की 111वाँ जन्मदिवस और मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म. सा. का 37वाँ पुण्यस्मृति दिवस आचार्यप्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के सुशिष्य शासन दीपक श्री छत्रांकमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 के पावन सानिध्य में मनाया गया। नगर के अनेक गणमान्य श्रावक श्रविकाएँ उपस्थित रहे। संघ अध्यक्ष श्री तेजराजजी नंगावत, संघ मन्त्री श्री सुभाषचन्दजी धोका, श्री सोहनलालजी बाघमार, श्री दलपतराजजी सिंघवी, श्री सुशीलजी नंदावत, श्री सम्पतराजजी बाघमार, श्री आनन्दजी पटवा ने महापुरुषों का गुणगान करते हुए अपने भाव व्यक्त किए। 160 श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन, उपवास आदि किए। *-सुभाषचन्द धोका*

सूरत-27 जनवरी, 2021 को श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन में सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म. सा. का 111वाँ जन्म दिवस शान्त-क्रान्त संघ के श्रद्धेय श्री प्रेमचन्दजी म.सा. आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में त्याप-तपस्या के साथ मनाया गया। श्रद्धेय श्री प्रेमचन्दजी म.सा., श्री जितेशमुनिजी म.सा. एवं श्री मुकेशमुनिजी म.सा. ने आचार्यश्री हस्ती के गुणों का और उनके साथ बिताए गए क्षणों का वर्णन किया। जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 5 सामायिक, 35 एकाशन एवं 12 उपवास हुए। *-सुनीलकुमार नाहर*

अमरावती-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी मधुर व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में श्रीसंघ ने सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 111वाँ जन्म दिवस 25 से 27 जनवरी तक त्रिदिवसीय आयोजन के सात बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 25 जनवरी को सामायिक पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, 26 जनवरी को 25 बोल पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम एवं 27 जनवरी को सामूहिक एकाशना, सामायिक, दया का आयोजन किया गया, जिसमें 165 एकाशन, 30 उपवास, 3 तेले ब्यासना और अन्य छोटी तपस्याएँ हुईं। *-सुरेशचन्द मुणोत*

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का स्मृति-दिवस

शान्त-दान्त-गम्भीर श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का प्रथम स्मृति दिवस पौष शुक्ला सप्तमी 20 जनवरी, 2021 को देश के विभिन्न क्षेत्रों में तप-त्याग, सामायिक-साधना, गुणानुवाद के साथ मनाया गया। रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में पीपाड़ में तथा जहाँ पर जो सन्त प्रवर, सती प्रवर विराज रहे थे, वहाँ पर एवं अन्य ग्राम-नगरों में भी सामायिक-साधना, एकाशन, उपवास आदि के साथ यह दिवस

मनाया गया। कुछ सम्बद्ध समाचार सन्त-सतियों के समाचारों में उपलब्ध है।

जयनगर, बैंगलोर-रत्नसंघीया प्रखर व्याख्यात्री महासती श्री नि:शल्यवती म.सा. आदि ठाणा-5 की पावन निश्रा में धीर-वीर-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, आत्मार्थी पण्डित रत्न पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 'प्रथम स्मृति-दिवस' दो-दो सामूहिक सामायिक-साधना एवं गुरु-गुणगान के साथ मनाया गया। अपने उद्गारों में श्रद्धेय महासतीजी ने कहा कि-उपाध्यायश्री एक सरलमना, ज्ञानक्रियानिष्ठ, साधना-प्रेमी, एक अजातशत्रु, महान् सन्त थे। आचार्यश्री हस्ती से दीक्षा लेकर जिनशासन-सेवा और साधना के शिखर पुरुष बने। वे पद तथा नामवरी से कोसों दूर थे। वे अनुशासन में रहना जानते थे, अनुशास्ता बनने में उनकी रुचि नहीं थी। वे 86 वर्ष के थे और 28 वर्ष की उम्र में संयम ग्रहण किया। 58 वर्ष तक निरतिचार संयम का दृढ़ता से पालन किया। इस प्रसङ्ग पर संघ अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता ने स्वागत किया। श्री अजीतजी रांका ने चारित्र आत्माओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। गौतमचन्द ओस्तवाल ने अपने प्रभावी उद्गार प्रकट कर धर्मसभा का सञ्चालन किया। *-गौतमचन्द ओस्तवाल*

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा तपस्या की अनुमोदना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 26 जनवरी, 2021 को पीपाड़शहर में तपस्विनी बहन बिंदुजी मेहता की 119 की तपस्या की अनुमोदना एवं गुरुभक्ति का कार्यक्रम राता उपासरा में रखा गया, जिसमें पीपाड़शहर एवं श्राविका मण्डल की लगभग 250 श्राविकाओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष, वरिष्ठ श्राविका डॉ. मंजुलाजी बम्ब-जयपुर, वर्तमान अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी भंडारी-बैंगलोर, कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर (पीपाड़शहर), महासचिव श्रीमती अलकाजी दुधेडिया-अजमेर, सचिव श्रीमती श्वेताजी कर्णावट-जोधपुर, सह-सचिव श्रीमती विनीता जी कांकरिया-जोधपुर, कर्नाटक सम्भाग की क्षेत्रीय प्रधान श्रीमती वैजयंती जी मेहता-बैंगलोर, आई.ए.एस. दीपा जी जैन-जयपुर, चेन्नई शाखा अध्यक्ष श्रीमती संगीताजी बोहरा, जयपुर से श्रीमती शशि जी कोठारी, श्रीमती पन्नाजी कोठारी आदि श्राविकाओं ने उपस्थित होकर बिंदुजी मेहता की तपस्या की सुख साता पृच्छा के साथ बारम्बार अनुमोदना करते हुए शुभकामनाएँ दीं। *-अलका दुधेड़िया, महासचिव*

जयपुर का 'दृष्टि' शिविर बना देश का शिविर

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में साप्ताहिक धार्मिक पाठशाला 'दृष्टि' अक्टूबर 2016 से अनवरत चल रही है। 5 से 25 वर्ष की आयु के बच्चों और युवक-युवतियों को श्रुतज्ञान के माध्यम से आध्यात्मिक एवं धार्मिक दृष्टि देने के उद्देश्य से परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा से एक केन्द्र पर प्रारम्भ की गई यह पाठशाला 2018 से चार केन्द्रों पर चल रही थी। इसके माध्यम से अनेक बच्चों ने सविधि-सार्थ सामायिक एवं प्रतिक्रमण याद किये हैं।

परन्तु कोराना वायरस के प्रकोप के कारण पूरे देश में लॉकडाउन होने के साथ ही 3 वर्ष से भी अधिक समय से अनवरत चल रही 'दृष्टि' भी मार्च 2020 में बन्द हो गई। सभी छात्रों, अध्यापकों और संचालकों की तीव्र भावना होते हुए भी यह क्रम रुक गया। कहते हैं 'जहाँ चाह, वहाँ राह।' इसी उक्ति को चरितार्थ करते हुए 'दृष्टि' के संचालकों के मन में विचार आया कि जिस तरह जयपुर की युवक परिषद् ने अपना वार्षिक ग्रीष्मकालीन शिविर इण्टरनेट के माध्यम से सफलता पूर्वक आयोजित किया, उसी तरह क्यों न यह साप्ताहिक पाठशाला भी इण्टरनेट के माध्यम से चलाई जाए। और फिर, सभी के प्रयासों से DRISHTI ONLINE CLASSES का प्रारम्भ जुलाई 2020 में किया गया।

इस ONLINE संस्करण में सामायिक की दो तथा प्रतिक्रमण की तीन कक्षाएँ बनाई गईं। एक छात्र सामायिक की प्रथम कक्षा में नवकार मंत्र सीखने से प्रारम्भ करता है और क्रमश: सीखता-सीखता प्रतिक्रमण की तीसरी कक्षा

में सम्पूर्ण प्रतिक्रमण विधि सहित याद कर लेता है। प्रत्येक कक्षा का पूर्व- निर्धारित पाठ्यक्रम याद कर लेने पर उस छात्र की अलग से मौखिक परीक्षा ली जाती है जिसमें उत्तीर्ण होने पर उसे अगली कक्षा में जोड़ा जाता है। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रतिक्रमण याद कर लेने पर उसे सामायिक-प्रतिक्रमण के अर्थ की कक्षा में भेजा जाता है। इसके अतिरिक्त 25 बोल, दशवैकालिकसूत्र और भक्तामर स्तोत्र की कक्षाएँ भी चल रही हैं। कक्षाओं में नियमित रहने पर कक्षा का पाठ्यक्रम पूर्ण कर लेने पर पारितोषिक भी दिया जा रहा है।

इण्टरनेट के माध्यम से चलाई जा रही दृष्टि पाठशाला में मुख्य सहयोग उन श्रावक-श्राविकाओं से प्राप्त हो रहा है जो शिक्षक के रूप में अपनी निस्वार्थ सेवाऐं दे रहे हैं। उन्हीं की सेवाओं का प्रभाव है कि 'दृष्टि' में जयपुर ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत और विदेशों से भी जुड़कर ज्ञान-पिपासु श्रावक-श्राविका धार्मिक ज्ञान सीख रहे हैं। 4 वर्ष से 65 वर्ष तक के धर्मानुरागी इस पाठशाला के माध्यम से अपना धार्मिक ज्ञान बढ़ाकर लाभान्वित हो रहे हैं। बड़ी उम्र के लोगों में प्रतिक्रमण आदि सीखने की इच्छा होते हुए भी वे शिविरों में जाने से हिचकिचाते हैं। अत: उन्हें यह माध्यम अधिक अनुकूल लगता है, जहाँ वे अपने घर पर रहकर ही पाठशाला में भाग लेकर ज्ञानार्जन कर पा रहे हैं। युवा-वर्ग तो सञ्चार-माध्यमों से स्कूल आदि की पढ़ाई कर ही रहे हैं। अत: उन्हें भी दृष्टि ONLINE CLASSES में समय की बचत महसूस होती है। समय-समय पर इसमें धार्मिक प्रश्नोत्तरी, कहानी-वाचन, भजन आदि प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जा रही हैं।

गत पाँच माह से 'दृष्टि' में 53 लोगों ने सामायिक और 35 लोगों ने प्रतिक्रमण पूर्ण विधि सहित याद कर लिये हैं। 21 लोगों ने प्रतिक्रमण का सम्पूर्ण अर्थ और 7 लोगों ने दशवैकालिकसूत्र के 4 अध्ययन कण्ठस्थ कर लिये हैं। इस प्रकार जयपुर के एक केन्द्र से प्रारम्भ हुई 'दृष्टि' पाठशाला समय के प्रभाव से संचार माध्यमों का उपयोग करती हुई देश की सीमाओं को लांघकर सभी उम्र के जिज्ञासुओं के ज्ञान-वर्धन में सहयोगी बन रही है। कोई भी जिज्ञासु जो इस पाठशाला से जुड़कर ज्ञानार्जन करना चाहे, वह 9414077715 पर Whatsapp पर सूचित कर दें।

-प्रमोद हीरावत, जयपुर

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ का विनम्र अनुरोध

आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर स्वाध्याय संघ जोधपुर द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत सदस्य बनाए जा रहे हैं। स्वाध्याय संघ के उत्थान एवं विकास हेतु आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। अत: आप सभी से निवेदन है कि आप सभी स्वाध्याय संघ के विभिन्न सदस्य बनकर स्वाध्याय संघ के सम्वर्धन एवं श्रुतसेवा में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग करके पुण्य के भागीदार बनें।

स्वाध्याय निधि संरक्षक : 1,00,000/- एक मुश्त, **शिक्षा निधि स्तम्भ :** 51,000/- एक मुश्त, **स्वाध्याय निधि पोषक :** 21,000/- एक मुश्त, **स्वाध्याय शिक्षा-द्विमासिक :** 1,00,000/- 6 अंक हेतु सौजन्य, **स्वाध्याय शिक्षा :** 21,000/- एक अंक हेतु सौजन्य, **वार्षिक सदस्यता :** 2,100/- वार्षिक, **अन्य सहयोग :** इच्छानुसार।

सहयोग राशि आप चैक/ड्राफ्ट द्वारा भी स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के नाम से भिजवायें अथवा पंजाब नेशनल बैंक, जोधपुर के ऑनलाइन बैंक खाता संख्या 00592010003010 IFSCC Code-PUNB0005910 में इस नाम से नकद अथवा ड्राफ्ट द्वारा जमा करवाये। स्वाध्याय संघ को दिया गया आर्थिक सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत कर से मुक्त है।

-सुनील संकलेचा, सचिव-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र का निवेदन

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र विगत 15 वर्षों से संस्कार केन्द्रों के माध्यम से बालक-बालिकाओं में सुसंस्कार प्रदान करने का महनीय कार्य करता आ रहा है। वर्तमान में लगभग 80 दैनिक संस्कार केन्द्र सञ्चालित किये जा रहे हैं। जोधपुर शहर में 22 दैनिक पाठशाला और 30 रविवारीय संस्कार शिवर सञ्चालित किये जा रहे हैं। जिसमें लगभग 1800 बच्चे जुड़े हुए हैं। जोधपुर के बाहर पल्लीवाल, पोरवाल, मारवाड़, जयपुर, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि क्षेत्रों में संस्कार केन्द्र गतिमान हैं। केन्द्र का उद्देश्य बालक-बालिकाओं में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करना तथा जैनधर्म का शिक्षण देने के लिए गाँव-गाँव में धार्मिक पाठशाला स्थापित करना है। इन सारी गतिविधियों को चलाने के लिए बजट की महती आवश्यकता होती है।

आपसे आग्रह पूर्वक निवेदन है कि श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर की धार्मिक प्रवृत्तियों तथा बालक-बालिकाओं को संस्कारवान बनाने हेतु निम्नानुसार अर्थसहयोग देकर शासन की प्रभावना करने एवं पुण्यशाली बनने की कृपा करावें।

संस्कार निधि संरक्षक : 1,00,000/- एक मुश्त (दो बच्चों को संस्कारवान बनाने, गोद सदा के लिए), **संस्कार निधि स्तम्भ :** 51,000/- एक मुश्त (एक बच्चे को संस्कारवान बनाने, गोद सदा के लिए), **वार्षिक सदस्यता :** 5,100/- संस्कार केन्द्र के एक बच्चे को एक वर्ष तक के लिए गोद लेने हेतु (एक से अधिक छात्र को गोद लेने पर गुणित राशि प्रदान करावें।), **अन्य सहयोग :** इच्छानुसार।

सहयोग राशि आप चैक/ड्राफ्ट द्वारा भी Akhil Bhartiya Shri Jain Ratna Adhyatmik Sanskar Kendra, जोधपुर के नाम से भिजवायें अथवा पंजाब नेशनल बैंक, सोजतीगेट, जोधपुर के ऑनलाइन बैंक खाता संख्या 00592151009075 IFSC Code- PUNB0005910 में इस नाम से नकद अथवा ड्राफ्ट द्वारा जमा करवायें। संस्कार केन्द्र को दिया गया आर्थिक सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत कर से मुक्त है।

-राजेश भण्डारी, सचिव

संक्षिप्त समाचार

जयपुर-प्राकृत अध्ययन एवं शोध केन्द्र, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के द्वारा 11 से 25 जनवरी, 2021 तक अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत स्वाध्याय-माला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्कनाथजी चौधरी, निदेशक केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ने की। मुख्य अतिथि प्रोफेसर श्रेयांस कुमारजी सिंघई, विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर जगतरामजी भट्टाचार्य पश्चिम बंगाल, सारस्वत अतिथि डॉ धर्मेंद्र कुमारजी जैन, नईदिल्ली रहे। डॉ. सत्येन्द्र कुमारजी जैन ने विषय-प्रवर्तन किया तथा उद्घाटन समारोह का संयोजन डॉ. दर्शनाजी जैन, प्राकृत अध्ययन एवं शोध केन्द्र, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के द्वारा किया। इस अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत-स्वाध्याय-माला में देश के विभिन्न प्रान्तों से एवं कनाडा, दुबई एवं यू.एस.ए. से भी प्राकृत के जिज्ञासुओं ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. श्रेयांश कुमारजी सिंघई जयपुर ने प्राकृत की महत्ता को बताते हुए कहा कि-'यह प्राचीन समय में बोली जाने वाली मुख्य भाषा थी एवं प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन की दिशा में हम सभी को पहल करनी चाहिए, जिससे हमारे ज्ञान-विज्ञान के कोष में वृद्धि हो।'

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

वाराणसी-डॉ. इन्दुजी जैन राष्ट्र गौरव, दिल्ली को अरिहंत मित्र-मण्डल दुबई के द्वारा आयोजित दस लक्षण पर्व के अवसर पर ऑनलाइन दस दिवसीय विशेष व्याख्यान-माला के समापन पर 'विदुषी रत्न की उपाधि' से सम्मानित

किया गया। नई दिल्ली में संसद भवन के भूमि पूजन के अवसर पर इन्हें प्राकृत भाषा में मंगलाचरण करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप प्रोफेसर फूलचन्दजी जैन 'प्रेमी' एवं डॉ. मुन्नीपुष्पाजी जैन की सुपुत्री हैं।

बधाई

चेन्नई-मद्रास विश्वविद्यालय से जैन विद्या विभाग की शोधार्थी राजल बोरुंदिया को 31 दिसम्बर गुरुवार को पी एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. राजल ने 'जैनदर्शन में सप्तभङ्गी का विश्लेषणात्मक अध्ययन और इसके अनुप्रयोग' विषय पर विभागाध्यक्ष डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन के मार्गदर्शन में शोधकार्य पूर्ण किया। *-डॉ. दिलीप धींग*

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर-अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक वीरपिता श्री अमरचन्दजी लोढ़ा का 21 जनवरी, 2021 को

देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। सबके साथ सामञ्जस्य पूर्ण व्यवहार उनके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। उनके चेहरे पर सदा शान्ति-सौम्यता झलकती रहती थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण वे सबके प्रियपात्र थे। आप नियमित रूप से शक्तिनगर स्थानक में पधारकर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाले अग्रणी श्रावकरत्न थे। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप आपके सभी पारिवारिकजन संघ की गतिविधियों में उन्नयन एवं विकास में अपनी सहभागिता प्रदर्शित कर रहे हैं। आपने अपने सुपुत्र की वैराग्य भावना को देखते हुए गुरु हीरा के श्री चरणों में दीक्षा लेने हेतु सहर्ष आज्ञा प्रदान कर वीरपिता का विरुद निभाया था। जिसके फलस्वरूप आज वे रत्नसंघीय सन्तरत्न श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के रूप में जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

बेंगलुरु-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुरजीदेवीजी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्दजी आबड़ का 31 दिसम्बर, 2020 को

देहावसान हो गया। सबके साथ सामञ्जस्य पूर्ण व्यवहार आपके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। आप समय-समय पर गुरुभगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाली अग्रणी श्राविकारत्न थी। आबड़ परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। सन्त-सतीवृन्द की सेवा एवं स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में आबड़ परिवार सदैव तत्पर रहा है। आप मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की सांसारिक भाभीजी थी। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप आपके सभी पारिवारिकजन संघ की गतिविधियों में के उन्नयन एवं विकास में अपनी सहभागिता प्रदर्शित कर रहे हैं। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

कोयम्बटूर-अनन्य गुरु भक्त, सन्तसेवी, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री सोनराजजी बाघमार (कोसाणा वाले) का 2

जनवरी, 2021 को देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय, दया-पौषध करने वाले चिन्तनशील श्रावकरत्न थे। आप परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास में रहकर धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त करते थे। आप संघ-सेवा में तन-मन-धन से सदैव सक्रिय रहने के साथ गुप्त रूप से स्वधर्मी भाई-बहिनों की सेवा करते थे। रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी प्रवृत्तियों में बाघमार परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

गोटन-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सुश्राविका श्रीमती सीतादेवीजी धर्मपत्नी श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल का 8 जनवरी,

2021 को स्वर्गवास हो गया। आप समय-समय पर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-लाभ प्राप्त करने वाली तथा सामायिक-साधना, तप-त्याग आदि में अग्रणी श्राविकारत्न थीं। गोटन में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में ओस्तवाल परिवार सन्नद्ध रहता है। आपके धर्मसहायक श्री ओमप्रकाशजी ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन के अध्यक्ष एवं मन्त्री पद तथा आपके सुपुत्र श्री नवरतनजी ओस्तवाल ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन के मन्त्री पद का दायित्व निर्वहन कर संघ-सेवा में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। आतिथ्य-सत्कार में भी ओस्तवाल परिवार सदैव समर्पित रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

भोपाल-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अशोकजी सुपुत्र श्रीमान नमीचन्दजी नाहर का 25 दिसम्बर, 2020 को 53 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप तपस्वी थे, प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में अठाई, रात्रि-भोजन के त्याग, चौदस तिथि पर उपवास, प्रतिदिन दो-तीन सामायिक की पालना करते थे। पूज्य गुरुदेव के प्रति आपकी गहरी आस्था थी। वरिष्ठ श्रावक श्रीमान घेवरचन्दजी नाहर आपके बड़े पिताजी थे।

-संजय नाहर

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री लक्ष्मीचन्दजी सुपुत्र स्व. मानमलजी कोठारी (किशनगढ़ वाले) का 11 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक एवं प्रतिक्रमण स्थानक में जाकर करते थे। सदैव सन्त-सतीवृन्द की सेवा में रुचि रखते थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती विमलप्रभाजी कोठारी भी धर्मपरायण एवं नियमित रूप से सामायिक एवं प्रतिक्रमण तथा त्याग-तपस्या में लीन रहती है। आपके सुपुत्र श्री राजेशजी, संजयजी कोठारी भी धर्म प्रभावना करते रहते हैं। आपका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है एवं सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहता है। आप भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

किशनगढ़-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती राजकँवरजी धर्मसहायिका श्री सागरमलजी मुणोत ने व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. के मुखारविन्द से 11 जनवरी, 2021 को अजमेर स्थित आवास पर संलेखना संथारा ग्रहण कर महाप्रयाण किया। सामायिक-स्वाध्याय की रुचि के साथ-साथ आपका तप-नियमों में विशेष लगाव था। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सन्त-सती की सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप श्राविका मण्डल किशनगढ़ की प्रथम अध्यक्ष थी। आप 16 वर्षों से असाध्य बीमारी में भी प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में सेवा करती थीं, अठाई तक की तपस्या भी की। 2018 के शिवाजी नगर (किशनगढ़) में महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. के चातुर्मास में अनुपम सेवा का लाभ लिया। आपके सुसंस्कारों ने समूचे मुणोत परिवार को सुसंस्कारित किया। जिसके फलस्वरूप अमेरिका में रहते हुए आपके बड़े सुपुत्र श्री सुभाषचन्दजी गुरु हस्ती के फरमान स्वाध्याय के लिए अमेरिका के स्वाध्याय संघ के अन्तर्गत सप्ताह में चार दिन शिक्षक के रूप में सेवा दे रहे हैं और 2012 से आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा भी आयोजित करवा रहे हैं। आपका पूरा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा और गुरु भगवन्तों के दर्शन करने में सदैव तत्पर रहता है। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

-सुभाषचन्द जैन

अलवर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रेमलताजी धर्मपत्नी स्व. श्री श्यामबिहारीलालजी का 13 जनवरी, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता और सद्भावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपका जीवदया से विशेष लगाव था। आपने संस्कारी जीवन व्यतीत करते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था। आपका परिवार संघसेवा, समाजसेवा, गुरुभगवन्तों के दर्शन-वन्दन

करने में सदैव अग्रणी रहा है। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के अलवर चातुर्मास में सभी परिजनों ने धर्म-ध्यान एवं प्रवचन-श्रवण का अपूर्व लाभ प्राप्त किया था। स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में परिवार सदैव तत्पर रहता है। आपके दो सुपुत्र श्री राजकुमारजी एवं श्री प्रदीपकुमारजी तथा पाँच सुपुत्रियाँ सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-राजकुमार

मसूदा (अजमेर)-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सम्पतराजजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी ललवाणी का 12 नवम्बर, 2020 को

निधन हो गया। आप धर्मपरायण, प्रतिदिन आठ से दस सामायिक एवं व्रत-प्रत्याख्यान करते थे। आप समय-समय पर गुरुदर्शन-वन्दन का लाभ लेते थे। आप अपने परिवार में भ्राता श्री उमरावसिंहजी एवं दो सुपुत्र श्री सिंहराज-सुधाजी एवं निर्मल-ललिताजी तथा दो सुपुत्रियाँ श्रीमती मीनाक्षीजी लोढ़ा एवं श्रीमती मधुजी गेलड़ा सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

अजमेर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी धर्मपत्नी श्री शान्तिलालजी खाबिया (मूल निवासी पीसांगन) का 68

वर्ष की आयु में 31 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। कोरोना महामारी में भी आप शान्त-गम्भीर एवं सम भावों में रहे। आपने हर समय देव-गुरु-धर्म की शरण रखी। सभी परिजनों से उच्चभावों से क्षमायाचना के साथ समाधि संलेखना की तीव्र भावना सहित सभी को धर्म-प्रेरणा करते हुए उच्च भावों में सागारी प्रत्याख्यानों के साथ काल धर्म को प्राप्त किया। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

-मनरोज मेहता, किशनगढ़

सिंधनूर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कँवरलालजी बोहरा का 79 वर्ष की आयु में 3 जनवरी, 2021 को निधन हो गया।

आप मिलनसार, मृदुस्वभावी थे तथा सन्तों के दर्शन-प्रवचन आदि में रुचि थी, आप व्रतों के धारक एवं स्थानक के निकट घर होने से सुपात्रदान का भी सुअवसर प्राप्त करने वाले श्रावक थे। आप एकान्त सामायिक प्रेमी थे। आपके बड़े भ्राता श्री मानकचन्दजी बोहरा का भी 8 माह पूर्व देवलोक गमन हो गया था।

-धरमचन्द एवं सज्जनराज बोहरा

इन्दौर-धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री माणकचन्दजी मारू (एडवोकेट) का 100 वर्ष की आयु में 8 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। अन्तिम समय तक वे स्वस्थ एवं सक्रिय रहे। आपकी इच्छानुसार आपके नेत्रों का दान किया गया। लगभग 90 वर्षों से आप नियमित सामायिक करते थे एवं स्वाध्याय, लेखन, भजन-गान आपकी दिनचर्या में शामिल था। प्रतिदिन सवेरे घूमना और साकेत हास्य क्लब में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना उन्हें अत्यन्त प्रिय था। 1951 से आप रतलाम बार एसोसिएशन के आजीवन सदस्य रहे। रतलाम बार एसोसिएशन के अध्यक्ष और जिला प्रोबेशनरी अधिकारी के रूप में आपने कई यादगार फैसले करवाए। वकालात के साथ-साथ आप सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में भी सक्रिय रहे। आपको कई अलङ्करणों से सम्मानित किया गया। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती मदनकुमारीजी एवं 4 पीढ़ी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

इन्दौर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उर्मिलादेवीजी धर्मसहायिका श्री पारसमलजी लुंकड का 18 दिसम्बर, 2020 को

77 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अत्यन्त सरल, सहज एवं सौम्य व्यवहार की धनी थीं। आपका पूरा जीवन धार्मिक एवं सत्कार्यों से ओतप्रोत था। जीवन भर आप जैनधर्म एवं साधु-सन्तों की सेवा के प्रति समर्पित रही और मृत्यु उपरान्त भी आपने अपना भौतिक शरीर लोकहित की भावना से समाज को समर्पित कर दिया। निधन के पश्चात् आपकी इच्छानुसार परिवारजन द्वारा आपकी आँखें, त्वचा एवं देहदान मेडिकल कॉलेज में किया गया।

-नरेन्द्र जैन ककड़

जयपुर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री केवलचन्दजी जैन का 11 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपकी

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरल, सहज, करुणाशील एवं उदारमना था। आपके सुपुत्र श्री हेमन्तकुमारजी जैन, राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा अधिकारी एवं श्री महेन्द्र कुमारजी पारख भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य हैं और आचार्यप्रवर एवं सन्त-सतियों की सेवा में दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित होते रहते हैं। आपका परिवार धर्मनिष्ठ एवं संघ की गतिविधियों में अग्रणी है।

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती भँवरीदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्दजी जैन (मण्डावरा वाले) का 20

दिसम्बर, 2021 को 90 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता और सेवाभावना से ओतप्रोत था। आपका जीवदया से विशेष लगाव था, प्रतिदिन पक्षियों को चुग्गा डालती थीं। आप लम्बे समय से माला, सामायिक आराधना-साधना किये बिना अन्न का कण भी मुँह में नहीं रखती थीं। सन्त-सतियों की भक्तिभाव पूर्वक सेवा से ही आपका मन प्रसन्न होता था। आपके सुपुत्र धर्मचन्दजी, बाबूलालजी, गौतमचन्दजी और समस्त परिवार आपके दिखाये समाज-सेवा के मार्ग पर अग्रसर हैं।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती भँवरीदेवीजी धर्मपत्नी श्री पनराजजी ओस्तवाल (बाबूजी भोपालगढ़ वाले),

का 24 जनवरी, 2021 को संलेखना संथारा पूर्वक देवलोक गमन हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी तथा व्रत-नियम पालन में सदैव अग्रणी थी। आचार्यप्रवर के भोपालगढ़ चातुर्मास में आपने और आपके पारिवारिक जनों ने भरपूर सेवा का लाभ लिया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

विजयनगर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री शोभागसिंहजी बुरड़ का 11 जनवरी, 2021 को 78 वर्ष की वय में देहावसान हो

गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप संस्कारी जीवन के धनी होने के साथ विनम्रता, क्षमाशीलता, मिलनसारिता, उत्साह आदि अनेक गुणों से सम्पन थे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती हगामकँवर, तीन सुपुत्र, दो सुपुत्री, पाँच सुपौत्र, एक सुपौत्री, एक पड़पौत्र सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। आपका परिवार सन्त-सतियों की सेवा एवं धर्माराधना में सदैव तत्पर रहता है।

शूले-बेंगलोर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाबाईजी धर्मपत्नी श्री शंकरलालजी खींचा (सेवरिया वाले) का 30

दिसम्बर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आपने 2004 में परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाये चातुर्मास में शूले-बेंगलोर में गुरुभक्ति और गुरु-सेवा का लाभ लिया। आप अपने पीछे ससुराल में भरापूरा श्रद्धानिष्ठ परिवार छोड़कर गयी है।

-गौतमचन्द ओस्तवाल, मन्त्री

मण्डावर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सोहनलालजी सुपुत्र श्री तोतारामजी जैन का 2 दिसम्बर, 2020 को 82 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप सरलमना, दयाप्रेमी और सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहते थे। संघसेवा, सन्तसेवा, समाजसेवा में अग्रणी रहने वाले श्रावकरत्न थे। आप अपने पीछे तीन सुपुत्र श्री जिनेन्द्रजी, हरीशजी, अशोकजी और चार सुपुत्रियाँ चन्दनबालाजी, सीताजी, गीताजी, सुषमाजी सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

सिकन्दराबाद-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री रतनलालजी पितलिया का 11 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप सेवाभाविनी और सरल हृदय श्राविका थी। आपके लगभग 15 वर्षों से रात्रि-भोजन त्याग, जमींकन्द का त्याग था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती रहती थीं। सन्त-सती मण्डल की सेवा में तत्पर रहने के साथ-साथ आपका जीवन सरलता, मधुरता और सादगी से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे चार सुपुत्र, चार बहू और नाती-पोतों से भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

-बसन्त कुमार पितलिया

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री महावीरप्रसादजी जैन (बिशनपुरा वाले) का 31 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप सहज, सरल एवं उदारमना थे। आपके अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

(शेषांश पृष्ठ 9 का)

हो सकता है। राज्य प्रशासन सही नहीं होने पर राष्ट्र समाप्त हो सकते हैं तथा दुराचरणों से मनुष्यों का यश समाप्त हो सकता है। अपरीक्षितकारक का यह श्लोक हमें सावधान करता है कि जहाँ तक सम्भव हो कलह एवं कोर्ट-कचहरी से दूर ही रहना चाहिए।

कलह का निवारण किस प्रकार हो? प्रथम तो कलह की उत्पत्ति के जो कारण हैं उनका परित्याग कर देने पर कलह समाप्त हो सकता है। उसके अतिरिक्त कलह निवारण के अन्य उपाय हैं-1. क्षमा का प्रयोग, 2. समझौता, 3. सकारात्मकदृष्टि, 4. अपनी भूल का अनुभव, 5. बड़े हित का चिन्तन।

ये सभी उपाय हमारे दीर्घकाल के कलहों को दूर करने में भी कारगर सिद्ध हो सकते हैं। आवश्यकता है मानसिक रूप से सौहार्द एवं स्नेह का सञ्चार करने की।

आचार्यश्री हस्ती का कथन है-"समाज में एक-दूसरे पर विश्वास आवश्यक है। शरीर में आँख की चूक से कभी पैर में काँटा लग जाय तो क्या पैर आँख पर भरोसा नहीं करेगा? और क्या आँख पैर का काँटा निकालने में सहयोग नहीं करेगी? यह विश्वास का धागा तथा क्षमाशीलता का स्नेह सञ्चरित होने पर एकता, सौहार्द एवं समरसता का दीपक स्वतः जगमगा उठता है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के नये प्रकाशन

1. आचाराङ्ग की अनुप्रेक्षा	सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन	मूल्य 50 रुपये
2. स्वस्थ एवं साधक-जीवन के लिए आहार	सौ. मंगला चोरड़िया	मूल्य 40 रुपये
3. हमारे जीवन की नई कहानियाँ	कमला हणवन्तमल सुराणा	मूल्य 40 रुपये
4. बोध कथाएँ	सम्पादक - सम्पतराज चौधरी	मूल्य 40 रुपये
5. क्यों जरूरी?	डॉ. श्वेता जैन	मूल्य 60 रुपये

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 89
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल सत्साहित्य सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

815 श्री पारसमलजी जैन, भोपाल

21000/- जिनवाणी स्तम्भ सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

212 श्री एम. अजीत कुमारजी रांका, बेंगलुरू

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16187 से 16193 तक कुल 7 सदस्य बने

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री हुकमीचन्दजी, प्रकाशचन्दजी मेहता, ब्यावर, सुपुत्र चि. अभिषेकजी संग सौ.कां. निकिताजी के विवाहोपलक्ष्य एवं गुरु आम्नाय के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री राजकुमारजी, प्रदीपकुमारजी जैन, अलवर, सुश्राविका स्व. श्रीमती प्रेमलताजी धर्मपत्नी स्व. श्री श्यामबिहारीलालजी के प्रथम पुण्यस्मृति दिवस पर।

5100/- श्री पदमचन्दजी मुणोत, जयपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री गाढमलजी मुणोत की 41वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन।

5000/- श्री पदमचन्दजी-इचरजदेवीजी मुणोत, जयपुर, सुपौत्री सौ.कां. आस्थाजी (सुपुत्री श्री सुबोधजी मुणोत) संग चि. आनन्दजी (सुपत्र श्री पदमचन्दजी नाहर) के विवाहोपलक्ष्य तथा सुपौत्र नमनजी (सुपुत्र श्री सुनीलजी मुणोत) के कम्प्यूटर साईंस में अमेरिका से एम.टेक करने तथा वहीं नौकरी लगने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री इन्दरमलजी, सुरेन्द्र कुमारजी, नरेन्द्र कुमारजी, धनराजजी, राजेन्द्रजी, कमल कुमारजी जैन (चौथ का बरवाडा वाले), जयपुर चि. नितिनजी संग सौ. कां. आकांक्षा सुपुत्री श्री गौतमचन्दजी जैन (खेरदा वाले), सवाईमाधोपुर के साथ 27 नवम्बर, 2020 को सम्पन्न शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

5000/- श्री महेन्द्रकुमारजी, मोहनलालजी कटारिया, नागपुर, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमली म.सा. की दीक्षा शताब्दी के उपलक्ष्य में।

3100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, महावीर नगर, सवाईमाधोपुर, मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री धर्मेन्द्रकुमारजी (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य), श्रीमती मधुजी जैन, सवाईमाधोपुर-जयपुर, आजीवन शीलव्रत अङ्गीकार करने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री बाबूलालजी जैन, कंजौली-हिण्डौन वाले, जन्म दिवस के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती ज्ञानदेवीजी सुखलेचा, जयपुर सप्रेम।

2100/- श्री सौभागमलजी, हरकचन्दजी, हनुमानप्रसादजी, महावीरप्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले) पूजनीया माताजी स्व. श्रीमती माँगीबाईजी की पुण्य तिथि पर स्मरणाञ्जलि स्वरूप।

2100/- श्री भैरूलालजी, ओमप्रकाशजी, महावीरचन्दजी, नवरत्नमलजी, दिव्यांशजी ओस्तवाल, गोटन, श्रीमती सीतादेवीजी धर्मसहायिका श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल की पुण्यस्मृति में।

2100/- श्री नेमीचन्दजी, शान्तिलालजी, राजेशजी, यशजी खाबिया, पीसांगन-अजमेर, श्रीमती पुष्पाजी धर्मपत्नी श्री शान्तिलालजी खाबिया का 31 दिसम्बर, 2020 को देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1601/- श्री महेन्द्रजी ललिताजी गांग, सूरत पूज्य पिताजी स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग, जोधपुर निवासी की 16वीं पुण्य तिथि पर।

1101/- श्री हरीशचन्द्रजी जैन (कुण्डेरा वाले), हा.बोर्ड, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. नितिनजी संग सौ.कां. आयुषीजी सुपुत्री श्री मुकेशकुमारजी जैन रोहिल, अलीगढ़ के शुभविवाह 25 नवम्बर, 2020 को होने के उपलक्ष में।

1100/- श्री ताराचन्दजी मुणोत, नसीराबाद सप्रेम।

1100/- श्री जिनेन्द्रकुमारजी, हरीशकुमारजी, अशोककुमार जी जैन, मण्डावर, पूज्य पिताजी श्री सोहनलालजी जैन का 2 दिसम्बर, 2020 को प्रयाण हो जाने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री हेमेन्द्रकुमारजी, हिमांशुजी जैन (उगेंद वाले),

सवाईमाधोपुर, पूज्या मातुश्री श्रीमती रामकन्या बाईजी की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री गिर्राजजी जैन, कोटा, पूज्य पिताजी श्री महावीरप्रसाद जी जैन (बिसनपुरा वाले) का 31 दिसम्बर, 2020 को निधन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री प्रसन्नचन्दजी जैन, श्रीमती मनोहरदेवी जी जैन, बलरामपुर, चि. अक्षयजी संग सौ.कां. पूजाजी के विवाहोपलक्ष्य में।

1100/- श्री गजेन्द्र कुमारजी, जिनेन्द्रकुमारजी बुरड़, विजयनगर-अजमेर, पूज्य पिताजी श्री कैलाशचन्द्र जी बुरड़ का 21 नवम्बर, 2020 को निधन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री नेमिचन्दजी नाहर, भोपाल, सुपुत्र श्री अशोकजी नाहर का 25 दिसम्बर, 2020 को निधन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री बसन्तकुमारजी पितलिया, सिकन्दराबाद, सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री रतनलालजी पितलिया का 11 दिसम्बर, 2020 को निधन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री नितेशजी, अमनजी, आशुतोषजी जैन (फलोदी वाले), सवाईमाधोपुर पूज्य पिताजी श्री गौतमचन्दजी जैन के 21 दिसम्बर, 2020 को देवलोक गमन होने पर पृण्य स्मृति में।

1100/- श्री धनसुरेशजी, आशीषजी, अमितजी सुमितजी जैन, महावीर नगर-सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री धनसुरेशजी जैन के 12 जनवरी, 2021 को तेले की तपस्या की खुशी में।

1100/- श्री बालचन्दजी भूरा,कोलकाता सप्रेम।

1100/- डॉ. ललितजी-श्रीमती नीलमजी जैन, श्री निखिलजी-श्रीमती आकांशाजी, सुश्री अनिकाजी जैन, अजमेर, अपने सुपौत्र मा. अद्धिकजी जैन (सुपुत्र श्री नितिनजी-प्रियंकाजी जैन) के प्रथम जन्मदिवस 12 दिसम्बर, 2020 के शुभ प्रसङ्ग पर।

1100/- श्री सिद्धराजजी, निर्मलकुमारजी ललवाणी, मसूदा-अजमेर, सुश्रावक सेठ साहब श्री सम्पतराजजी ललवाणी के 12 नवम्बर, 2020 को देहावसान होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी, कमलाजी, लोकेन्द्रनाथजी, ऋतुजी, सुश्री लोरीजी-आर्विजी मोदी, जोधपुर कीर्तिशेष श्री हुकुमनाथजी एवं श्रीमती कृष्णाजी मोदी की 40वीं एवं 19वीं पुण्यतिथियों पर स्मरणाञ्जलि स्वरूप।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, बाबूलालजी, गौतमचन्दजी जैन, मण्डावरा वाले. सुश्राविका श्रीमती भँवरीदेवीजी, धर्मपत्नी स्व. श्री नेमिचन्दजी जैन का 20 दिसम्बर को देहावसान हो जाने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- सौ. अनिताजी-किशोरजी लुंकड, जलगाँव, सुपुत्र श्री रोहितजी की सर्विस लगने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री गोविन्द सहायजी जैन (चकेरी वाले), न्यू मण्डी-सवाईमाधोपुर, सुपुत्री सुश्री अदितिजी जैन के 20 जनवरी, 2021 को प्रथम बार तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती अन्जूजी कोठारी, जयपुर, पूजनीया सासू माँ श्रीमती कुसुमजी कोठारी के सफल ऑपरेशन की खुशी में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

110000/- श्री सम्पतराजजी चौधरी, पटपड़गंज-नईदिल्ली, पुस्तक 'बोध कथाएँ' के प्रकाशन हेतु।

11000/- श्री जौहरीमलजी चाम्बड, जोधपुर सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु ट्रस्टी

1. डॉ. मंजुलाजी बम्ब, तिलक नगर, जयपुर
2. श्रीमती पूर्णिमाजी धनपतजी भंसाली, मुम्बई

आगामी पर्व तिथि

माघ शुक्ला 2, शनिवार	13.02.2021	आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 101वाँ दीक्षा दिवस
माघ शुक्ला 8, शनिवार	20.02.2021	अष्टमी
माघ शुक्ला 14, शुक्रवार	26.02.2021	चतुर्दशी, पक्खी
फाल्गुन कृष्णा 8, शनिवार	06.03.2021	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14, शुक्रवार	12.03.2021	चतुर्दशी
फाल्गुनी अमावस्या, शनिवार	13.03.2021	पक्खी

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 91
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

मोची बन्धु की श्रद्धा

डॉ. दिलीप धींग

जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का सभी जातियों और वर्गों में श्रद्धास्पद स्थान था। जोधपुर प्रवास के दौरान उनके प्रभावशाली प्रवचन सुनकर एक मोची परिवार के सभी सदस्यों ने व्यसन-मुक्त जीवन जीने की प्रतिज्ञा कर ली। नित्य प्रवचन-श्रवण से जिनवाणी के प्रति मोची परिवार की श्रद्धा सघन होती गई और पूरा परिवार जैन धर्मानुयायी बन गया। परिवार के सभी सदस्यों ने जैन दिवाकर जी से पंच परमेष्ठी, सामायिक और प्रतिक्रमण का महत्त्व समझा। सभी सदस्यों ने अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार दैनिक नियम ग्रहण किये।

एक बार मोची समाज की एक बारात भोपालगढ़ गई। उस बारात में उक्त परिवार का एक वरिष्ठ सदस्य भी गया। उस समय आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज भोपालगढ़ में विराजमान थे। सुबह के समय उस मोची बन्धु ने समय निकालकर आचार्यश्री की धर्मसभा में उनका प्रवचन सुना।

सन्ध्या के समय में वह मुँहपत्ती, आसन-पूँजणी आदि धार्मिक उपकरण लेकर प्रतिक्रमण करने धर्मस्थानक पहुँचा और प्रतिक्रमण किया। उसे देखकर एक मुनिराज ने पूछा-'कहाँ के रहने वाले हो? ओसवाल तो नहीं लगते हो?'

'गुरुदेव! मैं जोधपुर निवासी मोची परिवार का हूँ।'

'यह प्रतिक्रमण की प्रेरणा कहाँ से मिली?'

'गुरुदेव! जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज से मेरे पूरे परिवार ने समकित-रत्न स्वीकार किया है। मैं अब नियमित प्रतिक्रमण करता हूँ। इस तुच्छ मानव पर उस महान् सन्त का बहुत उपकार है।'

उस जैन धर्मानुयायी मोची बन्धु की श्रद्धा और नियम-निष्ठा देखकर सबको अतीव प्रमोद हुआ। दूसरे गाँव में बाराती होकर भी उसने सन्त-दर्शन, व्याख्यान और प्रतिक्रमण का लाभ लिया।

निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन हाउस, 18, रामानुज अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

जीवन की रेल चली

श्री मनमोहनचन्द बाफना

रेल चली भई रेल चली दो पहियों की रेल चली।
अजब निराली रेल चली, बड़ी ही प्यारी रेल चली
कभी आगे कभी पीछे, कभी दाँये कभी बाँये
कभी ऊपर कभी नीचे, दौड़ रही है गली-गली।।
ये गाड़ी है बड़ी निराली, बड़ी तेज रफ़्तार है
नाम है इसका जीवन एक्सप्रेस जिस पर दुनिया

सवार है
तरह-तरह के डिब्बे इसमें, आगे-पीछे जुड़े हुए हैं
सबका नाम देह और तन है-इक दूजे से जुड़े हुए हैं
मौत के ईंधन से श्वास के ईंधन से
दौड़ रही है गली गली.....
सुख और दुःख की दो पटरी है,
जिस पर गाड़ी भाग रही है
एक सवारी नाम आत्मा, इक डिब्बे से झाँक रही
पहला स्टेशन है ये बचपन, बड़ा ही सुन्दर प्यारा
तरह-तरह के खेल खिलौने,अजब तरह का नज़ारा
खेले खेल खिलौने रे, लगा मुसाफ़िर रोने रे.....
इस हँसने-रोने में गाड़ी, धीरे से फिर सरक चली...
अगला जो स्टेशन आया, जिसका है नाम जवानी
प्यास लगी पैसेंजर उतरा नीचे पीने पानी
तभी अनोखा एक यात्री, प्लेटफार्म आया
उसको भी अपने डिब्बे में जब उसने बिठलाया
बातों में ही उलझ गये खेल-खिलौने भूल गये
इन दोनों को लेकर गाड़ी धीरे से फिर सरक चली
आगे को जरा और चली तो डिब्बे में शोर हुआ
एक नन्हा-सा और यात्री, दोनों के सङ्ग और चढ़ा
तभी तीसरे स्टेशन का सिग्नल इन्हें नज़र आया
नाम बुढ़ापा लिखा हुआ था,
कुछ उजड़ा-उजड़ा पाया
गति ट्रेन की मन्द हुई खिड़की सारी बन्द हुई
और चक्कर में पड़ा मुसाफ़िर,
गाड़ी फिर सरक चली.....
आगे को जरा और चली तो,
एक बड़ा ही जंक्शन आया
पहला यात्री बाहर झाँका, था श्मशान लिखा पाया
पहला वाला बोला मुझको, अब तो यहीं उतरना है
यह वह स्टेशन है, जहाँ से गाड़ी मुझे बदलना है
साथ जोये खड़े-खड़े, दौड़ के मिस्टर उतर पड़े
छोड़ के तन और आत्मा, दूजी गाड़ी बैठ चली
रेल चली भई रेल चली, दो पहियों की रेल चली।
अजब निराली रेल चली, बड़ी ही प्यारी रेल चली।

-प्रमोद दाल मिल, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

पश्चात्ताप का भाव

मीनाक्षी चौपड़ा

नितिन उडीसा के एक छोटे-से गाँव में पला-बढ़ा था। पढ़-लिखकर वह एक अच्छी नौकरी करने लगा। नौकरी में लगातार हुई उन्नति से उसका मान-सम्मान बढ़ने लगा। अब वह शहर में रहने लगा। वहाँ नितिन को कम्पनी की ओर से ग्यारहवीं मञ्ज़िल पर एक आलीशान फ्लैट रहने के लिए दिया गया। नितिन अपनी पत्नी और बच्चों के साथ आराम से रहने लगा। कुछ समय बाद नितिन के पिताजी उससे मिलने शहर आए। उसके पिताजी बहुत ही वृद्ध, सरल और निश्चल स्वभाव के व्यक्ति थे। उन पर उम्र का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता था। उनके हाथ-पैर काबू से बाहर हो गए थे अर्थात् न चाहते हुए भी हाथ-पैर हिलना, धुँधला दिखना आदि शारीरिक कमज़ोरियाँ उनमें स्पष्ट दिखायी पड़ती थीं।

नितिन के पिताजी नितिन और उसकी पत्नी के कार्यस्थल पर जाने के बाद अपने पोते के साथ फ्लैट में दिन-भर रहते और दोनों खूब बातें करते। वह अपने पोते को रामायण और महाभारत की अच्छी-अच्छी शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते। पोता खूब मन लगाकर उन कहानियों को सुनता। उनके नन्हे से पोते का नाम अंश था। घर में क्रॉकरी के महँगे-महँगे सामान थे। एक दिन की बात है, दादाजी को क्रॉकरी के बर्तन में भोजन मिला। उनका हाथ काबू में न रहने कारण क्रॉकरी गिरकर टूट गई। इस पर नितिन की पत्नी बाज़ार से लकड़ी के बर्तनों का एक सेट ले आई, जिसमें थाली-कटोरी आदि शामिल थे।

अब दादाजी को नित्य-प्रतिदिन उन बर्तनों में भोजन मिलने लगा। दादाजी को इस बात का बुरा तो लगा, किन्तु उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। एक दिन अंश खेल-खेल में लकड़ी के कुछ बर्तन बना रहा था।

इस पर नितिन और उनकी पत्नी यानी कि अंश के मम्मी-पापा ने उसको डाँट लगाई और पूछा कि यह क्या कर रहे हो?

अंश ने बालोचित (बाल मन से) उत्तर दिया-''मैं लकड़ी के कटोरे और बर्तन बना रहा हूँ।'' इस पर अंश के मम्मी-पापा ने पूछा कि-''इसकी क्या आवश्यकता है? इसे क्यों बना रहे हो?''

अंश ने ज़वाब दिया-''जब आप वृद्ध होंगे तो आपको इन बर्तनों की आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए बना रहा हूँ।'' अब नितिन और उसकी पत्नी को अपनी गलती पर पछतावा हुआ। पति-पत्नी दोनों ने पिता के पैर छूकर क्षमा-याचना की। पिताजी ने उन्हें क्षमा कर दिया। बड़े लोग स्वभाव के सरल होते हैं। अत: उनसे माफ़ी मिलने में देरी नहीं लगती।

शिक्षा-जो व्यवहार हमें अपने लिए पसन्द न हो, वह दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए तथा घर के बड़े-बुजुर्गों का सदैव सम्मान करना चाहिए।

-सुपुत्री श्री प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, 4/265, लाखन कोटड़ी, अजमेर (राज)

पञ्चेन्द्रिय विषयों से डरना

डॉ. वीरसागर जैन

आओ भाई आओ बहना!
मान लो तुम सब मेरा कहना।।
मान लो तुम सब मेरा कहना
पञ्चेन्द्रिय-विषयों से बचना।।टेक।।
एक-एक इन्द्रिय दु:खदाई
जिसने सेया मौत ही पाई
इनसे अत: दूर ही रहना
मान लो तुम सब मेरा कहना।।
देखो हाथी कैसा प्यारा।
किन्तु **स्पर्शन** ने मारा।
उससे मिला कूप में गिरना।।1।।
मछली कैसी प्यारी लगती।
उसको **रसना** इन्द्रिय ठगती।
काँटा खाय तड़फकर मरना।।2।।
भौंरा फूलों पर मण्डराता
और उसी में बन्द हो जाता।
घ्राण इन्द्रिय वश मृत्यु पाना।।3।।
दीपक पर पतंग गिरता है
और शीघ्र जिन्दा जलता है।
कारण? मात्र **चक्षु** वश होना।।4।।
हिरन उछलता-फिरता है
सुन संगीत आप बँधता है।
कारण? मात्र **कर्ण** वश होना।।5।।
उदाहरण ये एक-एक के
किन्तु हम वश हैं पाँचों के।
सोचो हमें कौन दु:ख भरना!

Questions and Answers

Sh. Dulichand Jain

Q.- What is the attitude of Jainas towards other religions?

Ans.- Jainas are remarkably appreciative of other religions and faiths. The Jaina doctrine of anekāntavāda (non-absolutism) teaches them to respect the viewpoints of other religions. It also helps them to communicate different viewpoints in a wise and compassionate manner.

Jainas welcome interfaith religious dialogue and events. There are many instances of Jainas donating to organizations of other faiths. Some of the great Jaina ācāryas have also helped diffuse rivalry and controversy between followers of rival faiths. A true Jaina endeavours to bring peace to every situation, even if it is between people of opposing faiths.

Q.- How can the pursuit of Jaina values bring happiness to humanity?

Ans.- The Jaina religion gives importance to peace, compassion, selfless service and non-violence. It also asks us to

moderate and reduce our desires. All of these qualities are greatly needed to spread happiness in the world today.

The religion's emphasis upon right conduct, co-existence, non-violence and non-possession can bring about a real change at a micro and macro level. It can free a person from vices, a family from conflicts, a society from ostentation, a nation from corruption, and the world from terrorism.

By following the principles of Jainism, there can be peace and harmony in the world.

-70, टी.टी.के. रोड़, आल्वारपेट, चेन्नई-600018 (तमिलनाडु)

साथी संगी चाहे कहे कुछ भी गलत काम नहीं करना कभी

कई बार हम कोई कार्य करना नहीं चाहते, पर केवल इसीलिये करते हैं कि हमारे मित्र अथवा आस-पास के लोग हमें करने के लिए दबाव डालते हैं या आग्रह करते हैं। इसे ही पियर प्रेशर कहते हैं। एक तरह का भावनात्मक दबाव।

हमारे विचार, स्वभाव, पसन्द-नापसन्द, रुचि आदि पर उस समाज का, जिसमें हम रहते हैं, बहुत प्रभाव पड़ता है। साथ ही हमारी संगति, समवयस्क लोगों से भी हमारी जीवनशैली बहुत प्रभावित होती है। हमारे समूह के लोगों की जीवनशैली में परिवर्तन, हमें भी परिवर्तन हेतु दबाव डालती है। क्योंकि भेड़चाल चलना मानवीय प्रकृति है। बहुत कम लोगों में इतना साहस होता है कि वे इस दबाव का सामना कर सकें तथा भीड़ के साथ चलने के बजाय सही रास्ते का चयन कर सकें।

वैसे दबाव के भी सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं।

हर व्यक्ति का जीवन के प्रति एक अलग व्यक्तिगत नज़रिया होता है। जीवन जीने की अलग शैली, अलग विचार होते हैं। लेकिन जब समूह में रहते हैं, तो हम दूसरे लोगों के साथ सम्मिलित होकर उनके जैसे करने, जीने के लिए दबाव में आ जाते हैं। जैसे- आपको हर वीकएण्ड पर पार्टी करना, देर रात तक बाहर रहना, धूम्रपान, शराब पीना कतई पसन्द नहीं है, लेकिन आपके समूह के अन्य लोग ऐसा करने में आनन्द मानते हैं, तो वे आपको भी ऐसा करने तथा उनके साथ सम्मिलित होने के लिए दबाव डालते हैं। या तो आप मान जाते हैं, या मना कर देते हैं। यदि आप 'नहीं' बोलते हैं तो सब आपको चिढ़ाते हैं या मज़ाक बनाकर वैसा करने के लिए मज़बूर करते हैं। उस समय 'नहीं' कहना हर एक के बस की बात नहीं है। ऐसे में व्यक्ति अपनी वैयक्तिकता खो देता है। उसे लगता है कि यदि मैं ऐसे नहीं करूँगा तो मेरे दोस्तों में, मैं अपनी जगह नहीं बना पाऊँगा अथवा पिछड़ जाऊँगा। ये दबाव कभी-कभी इतना हावी हो जाता है कि बाकी अच्छा-बुरा नहीं सोच पाते।

सकारात्मक पहलू देखें तो आप स्वयं को और बेहतर बना सकते हैं। आप दूसरों को देखकर नए नज़रियों और जीवनशैली के नए तरीके से अवगत होते हो। ये आपको अवसर देता है-खुद के लिए बेहतर चुनने का।

लेकिन इसके लिए समूह के लोगों का सुसंस्कारों वाला होना ज़रूरी है। क्योंकि वे आपके साथ आपके व्यक्तित्व को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अच्छे साथी आपको नई चीज अपनाने के लिए दबाव नहीं डालते वरन् प्रेरित (Inspire) करते हैं।

खासतौर से किशोर अवस्था (Teenage) वह अवसर है, जब व्यक्ति बाहरी दुनिया से रूबरू होते हैं। ज़िन्दगी की स्वतन्त्रता का चरण यहीं से शुरू होता है। व्यक्ति के आदर्श, सिद्धान्त, उसके व्यक्तित्व की दिशा यहीं से आकार लेना प्रारम्भ करती है, जिसमें आसपास के लोगों का बहुत प्रभाव पड़ता है। कई बार तो कुछ बच्चे बहकावे में आकर पूरी ज़िन्दगी खराब कर लेते हैं।

-'संस्कारम्' पुस्तक से साभार

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1– मन्त्र किसे कहते हैं?

उत्तर– जिसमें कम शब्दों में अधिक भाव और विचार हो और जो कार्यसिद्धि में सहायक हो, जिसके मनन से जीव को रक्षण प्राप्त हो, उसे मन्त्र कहते हैं।

प्र. 2– नवकार मन्त्र का क्या महत्त्व है?

उत्तर– नवकार मन्त्र का अर्थ है–नमस्कार मन्त्र। प्राकृत भाषा में नमस्कार को 'णमोक्कार' कहते हैं। इसमें पाँच पदों को नमन किया गया है। इनमें से दो देवपद (अरिहंत और सिद्ध) एवं शेष तीन गुरु पद (आचार्य, उपाध्याय एवं साधु) हैं। ये पाँचों पद अपने आराध्य या इष्ट होने के साथ हमेशा परम (श्रेष्ठ) भाव में स्थित रहते हैं, इसलिए इन्हें पञ्च परमेष्ठी भी कहा गया है। इस मन्त्र के उच्चारण से पापों का नाश होता है। यह मंगलकारी है।

–'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से साभार

विद्यावान्

डॉ. रमेश 'मयंक'

वही
विद्यावान् कहलाता है
जो सत्य बोलता
और समस्त जीव समूहों पर
मैत्री भाव अपनाता है,
मनुष्य होकर गुरु–ज्ञान से
देवत्व को पा जाता है।

–बी–8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़–312001 (राज.)

इन्द्रियों का सदुपयोग तथा दुरुपयोग

इन्द्रिय का नाम	सदुपयोग	दुरुपयोग
1. कान	व्याख्यान, धर्मकथा, प्रतिक्रमण, मांगलिक आदि सुनना।	फूहड़ म्यूजिक, गाने आदि सुनना
2. आँख	जैन सन्तों के दर्शन करना।	टी.वी. देखना, इण्टरनेट, गेम खेलना।
3. नाक	परफ्यूम सूँघना नहीं, गुलाब सूँघना नहीं।	दुर्गन्ध से छी: छी:, गन्दा ऐसे बोलना अथवा विचार करना नहीं।
4. जिह्वा	अच्छी प्रशंसा के शब्द बोलना, अजैन केडबरी, कोल्ड ड्रिंक्स, अण्डे वाली पीपर चॉकलेट, आइसक्रीम अथवा ब्रेड नहीं खाना, रेस्टोरेण्ट अथवा होटल में नहीं खाना, मीठी वाणी बोलना।	गाली बोलना, गन्दे शब्द बोलना, झगड़ा करना, मित्र अथवा साथी के साथ बहस करना, झूठ बोलना 'यह तीखा है, यह कड़वा है, यह फीका है' ऐसा कहकर भोजन नहीं करना।
5. त्वचा/शरीर	जप–तप करना, जो मिले उसी स्थान पर सोना, बैठना, नहाना एवं मेकअप नहीं करना।	लात मारना, लकड़ी, मुक्का मारना, सोने में नर्म–नर्म गद्दे ही चाहिए ऐसा मानना आदि।

10 फरवरी 2021
जिनवाणी 96
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

स्वार्थी बेटा

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मार्च, 2021 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

रवि की आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे तभी उसके बेटे प्रखर ने आवाज लगाई-''पापा मेरे साथ फुटबाल खेलने बैकयार्ड में आओ।''

रवि ने अपने आँसू पोंछे, मुँह धोया और घर के पीछे बने बगीचे में बेटे के साथ फुटबाल खेलने लगा।

पर यादों के मानस पटल पर उसके पुरानी बातें उभरने लगीं।

पिताजी की सरकारी स्कूल में टीचर की नौकरी, माँ गृहिणी, सामान्य सा घर और उसकी दो छोटी बहनें। रवि शुरू से ही पढ़ने में बहुत होशियार था। कोटा से कोचिंग की और आई.आई.टी. मुम्बई में उसका एडमिशन हो गया। जैसे ही इञ्जीनियरिंग का कोर्स समाप्त होने वाला था, उसका कैम्पस प्लेसमेण्ट अमेरिका की माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी में हो गया। माता-पिता के तो पाँव जैसे धरती पर नहीं टिक रहे थे, आखिर वे खुश क्यों नहीं होते जितना पैसा उन्होंने जीवन भर नहीं कमाया वह उससे ज्यादा एक साल में कमा लेगा।

विदेश यात्रा तो छोड़ो रवि कभी पहले हवाईजहाज में भी नहीं बैठा था और अमेरिका में दूर-दूर तक कोई उनके पहचान वाला भी नहीं था। वह जाने में थोड़ा हिचकिचा रहा था और साथ ही उसके दिमाग में एक स्टार्ट-अप आइडिया भी था, इसलिये वह भारत में ही रहकर अपने आइडिया पर काम करना चाहता था।

माता-पिता ने उसे समझाया-''बेटा कुछ साल पैसा कमा लो, पैसे के बिना कुछ इज्जत नहीं मिलती है। अपनी नहीं, पर अपनी बहनों की सोचो। अच्छी शादी करेंगे तो अच्छे लड़के मिलेंगे। तुम्हारे लिये भी ऊँचे घरों के रिश्ते आयेंगे। तुम हमारी चिन्ता न करो। वैसे भी आजकल फोन पर चाहे जितनी बात कर लो। एक बार अच्छा बैंक बैलेन्स बन जाये तब वापस आ जाना फिर तुम अपने स्टार्ट-अप आइडिया पर काम करना।''

रवि जाने को तैयार हो गया। धीरे-धीरे वहाँ के माहौल में एडजस्ट भी हो गया। हर महीने वह घर पर बड़ी रकम भेजता था। घर के हालात सुधर गये। रहन-सहन बदल गया। बहनों की शादी भी बहुत धूम-धाम से हो गई। रवि के लिये भी ऊँचे घर का रिश्ता आया। नेहा, न केवल सुन्दर और सुशील, बल्कि स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ी हुई थी। माता-पिता ऐसी केरियर ओरियेन्टेड बहू पाकर फूले नहीं समाये। डबल इनकम मतलब तेजी से ग्रोथ।

बहुत जल्दी शादी हो गई। अमेरिका में उन्होंने बंगला खरीद लिया। माता-पिता रिश्तेदारों को,

पड़ोसियों को बेटे की लाइफ स्टाइल, बहुत सारे फोरेन ट्रिप्स, उनके बंगले, गाड़ी की बातें बताते थकते नहीं थे।

रवि के भी दो बच्चे हो गये और इधर उसके पिता रिटायर्ड हो गये। रवि टिकट भेज देता और हर साल एक बार माता-पिता आते और एक महीना रहते। इससे ज्यादा उनका मन नहीं लगता, क्योंकि बेटा-बहू दोनों नौकरी पर जाते हैं और बच्चे अपनी तरह-तरह की क्लासों में व्यस्त रहते हैं।

माता-पिता को अब अपनी ढलती उम्र की चिन्ता होने लगी। वे बार-बार रवि को वापस भारत आने को कहते। इस बार पिताजी को लकवा हो गया और वे 'Bed Ridden' हो गये। रवि ने कहा 'माँ पैसों की चिन्ता मत करो, एक अच्छा केयर टेकर रख लो।'

माँ बिफर कर रोने लगी और बेटे को स्वार्थी कहने लगी, इसीलिये रवि की आँखों से आँसू आ रहे थे।

नेहा बोली-"रवि तुमने घर परिवार के लिए इतना किया है, फिर भी माँ तुम्हें स्वार्थी कहती है। बहनों की शादियाँ हो गई, वहाँ अच्छा सा घर तुमने बनवा दिया। अब जब मेरे बच्चों के लिए कुछ करने का समय आया है तो वह कहती है सब सामान समेट कर भारत आ जाओ। यह बात तुम सपने में भी मत सोचना। मुझे पता होता कि तुम वापस भारत बसने वाले हो तो तुमसे शादी कभी न करती और यहाँ मेरा भी केरियर है। भारत में इसकी आधी सैलरी भी नहीं मिलेगी। तुम ज्यादा इमोशनल मत होओ। बच्चे भारत में एडजस्ट भी नहीं हो पायेंगे।"

सुज्ञ पाठकजनों। इस कहानी का कोई अन्त नहीं है। हम अपने आसपास कितने ही ऐसे केस देखते हैं। यहाँ कौन सही है कौन गलत यह प्रूव करना भी हमारा लक्ष्य नहीं है, पर हाँ इतना अवश्य है कि छोटे शहर से बड़े शहर, विकासशील देश से विकसित देश, कम पैसों से अधिक पैसों में आदमी आराम से एडजस्ट हो जाता है, मगर वापसी रिवर्स दिशा में अर्थात् बड़े शहर से छोटे शहर में बसना, बड़े विकसित देशों से वापस भारत आना, अधिक पैसों वाली लाइफ स्टाइल से कम पैसों में एडजस्ट करना सचमुच मुश्किल होता है। कुछ अपवाद होते हैं, पर हकीकत यही है। इसीलिये जीवन के कुछ निर्णय बड़े सोच-समझकर लीजिये।

कभी लोगों को लगता है हमारे पास कुछ नहीं है, तो कभी लगता है हमारे पास सब कुछ होकर भी कुछ नहीं है। आप स्वयं अपनी प्राथमिकता निश्चित करें। उसके बाद ही कोई निर्णय लें और सबसे बड़ी बात-"अपने शब्दों का चुनाव बहुत सोच समझकर करें। कुछ गलत निकले शब्द वर्षों पुराने रिश्ते खराब कर देते हैं।"

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड़, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

प्र. 1. रवि की आँखों से लगातार आँसू बहने का क्या कारण था?

प्र. 2. रवि की अमेरिका जाने की हिचकिचाहट को उसके पिताजी ने किस प्रकार दूर किया?

प्र. 3. माँ द्वारा रवि की भारत वापसी की बात पर नेहा की क्या प्रतिक्रिया थी?

प्र. 4. रवि के माता-पिता के पैर धरती पर क्यों नहीं टिक रहे थे?

प्र. 5. प्रस्तुत कहानी का मूल सन्देश अपने शब्दों में लिखिए।

प्र. 6. तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-हक़ीकत, प्राथमिकता, स्वार्थी और हिचकिचाना।

*** आचार्यश्री हस्ती धर्माचार्य तो थे ही, वर्षों तक चतुर्विध संघ को कुशलतापूर्वक सम्भाला और उसी का परिणाम है कि आज यह फुलवारी अनेक रंगों में दिखाई दे रही है।** -उपाध्यायप्रवरश्री मानचन्द्र

गतिविधि :-आओ संस्कारी बनें।

दिए गए वाक्यों में गहरे पदों के विलोम शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. बालक **कठोर** नहीं..... बनें।
2. बालक **चालाक** नहीं..... बनें।
3. बालक **कायर** नहीं ..... बनें।
4. बालक **अधर्मी** नहीं ..... बनें।
5. बालक **दुर्जन** नहीं..... बनें।
6. बालक **लड़ाकू** नहीं..... बनें।
7. बालक **डाकू** नहीं..... बनें।
8. बालक **मूर्ख** नहीं..... बनें।
9. बालक **क्रोधी** नहीं..... बनें।
10. बालक **शैतान** नहीं..... बनें।
11. बालक **अविवेकी** नहीं..... बनें।
12. बालक **लोभी** नहीं..... बनें।
13. बालक **शूल** नहीं..... बनें।
14. बालक **कञ्जूस** नहीं..... बनें।
15. बालक **बेईमान** नहीं..... बनें।
16. बालक **आलसी** नहीं..... बनें।
17. बालक **व्यसनी** नहीं..... बनें।
18. बालक **झूठा** नहीं..... बनें।
19. बालक **अभिमानी** नहीं..... बनें।
20. बालक **बुरा** नहीं..... बनें।

बाल-जिनवाणी जनवरी, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 मार्च, 2021)

प्र. 1. हाथी मगरमच्छ के बन्धन से कैसे मुक्त हुआ?

प्र. 2. धर्म की शक्ति को जीवनशक्ति क्यों कहा है?

प्र. 3. 'वह अच्छा बच्चा कहलाता' कविता में अच्छे बच्चे की किन विशेषताओं को दर्शाया गया है?

प्र. 4. किताबों को हमारी सच्ची दोस्त किस कारण से कहा गया है?

प्र. 5. भावना को परिभाषित करते हुए उसके भेद भी लिखिए।

प्र. 6. 'हर किताब कुछ कहती है' कविता के आधार पर 'किताब की महत्ता' विषय पर 40-50 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

प्र. 7. 'अहंकारी हाथी' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।

प्र. 8. What did the man write on the wall of the compartment?

प्र. 9. What message the story of 'The Power of subconscious Mind' gives us?

प्र. 10. Make one-one sentence using each word-compartment, conscious, trapped, decline.

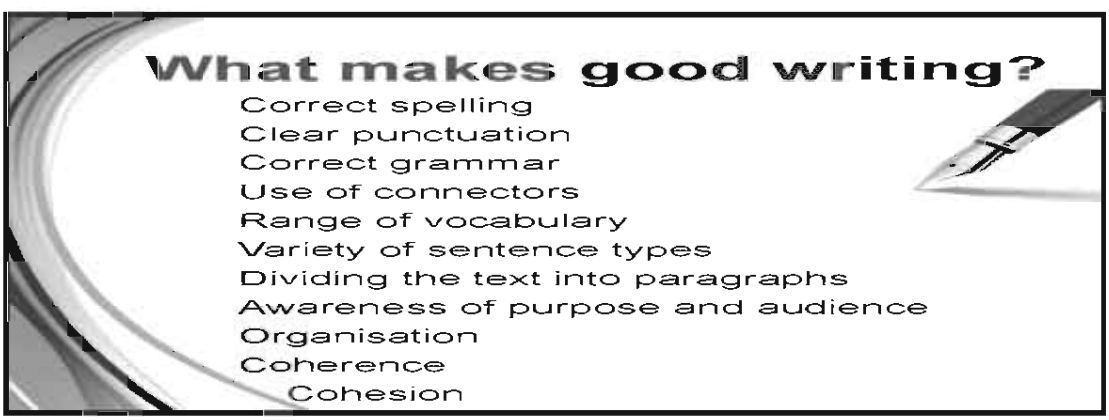

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : **022 2628 7187**

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि
आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्जवल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. **We Have Launched Membership Plans For Donors.**

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund **IFSC Code** - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 **PAN No.** - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यो एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज सा मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव सा नीता जी डागा, ह्यूस्टन। युवारत्न श्री हरीश सा कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द सा सुरेश सा कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम सा कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल सा बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज सा राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.) श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमती गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़ श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, मुम्बई। श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर	

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-56**

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रेल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अत: इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

(1) श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता, अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(2) श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बेंगलोर, अध्यक्ष-अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
(3) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष
(4) श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(5) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(6) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(7) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(8) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
(9) श्री गौत्तमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर
(10) न्यायमूर्ति श्री जसराजजी श्री आनन्दजी चौपड़ा, जयपुर
(11) श्री सुशीलजी सोलंकी, मुम्बई
(12) श्री रतनराजजी नेमीचन्दजी भण्डारी, मुम्बई (पीपाड़ सिटी वाले)
(13) नयनतारा रतनलाल सी. बाफणा एण्ड सन्स, जलगाँव
(14) श्री राजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी मेहता, शिवाकाशी
(15) डॉ. एस. एल. नागौरीजी, बून्दी
(16) श्री अरुणजी मेहता, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
(17) श्री उम्मेदराजजी, एवन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), पाँच्यावाला-जयपुर
(18) श्री दुलीचन्दजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
(19) श्री चंचलमलजी, अशोक कुमारजी चोरड़िया, जोधपुर
(20) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
(21) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
(22) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
(23) श्री सागरमलजी, हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु अग्रिम रूप से लाभार्थी

(24) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
(25) श्री स्वरूपचन्दजी बाफना, सूरत
(26) श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जयपुर
(27) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
(28) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
(29) श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, जयपुर
(30) श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर
(31) श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर

JVS
PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children

Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU®

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन